हिंदी
बालभारती
तीसरी कक्षा



शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं/२०१४-१५/५२७२/मंजूरी/ड-५०५/२२००, दि. १/४/२०१४



हिंदी
बालभारती
तीसरी कक्षा

मेरा नाम ---------- है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

प्रथमावृत्ति : २०१४
तीसरा पुनर्मुद्रण : २०१७

हिंदी भाषा समिति

डॉ. चंद्रदेव कवडे, अध्यक्ष
डॉ. हेमचंद्र वैद्‌य, सदस्य
डॉ. साधना शाह, सदस्य
प्रा. मुल्ला मैनोद्‌दीन, सदस्य
श्री रामहित यादव, सदस्य
श्री कौशल पांडेय, सदस्य
श्री रामनयन दुबे, सदस्य
डॉ. अलका पोतदार, सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा कार्यगट

डॉ. रामजी तिवारी
डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
श्री संजय भारद्‌वाज
प्रा. अनुया दळवी
डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र
डॉ. दयानंद तिवारी
श्री अनुराग त्रिपाठी
श्री राजेंद्रप्रसाद तिवारी
श्री उमाकांत त्रिपाठी
प्रा. निशा बाहेकर
डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
डॉ. आशा मिश्रा
श्रीमती मंगला पवार
श्री नरसिंह तिवारी

प्रकाशक

विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक, पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई - ४०००२५

संयोजन

डॉ. सौ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक, हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : सुहास जगताप
चित्रांकन : लीना माणकीकर, राजेश लवळेकर, आत्मजा बोधनी

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, निर्मिति सहायक

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम क्रीमवोव्ह
मुद्रणादेश : N/PB/2017-18/35,000
मुद्रक : SHREE PRINTERS, PUNE

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है। सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।

मुझे अपने देश से प्यार है। अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी। उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

प्रस्तावना

'बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९' और 'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप -२००५' को दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२' तैयार की गई । पाठ्यपुस्तक मंडळ शैक्षणिक वर्ष २०१३-१४ से शासनमान्य पाठ्यचर्या पर आधारित हिंदी की पहली से आठवीं कक्षा तक हिंदी बालभारती की नवीन शृंखला क्रमशः प्रकाशित कर रहा है । इस शृंखला में तीसरी कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष हर्ष हो रहा है ।

आकलन, निरीक्षण, भाषण-संभाषण के रूप में बच्चों की भाषाशिक्षा का अनौपचारिक शुभारंभ उनके परिसर और प्रसार माध्यमों द्‍वारा होता है । पाठशाला में आने के उपरांत उनकी औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ होता है । तीसरी कक्षा के विद्‍यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज-सरल बनाने के लिए पाठ्यपुस्तक का आकार बड़ा और स्वरूप चित्रमय बनाया गया है । पुस्तक की संरचना करते समय इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो ।

विद्‍यार्थियों की आयु, स्वाभाविक अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए उनकी भाषाशिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी बनाने के लिए पाठ्यपुस्तक में सहज गुनगुनाने योग्य गीतों, कविताओं का समावेश किया गया है । इसी प्रकार हास्य, चित्रकथा, चित्रवाचन और रंगीन चित्रों का सजगता से उपयोग किया गया है । पाठ्यपुस्तक में विषयों को खेल, कृति के रूप में समाविष्ट किया गया है । इन घटकों का अध्ययन-अध्यापन करते हुए शिक्षक इस तरह के अध्ययन-अनुभव को समाहित करें जिससे शालाबाह्य जगत एवं दैनिक व्यवहार में सामंजस्य स्थापित हो सके ।

शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए 'दो शब्द' में पाठ्यपुस्तक की संरचना की पार्श्वभूमि पर विस्तृत चर्चा करते हुए पाठों के संदर्भ में आवश्यक सूचनाएँ प्रत्येक पृष्ठ पर दी गई हैं । अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित ही उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, कार्यगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित प्राथमिक शिक्षकों, विषयतज्ञों द्‍वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचना और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है ।

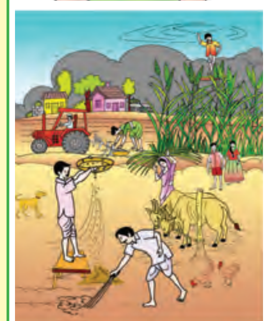
'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, कार्यगट, समीक्षकों, विशेषज्ञों, चित्रकारों के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्‍यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- ३१ मार्च २०१४
गुढीपाडवा, शके १९३६




अनुक्रमणिका























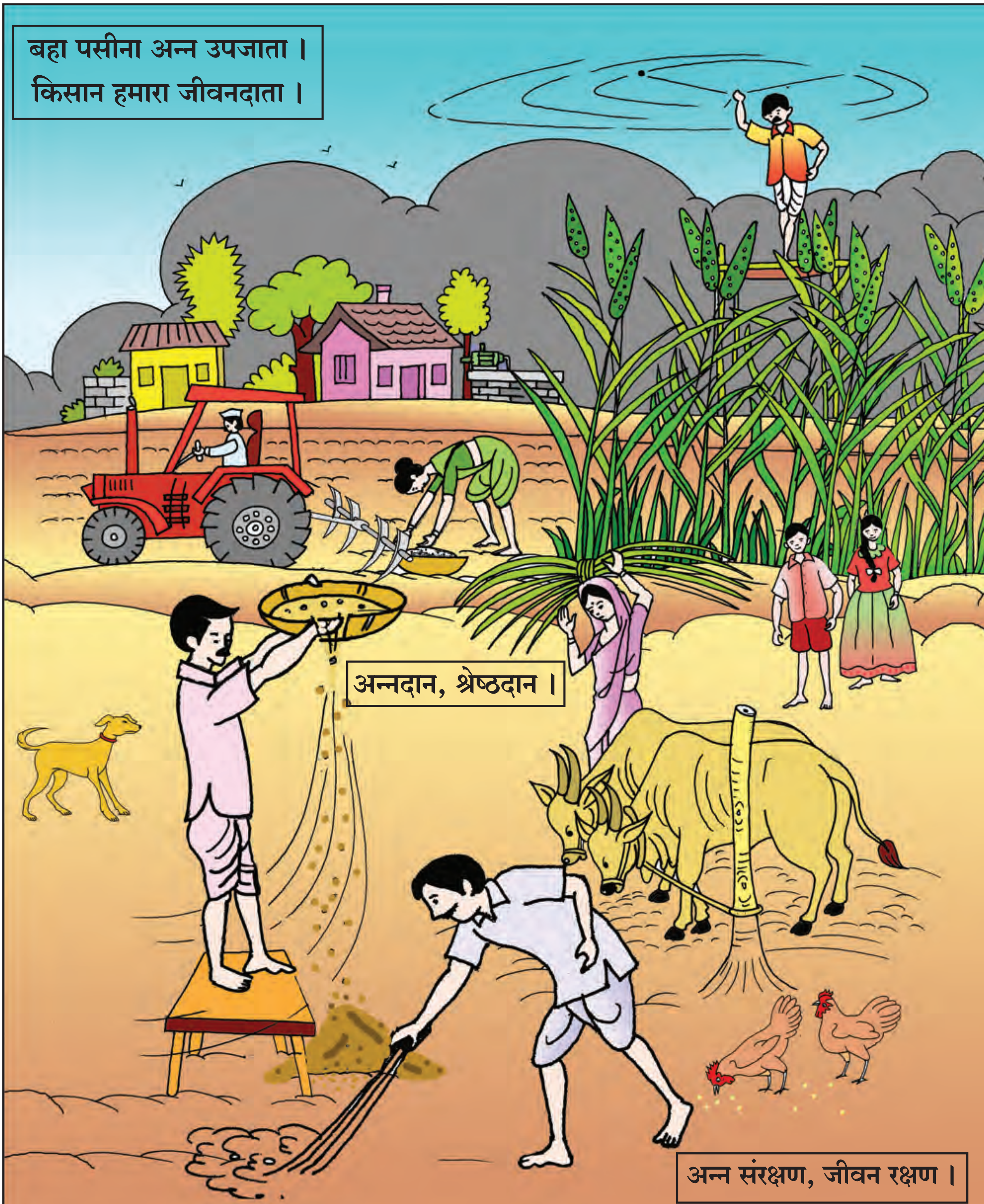







● पूर्वानुभव – पहचानो और बताओ :

✵ खेत–खलिहान

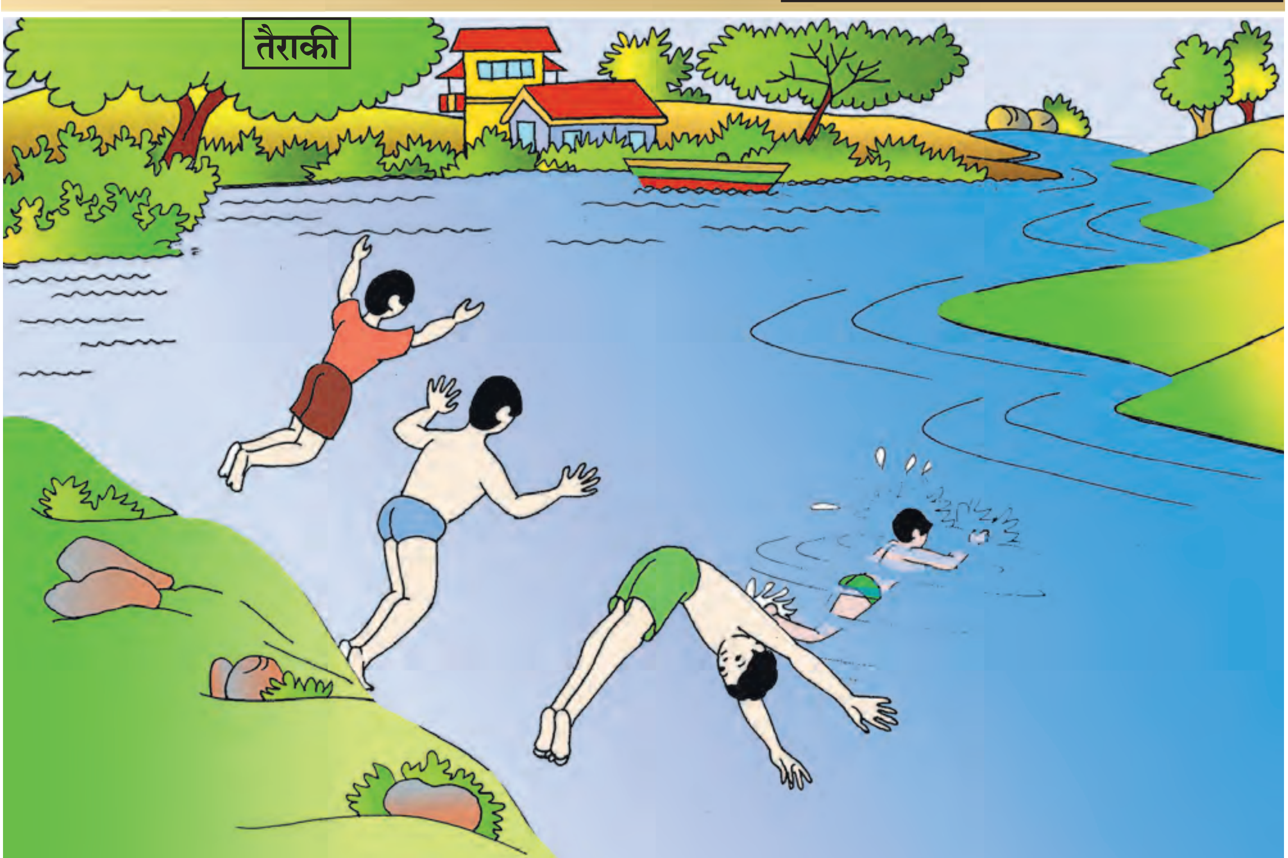


❑ दिए गए चित्रों का निरीक्षण कराएँ । बीज बोना, खाद–पानी देना, फसल पकने से ओसाई तक की प्रक्रिया पर क्रम से चर्चा कराएँ । खेती और किसान के महत्त्व पर विद्यार्थियों को बोलने हेतु प्रेरित करें । श्रम प्रतिष्ठा पर कोई कविता/कहानी सुनाएँ ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. खेल

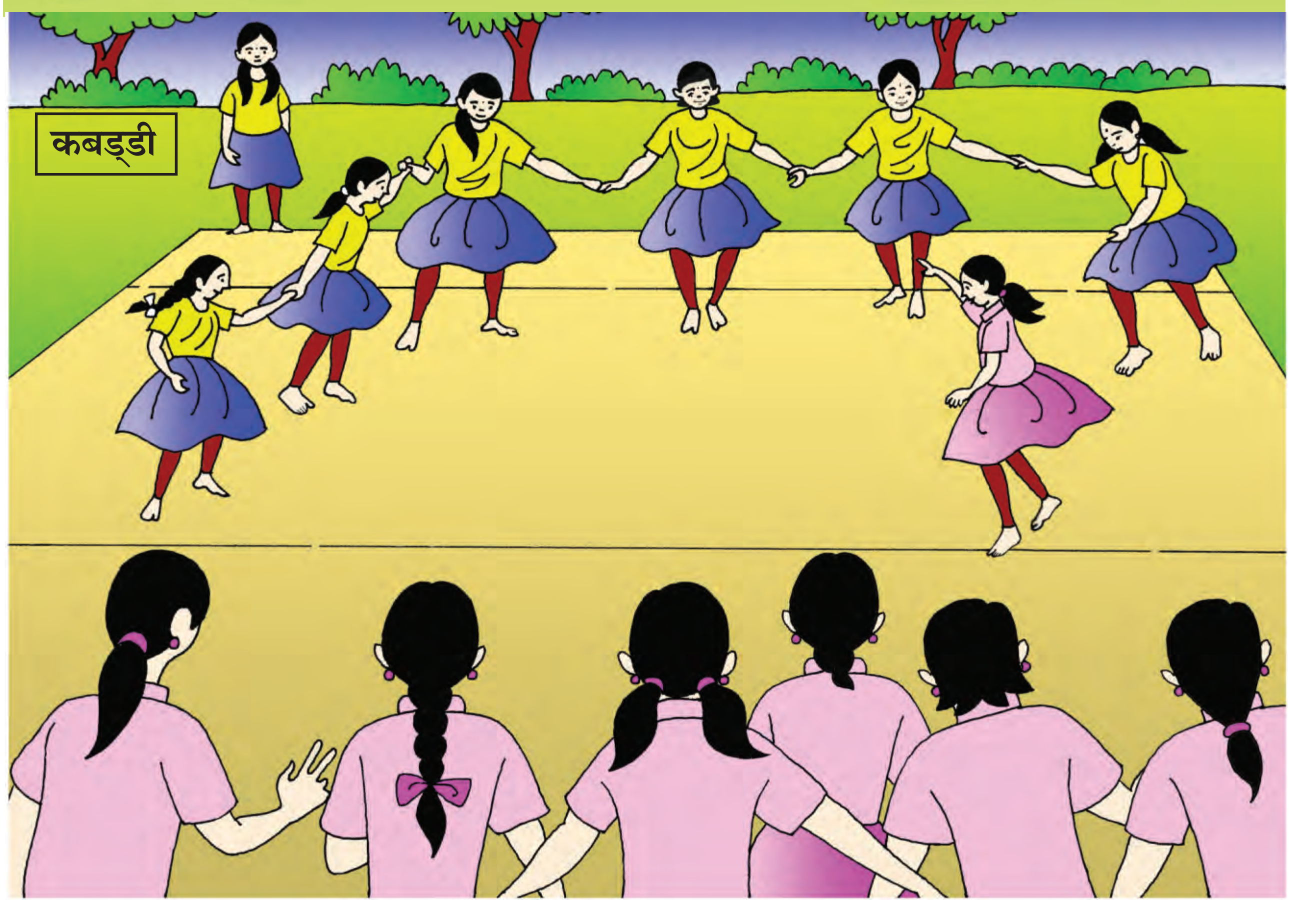




❑ चित्रों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराएँ । विद्‌यार्थियों से उनकी पसंद के खेलों के नाम पूछें । खेलों, खिलाड़ियों की संख्या आदि के संबंध में प्रश्न पूछकर खेल नियमित खेलने के लिए प्रेरित करें । इन्हीं प्रकार के अन्य खेलों के नाम कहलवाएँ, उनपर चर्चा करें ।

पहली इकाई





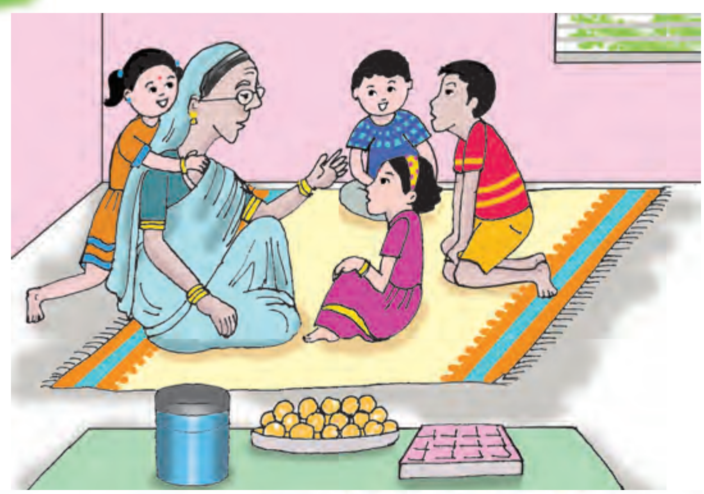
❑ खेलों का वर्गीकरण करते हुए मैदानी खेल, अंतर्गृही खेल आदि के बारे में बताएँ । जीवन में खेलों के महत्व पर विद्यार्थियों को बोलने हेतु प्रेरित करें । चित्रों में दिए गए वाक्यों पर उनसे चर्चा कराएँ । विद्यार्थियों से उनके प्रिय खिलाड़ियों के नाम पूछें ।

● श्रवण – सुनो और गाओ :

२. नानी जी का गाँव



हमने खूब बिताई छुट्टी,
नानी जी के गाँव में ।
अमराई की सघन छाँव में,
बैठ मजे से खेलें हम,
पके आम खाए जी भरकर,
हिला टहनियाँ पेड़ों की हम ।
आया खूब मजा है हमको,
नानी जी के गाँव में ।



सुबह-शाम, पकवान-मिठाई,
नानी जी हर रोज खिलातीं,
अद्‌भुत कथा-कहानी मोहक,
खूब प्यार से हमें सुनातीं ।
मन हो जाता खुशबू-जैसा,
नानी जी के गाँव में ।

– डॉ. उदयराज उपाध्याय



❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल, अभिनय के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक तथा गुट में मुखर वाचन कराएँ । उनसे नानी जी के घर के अनुभव सुनाने के लिए कहें । उन्हें नानी जी से सुनी कोई कविता, कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।



स्वाध्याय

१. **माँ से बालगीत/लोरी सुनो और सुनाओ ।**

२. **शब्दों की अंत्याक्षरी खेलो :**

उदा. तोता......ताली......लहर......रजनी......नदी......दीपा......पौधा......धान......

३. **कविता में आए क्रमानुसार निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ो :**

(क) बैठ मजे से खेलें हम,

(ख) हिला टहनियाँ पेड़ों की हम ।

(ग) अमराई की सघन छाँव में,

(घ) पके आम खाए जी भरकर,

४. **एक शब्द में उत्तर लिखो :**

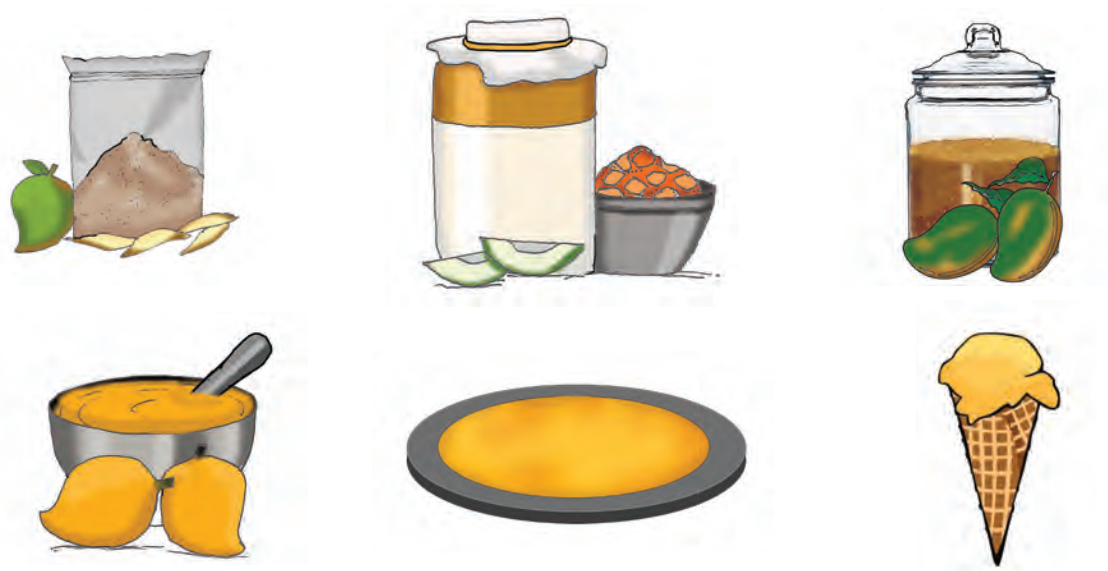
(च) बच्चे किसकी सघन छाँव में खेले ?

(छ) बच्चों ने जी भरकर क्या खाया ?

(ज) बच्चों को पकवान-मिठाई कौन खिलाता था ?

(झ) नानी जी बच्चों को कैसी कथा-कहानी सुनाती थीं ?

५. **चित्रों को देखकर आम से बने खाद्‍य पदार्थों को पहचानो और उनके नाम बताओ :**



६. **अपने पड़ोस के बच्चों के साथ तुम कैसा व्यवहार करते हो, बताओ ।**

● श्रवण – सुनो और दोहराओ :



३. गौरैया : मेरी सहेली



वह घोंसला बनाती, मैं बिगाड़ती । वह मुझे देखकर फुर्र-से उड़ जाती और मैं गुस्से में आ जाती । पता नहीं, इतना जबरदस्त विरोध होने पर भी वह अपने काम से हट नहीं रही थी । वह काम में जुटी रही और मैं परेशान होती रही । इस संघर्ष में कई दिन बीत गए ।



धीरे-धीरे यह बात सारे घर में फैल गई कि मैं एक छोटी-सी चिड़िया से लड़ रही हूँ । भाईसाहब चिढ़ाते हुए पूछते, ‘‘कौन जीता और कौन हारा ? धत् तेरे की ! थक गई, वह भी एक नन्हीं गौरैया से ?’’ भाईसाहब जितना मुझे चिढ़ाते, उतना ही मेरा पारा चढ़ता ।

एक दिन भाईसाहब आए और हँसकर बोले, ‘‘क्यों भाई, लड़ाई का क्या हाल रहा ? ऐसा लगता है, जैसे समझौता हो गया है ।’’ मैंने कहा, ‘‘भाईसाहब, अब जाने भी दीजिए । मैं तो बेचारी गौरैया पर नाहक नाराज होती रही । यह तो बड़ी हिम्मतवाली निकली । मुझे तो इससे सबक लेना चाहिए कि मुकाबला करने वाले को कोई हरा नहीं सकता ।’’

भाईसाहब आश्चर्य से मुझे देखते रहे और मैं खिलखिलाकर हँस पड़ी । आज भी वह गौरैया मेरे कमरे में है । अब उसके दो बच्चे भी हो चुके हैं । मेरे कमरे में अब भी तिनके बिखरे रहते हैं । उन्हें मैं चुनकर एक कोने में रख देती हूँ । अब गौरैया मुझे बुरी नहीं लगती । उसमें मुझे साहस दिखाई देता है । गौरैया अब मेरी सहेली बन गई है ।

– हसन जमाल छीपा



❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ कहानी सुनाएँ और अनुवाचन कराएँ । विद्‍यार्थियों को मिलकर रहने और दूसरों की भावना का आदर करने के लिए प्रेरित करें । इसी प्रकार की कोई अन्य साहस, मित्रता संबंधी कहानी सुनाने के लिए कहें ।



स्वाध्याय

१. **किसी प्राणी की कहानी सुनाओ ।**

२. **उत्तर दो :**

(क) गौरैया क्या बनाती थी ?

(ख) लड़की का पारा क्यों चढ़ता था ?

(ग) गौरैया से कौन-सा सबक लेना चाहिए ?

(घ) गौरैया के कितने बच्चे हैं ?

३. **किसी भारतीय खिलाड़ी की जानकारी का अनुवाचन करो ।**

४. **सही (✓) या गलत (✗) चिह्न लगाओ :**

(च) वह घोंसला बनाती, मैं बिगाड़ती । ( )

(छ) भाईसाहब जितना मुझे चिढ़ाते, उतना ही मुझे आनंद आता । ( )

(ज) मैं तो नाहक बेचारी गौरैया पर नाराज होती रही । ( )

(झ) गौरैया अब मेरी दादी बन गई है । ( )

५. **चित्रों को देखकर पक्षियों को पहचानो और उनके नाम बताओ :**













६. **तुम्हारा बनाया हुआ चित्र प्रदर्शनी में लगाना है । बस्ते से निकालते समय चित्र फट गया तो तुम क्या करोगे ?**

● श्रवण – सुनो और बोलो :

४. मुंबई–छोटा भारत

क्षितिज – बहुत दिन हो गए । सलीम खेलने नहीं आया ।

गुरमीत – अरे ! तुम्हें पता नहीं क्षितिज, वह तो मुंबई घूमने गया है ।

आस्था – अरे वह देखो ! मुंबई से आया मेरा दोस्त, दोस्त को सलाम करो ।

मेरी – अच्छा बताओ सलीम, मुंबई में तुमने क्या–क्या देखा ?

सलीम – मैंने मुंबई में राष्ट्रीय उद्‌यान, तारांगण, हाजीअली, माउंट मेरी और कमला नेहरू पार्क देखा । चौपाटी के समुद्री किनारे और गेट वे ऑफ इंडिया पर कबूतरों को दाना चुगाने का आनंद भी लिया ।

क्षितिज – सुना है, मुंबई में लोकल ट्रेनें चलती हैं ।

सलीम – हाँ ! आजकल लोकल के अलावा मोनो तथा मेट्रो रेल भी चलती है । दिन–रात इनमें लाखों लोग यात्रा करते हैं । अलग–अलग धर्म, जाति, विभिन्न भाषा बोलने वाले मिल–जुलकर रहते हैं । यही मुंबई की विशेषता है ।

आस्था – अरे वाह ! इसका अर्थ है कि मुंबई छोटा भारत है ।

मेरी – तुमने सच कहा, मुंबई के बारे में और बातें कल सुनेंगे ।

– कैलाश सेंगर



❑ दिया गया संवाद दो–तीन बार सुनाएँ और पाठ्यांश पढ़वाएँ । आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों के उच्चारण में सुधार करें । उन्हें अपने जिले की महत्वपूर्ण बातें बताने के लिए कहें । विद्यार्थियों से समानता, जल साक्षरता, प्रदूषण आदि पर संवाद कराएँ ।

स्वाध्याय

१. हाव-भाव के साथ कोई विज्ञापन सुनाओ ।

२. पाठशाला में वृक्षारोपण दिवस कैसे मनाया गया, बताओ ।

३. अपने जिले के मानचित्र का वाचन करो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) सलीम कहाँ गया था ?

(ख) 'मुंबई से आया मेरा दोस्त', किसने कहा ?

(ग) सलीम ने मुंबई में क्या-क्या देखा ?

(घ) मुंबई को छोटा भारत क्यों कहते हैं ?

५. चित्रों को देखकर वेशभूषा पहचानो और उनके नाम बताओ :

६. तुमने गृहकार्य नहीं किया है । शिक्षक के कारण पूछने पर क्या कहोगे ?

(च) सच बोलोगे कि तुम गृहकार्य करना भूल गए ।

(छ) कोई उत्तर न देकर चुप रहोगे ।

(ज) माफी माँगोगे ।

● वर्णमाला – अनुवाचन करो :

५. मुझे पहचानो



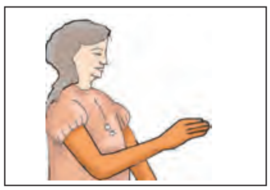
छ ह


ड फ

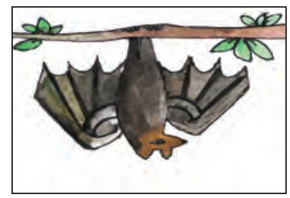

घ ट


अ द र क

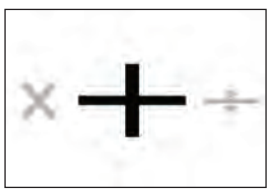

आ का श


हा थ


ढ ला न

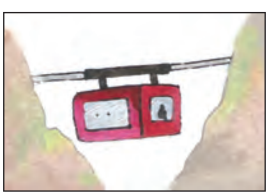

च म गा द ड़

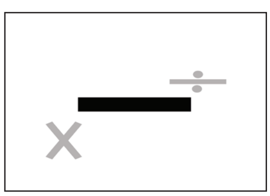

इ ला य ची

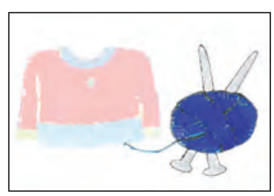

ध न

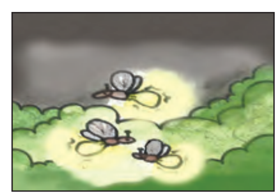

ई द


छि प क ली


उ ड़ न ख टो ला


ऋ ण

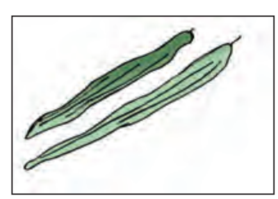

ऊ न


जु ग नू


वृ क्ष


झ र ना


न भ च र

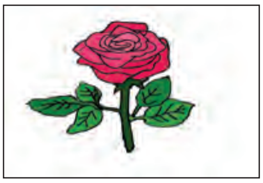

स हि ज न


पढ़ो : कम, कप, ढक, चढ़, हम, ईश, गण, नभ, गज, नथ, ऊख, ऋण, जप, इक, कनक, गरम, नरम, ऊपर, रबड़, अगर, मगर, सनक, धमक, चपल, पहर, डगर, बगल, खड़खड़, गटगट, बचपन, गड़बड़, बरगद, आगमन, आचमन, नटखट, पचपन, करधन ।

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ और पहचानकर नाम बोलने के लिए कहें । विद्‌यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । संपूर्ण पाठ्‌यसामग्री का मूल उद्‌देश्य वर्णमाला के वर्णों का दृढ़ीकरण करवाना है । श्रवण-वाचन का बार-बार अभ्यास और स्वयं अध्ययन अपेक्षित है ।



ए ड़ी



गु ला ब



ऐ रा व त



थै ले



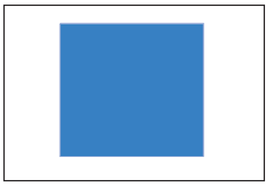
ओ ढ़ नी



य ज्ञ



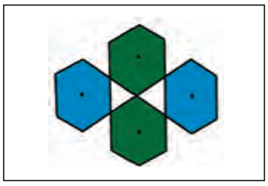
औ र त



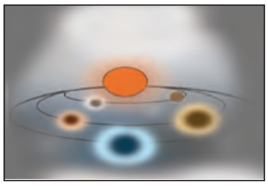
चौ को न



मेज



ष ट को ण



अं त रि क्ष



सं ग ण क



अँ गू ठी



कु आँ



ऑ टो



बॉ ल



प त्र



ग ठ री



ल ह सु न



श्र व ण कु मा र

ङ् ञ ळ अः



पढ़ो : भन, बस, पढ़, सच, अंक, यज्ञ, त्रय, षट, ठग, पत्र, ऑन, मठ, श्रम, ओर, अंगद, सक्षम, सत्रह, श्रवण, आश्रय, आँगन, नयन, औसत, अंजन, जठर, अनय, अक्षय, अनपढ़, एकटक, भरसक, डगमग, लथपथ, उलझन, षटपद, पदपथ, सरपट, बढ़कर, झटपट, कलतक, लगभग, अचरज, तनमन, अनमन, आजकल, पलभर, मलयज, अतः, नमः, नञ् ।

❑ पृष्ठ १० और ११ के शब्द पढ़ने के लिए दिए गए हैं । विद्यार्थियों से सामूहिक वाचन, व्यक्तिगत मुखर वाचन करवाएँ । इन शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है । पूरी वर्णमाला क्रम से कहलवाएँ । इन शब्दों का अनुलेखन एवं श्रुतलेखन करवाएँ ।

● भाषा–प्रयोग – पढ़ो और अनुलेखन करो :

६. बोध



मैंने पूरी पुस्तक पढ़ डाली ।

अर्चना ने पुस्तकें भेंट की ।

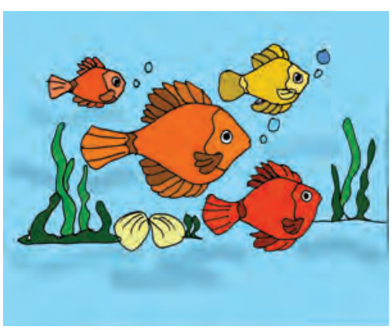




पुष्पेंद्र ने पौधा लगाया ।

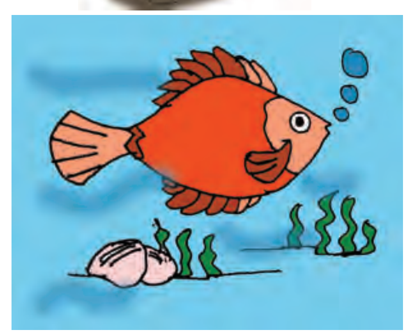
क्यारी में अनेक पौधे लगे हैं ।





मछली जल की रानी है ।

मछलियाँ जल में तैरती हैं ।





फूल सभी को अच्छा लगता है ।

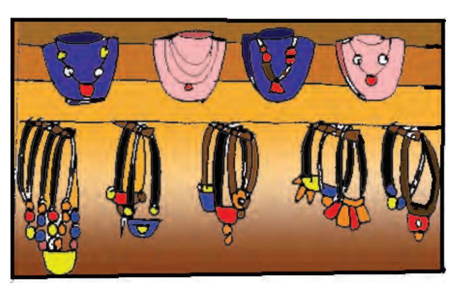
गुलदस्ते में कई फूल हैं ।





मेरे पास एक सुंदर माला है ।

यहाँ मालाएँ टँगी हुई हैं ।



❑ विद्‌यार्थियों से वाक्यों का वाचन कराएँ । स्त्री–पुरुष और एक–अनेक के बोधवाले शब्दों पर चर्चा करें । इसी प्रकार के अन्य वाक्य कहलवाएँ । विद्‌यार्थियों को दैनिक व्यवहार में इनके उचित प्रयोग पर बल देने के लिए प्रेरित करें । ऐसे शब्दों की सूची बनवाएँ ।



वन में मोर नाच रहा है ।

मोरनी दाना चुगती है ।

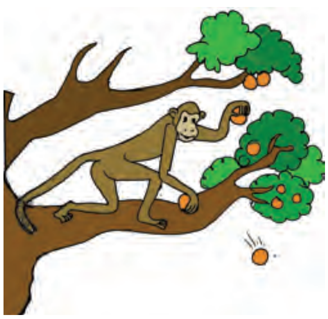




छत पर बिलाव बैठा है ।

बिल्लियाँ दूध पी रही हैं ।





बंदर शरारती होता है ।

बंदरिया छलाँग लगा रही है ।





गाय दूध देती है ।

बैल खेत जोतते हैं ।





बाघिन शिकार करती है ।

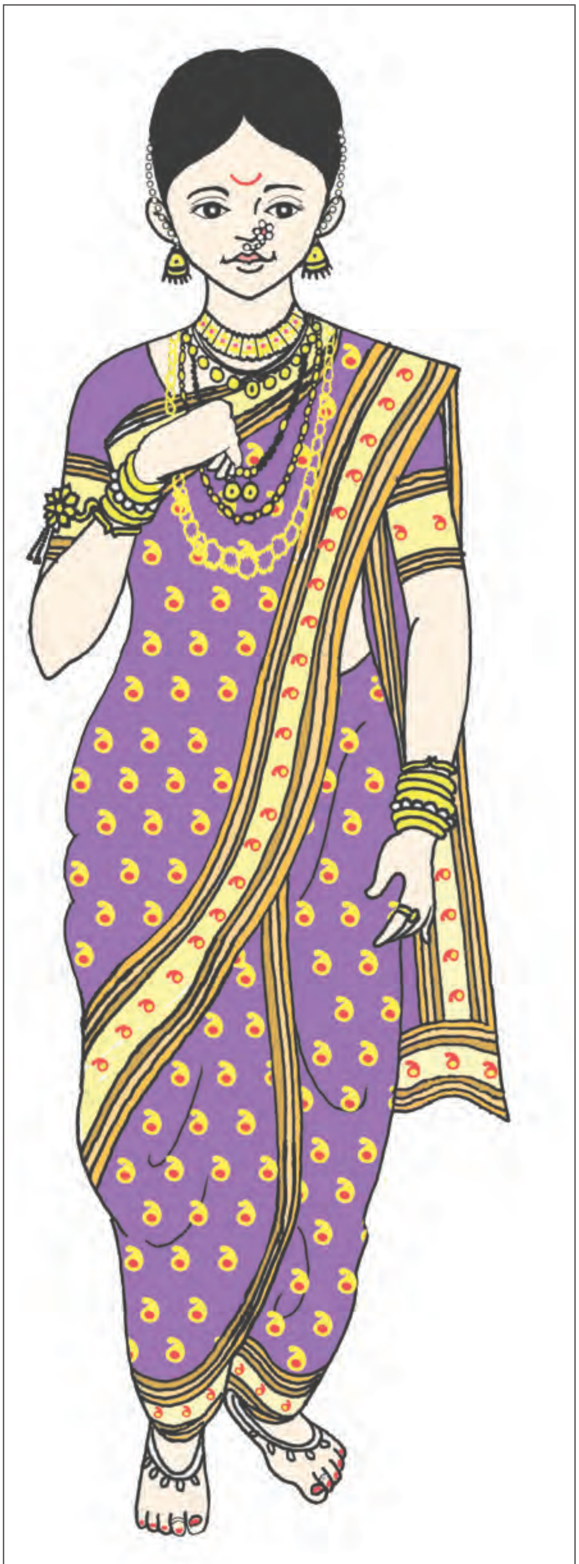
बाघ सोया हुआ है ।

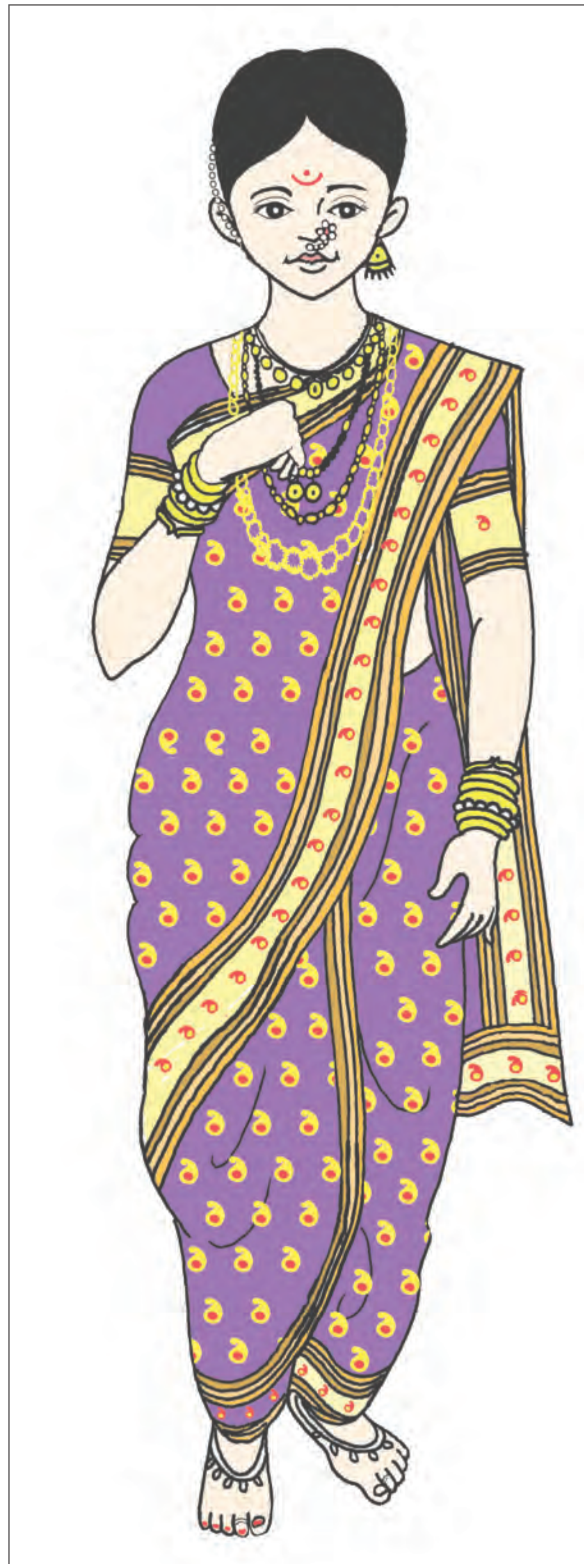


❑ एक-अनेक और स्त्री-पुरुष के बोध कराने वाले शब्दों के अन्य उदाहरण देकर वचन/लिंग का दृढ़ीकरण करवाएँ । विद्यार्थियों से पाठ्यपुस्तक में आए इसी प्रकार के शब्दों को ढूँढ़ने और लिखने के लिए कहें । इन शब्दों के प्रयोग पर ध्यान आकर्षित करें ।

● आकलन – अंतर बताओ :

७. महाराष्ट्र की बेटी



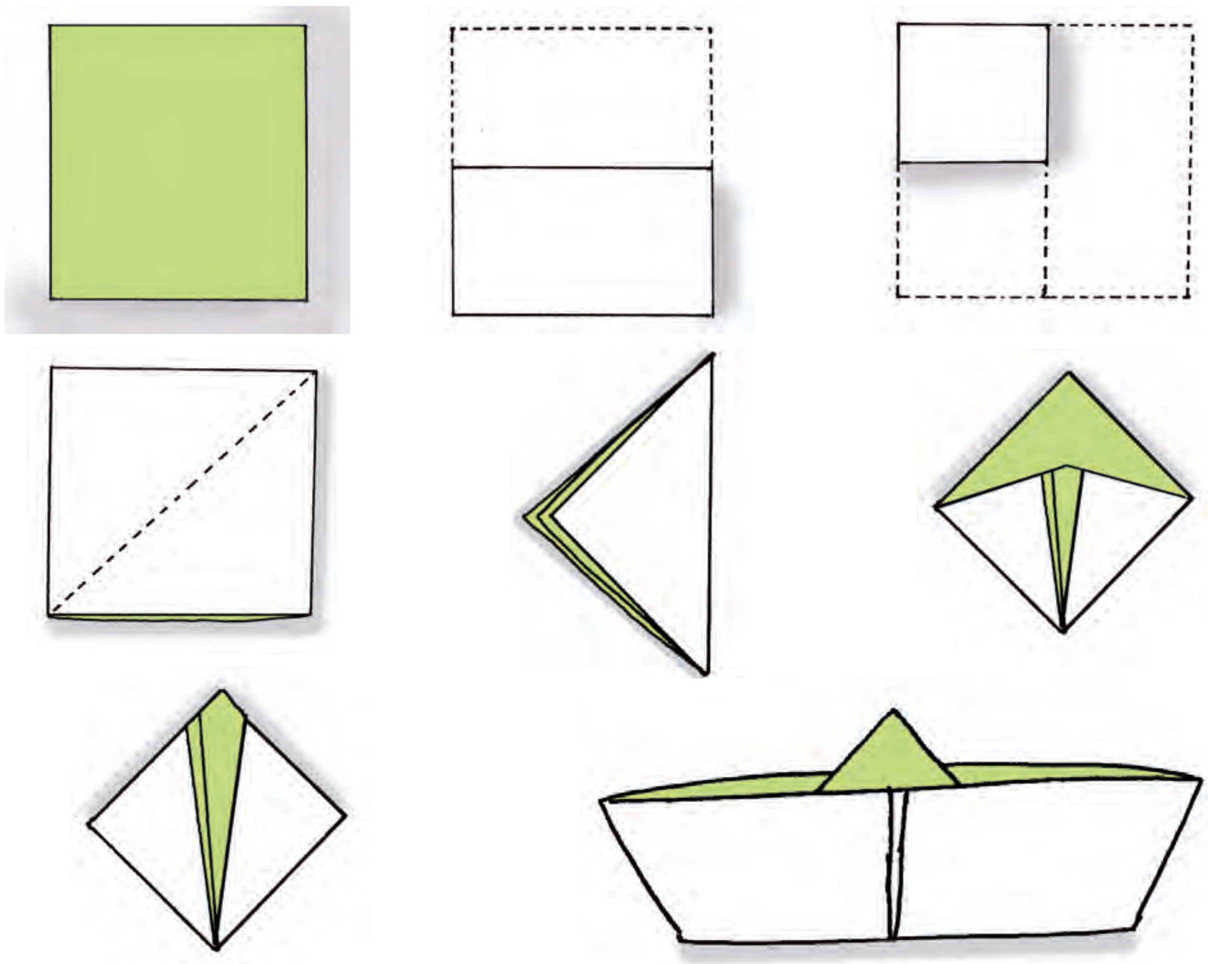


❑ ऊपर बने चित्रों का ध्यान से निरीक्षण करने के लिए कहें । चित्रों में १० अंतर दिए गए हैं, विद्‌यार्थियों से उन्हें ढूँढ़ने के लिए कहें ।

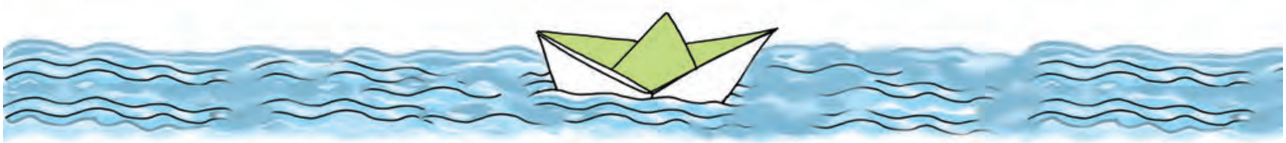
● कार्यानुभव – सुनो, समझो और बनाओ :



८. नाव



(१) एक चौकोन रंगीन कागज लो । (२) कागज को आधा मोड़ो । (३) आधे कागज को फिर मोड़ो । अब कागज एक चौथाई बनेगा । (४) एक चौथाई कागज के एक सिरे को एक तरफ मोड़ो । (५) बाकी तीन सिरों को दूसरी तरफ मोड़ो । (६) तिकोने कागज को खोलो । उसे मध्यभाग से मोड़कर दोनों ओर के अन्य सिरों को एक-दूसरे से मिलाओ ।
(७) अब उसे उलटा करो । ऊपर के सिरों को खोलो और नाव का आकार दो ।
(८) लो तैयार हो गई तुम्हारी नाव !



❑ चित्रों का निरीक्षण करवाएँ । नाव बनाने की प्रक्रिया पढ़ें/पढ़वाएँ और उसपर चर्चा करवाएँ । उचित मार्गदर्शन करते हुए विद्यार्थियों से नाव बनवाएँ । बचपन में नाव से खेलने के उनके अनुभव सुनाने के लिए कहें । इसी प्रकार कागज से नाव, पतंग आदि बनवाएँ ।

● आत्मकथा – सुनो, पढ़ो और लिखो :

९. मैं तितली हूँ



बच्चो ! क्या मुझे पहचानते हो ? तुम समझ ही गए होगे कि मैं तितली हूँ। यहाँ-वहाँ उड़ती, अनेक आकार-प्रकार की रंग-बिरंगी तितलियाँ तुम सबने देखी होंगी।

मेरे शरीर के सिर, वक्ष और उदर तीन भाग हैं। मेरे तीन जोड़ी पैर होते हैं। मेरे सिर पर आँखें होती हैं। फूलों का रस मेरा भोजन है। इसे पाने के लिए मैं एक फूल से दूसरे फूल पर मँड़राती रहती हूँ। मैं अपनी सूँड़ से फूलों का रस पीती हूँ।

मैं जानती हूँ कि तुम बच्चों को मेरा रंग-रूप, विशेषकर पंख बहुत सुंदर लगते हैं। तुम्हारी जानकारी के लिए बताती हूँ कि मेरे दो जोड़ी पंख होते हैं। इनपर कई रंगों के आकर्षक चकत्ते होते हैं। एक बात का मुझे बहुत दुख है कि तुम बच्चे प्रायः मुझे पकड़कर अपनी पुस्तक या कॉपी में बंद करके रख देते हो। इससे मेरी मृत्यु हो जाती है।

बच्चो ! मैं लंबे समय तक तुम लोगों के साथ रहना चाहती हूँ। इसलिए शपथ लो कि आज से तुम लोग मुझे पकड़ोगे नहीं। अच्छा चलती हूँ, बहुत भूख लग रही है। मुझे उस गेंदे के फूल का रस भी पीना है। नमस्ते !



❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें। विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ। आत्मकथात्मक शैली संबंधित चर्चा करें। विद्‌यार्थियों को अपने बारे में आत्मकथन शैली में बोलने के लिए प्रेरित करें। इसको कहानी के रूप में लिखवाएँ।



स्वाध्याय

१. **मोटू-पतलू का किस्सा सुनकर अपने मित्रों /सहेलियों को सुनाओ ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी बताओ :**

पैर, आँख, पंख, फूल, नाव, गाँव, किसान, पानी, शरारती, पेड़, हाथ, भोजन, सहायता ।

३. **वाक्यों का मुखर वाचन करो, समझो और विरामचिह्नों का उचित उपयोग करो :**

(क) मेरे शरीर के सिर वक्ष और उदर तीन भाग हैं

(ख) क्या मुझे पहचानते हो

(ग) नमस्ते

(घ) अच्छा चलती हूँ बहुत भूख लगी है

४. **उत्तर लिखो :**

(च) तितली के शरीर के कितने भाग होते हैं ?

(छ) तितली का भोजन क्या है ?

(ज) भोजन पाने के लिए तितली कहाँ मँड़राती है ?

(झ) तितली ने कौन-सी शपथ लेने के लिए कहा ?

५. **गेंदे के फूल से क्या-क्या बनाया गया है, चित्र देखकर बताओ :**








६. **उड़ती पतंग के माँझे से घायल होकर एक कबूतर रास्ते में गिरा है, ऐसे में तुम क्या करोगे ?**

● **व्यावहारिक सृजन – सुनो, समझो और करो :**




१०. सप्ताह का अंतिम दिन




सप्ताह का अंतिम दिन था । कक्षा में आते ही बहन जी ने विद्‌यार्थियों के चेहरे देखकर समझ लिया कि आज उनकी पढ़ने की इच्छा नहीं है । उन्होंने कहा, "बच्चो ! आज हम पढ़ाई नहीं करेंगे ।" बच्चे खुशी से उछल पड़े । बहन जी सबको शांत कराती हुई बोलीं, " सब एक पंक्ति में खड़े हो जाओ । अब हम सब मैदान में पेड़ के नीचे चलेंगे ।" सभी बच्चे पंक्तिबद्‌ध होकर पेड़ के नीचे आ गए । बहन जी ने सबको अर्धगोलाकार में बैठने की सूचना दी । सभी बच्चे फटाफट बैठ गए ।



बहन जी ने पहले से ही परचियाँ बना ली थीं । परचियों में किसान, रसोइया, दूधवाला, सब्जीवाला, डॉक्टर आदि के नाम तथा भोजन बनाने की विविध कृतियाँ लिखी हुई थीं । उन्होंने कहा, "बारी-बारी से सभी आकर एक-एक परची उठाएँगे । परची लेने के बाद सोचने के लिए पाँच मिनट का समय मिलेगा । मैं कोई एक उपस्थिति क्रमांक बोलूँगी । उस क्रमांक का विद्‌यार्थी परची के विषय के अनुसार सामने आकर अभिनय करेगा । शेष सभी विद्‌यार्थी अभिनय के बाद उस व्यवसाय का नाम बताएँगे ।" फिर क्या था, अभिनय का खूब रंग जमा । विद्‌यार्थियों ने एक से बढ़कर एक अभिनय किए । बहन जी ने सभी के अभिनय की खूब प्रशंसा की और आवश्यक मार्गदर्शन भी किया । विद्‌यार्थी बहुत प्रसन्न थे । घर जाकर उन्होंने अपना-अपना अभिनय परिवार के सदस्यों के सामने प्रस्तुत किया । घरवालों ने भी खूब शाबाशी दी । बच्चों ने सोचा कि सप्ताह का अंतिम दिन अच्छा बीता ।

❑ उचित उच्चारण आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करते हुए सुनिश्चित करें कि विद्‌यार्थी समझते हुए सुन रहे हैं । पाठ में आए विषयों के अनुसार अभिनय कराएँ । विद्‌यार्थियों से उनकी पसंद के किसी कलाकार के अभिनय की नकल करने के लिए कहें ।



स्वाध्याय

१. सप्ताह का अपना नियोजन सुनाओ ।

२. तुम्हारे परिसर में कौन–कौन–सी दुकानें हैं, बताओ ।

३. सुविचार पढ़ो और समझो :

(क) झूठ बोलना बुरी बात है ।

(ख) आज का काम कल पर मत छोड़ो ।

(ग) सोचो, समझो फिर करो ।

(घ) लालच बुरी बला है ।

४. चित्रों और शब्दों की जोड़ियाँ मिलाओ :






दूधवाला   सब्जीवाला   डॉक्टर   रसोइया

५. निम्नलिखित चित्रों को पहचानो और उनकी बोलियों/कृतियों का अभिनय करो :








६. तुम किन–किन कामों में पिता जी की सहायता करते हो, बताओ ।

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ बिंदुओं में क्रमशः पूरी वर्णमाला लिखकर जोड़ो और क्रम से बोलो :









✻ पुनरावर्तन ✻

१. १ से ५० तक की संख्याएँ सुनो और सुनाओ ।

२. अपना और अपने परिवार का विस्तार से परिचय दो ।

३. पंचतंत्र की कहानियाँ पढ़ो ।

४. दिए गए वर्णों का उपयोग करते हुए बिना मात्रावाले शब्द सुधारकर लिखो :

(क, ढ़, ग, ब, घ, ड, श, ऋ, भ, अं, ऑ, आँ, ज)

शरभत, पनगट, गघन, सहद, लगबग, आंगन, ऐनख, अँत, गढ, आँन, ढफ, अझगर, रितु ।

५. अक्षर समूह में से संतों के उचित नाम बताओ और लिखो :

ई	रा	मी	बा	
र	क	दा	बी	स
दा	तु	सी	स	ल
म	तु	रा	का	
व	ना	दे	म	

उपक्रम

माता–पिता से अपने बारे में सुनो ।

पिछले वर्ष किए अपने विशेष कार्य बताओ ।

समाचारपत्र में मुख्य समाचारों के शीर्षक पढ़ो ।

मिठाइयों की सूची बनाओ ।

● चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. किला और गढ़

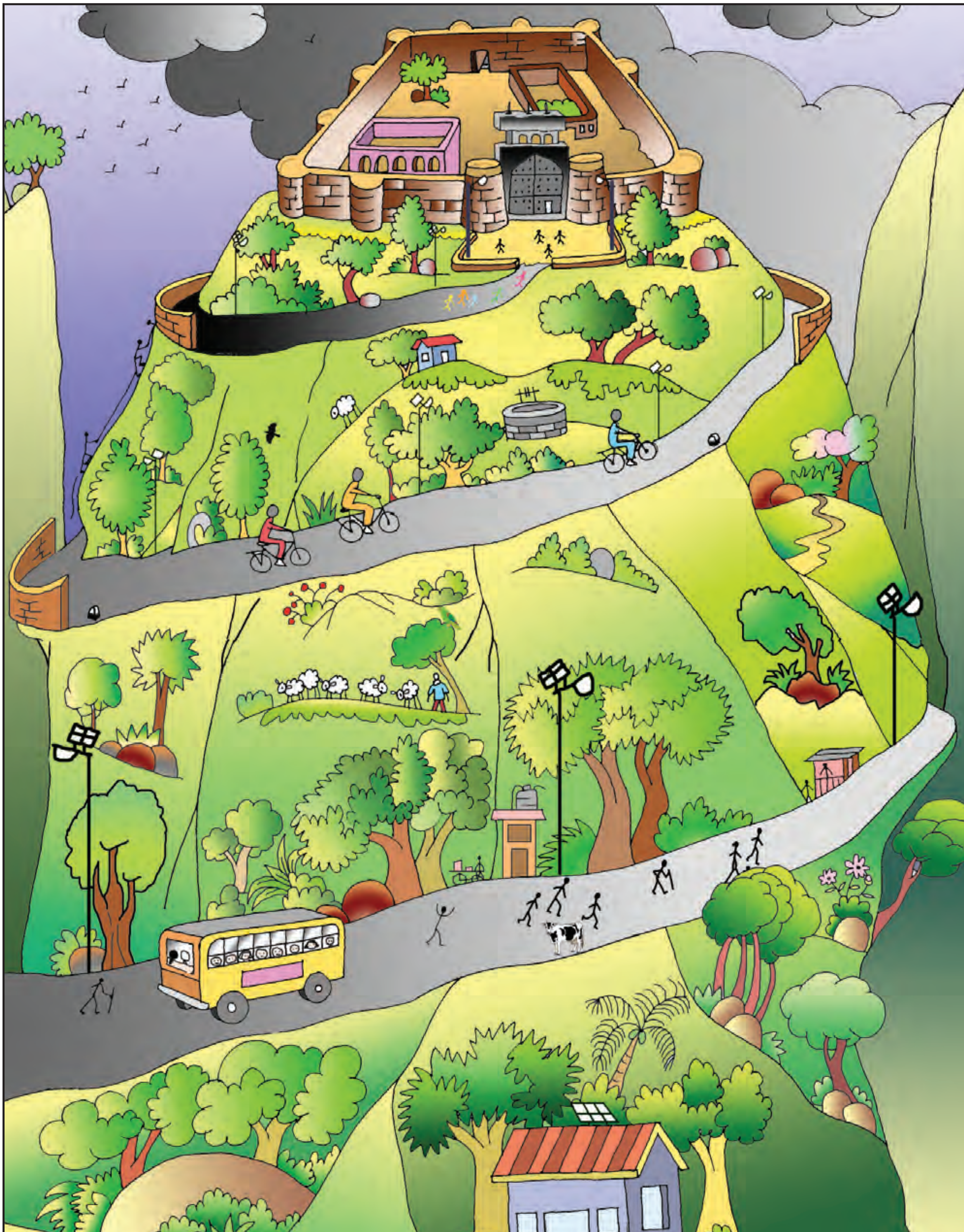
युद्‌ध के समय शत्रुसेना से बचाव के लिए किले बनाए जाते थे । किले की दीवारें मजबूत होती हैं । उनकी संरचना परकोटेदार होती है । भारत में अनेक किले हैं । ये हमारी ऐतिहासिक धरोहर हैं ।



❑ दिए गए चित्रों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने और वाक्यों को पढ़ने के लिए विद्‌यार्थियों को सूचना दें । चित्रवाचन करवाकर चित्रवर्णन कराएँ । किले, गढ़ों की दीवारें इतनी मजबूत क्यों बनाई गईं; इस पर चर्चा कराएँ । किले के विविध भागों को बताएँ और समझाएँ ।

गढ़, किले का ही एक प्रकार है । ये सामान्यतः पहाड़ों पर होते हैं । इससे अपने बचाव के साथ शत्रु पर आक्रमण करना भी सरल होता था ।

दूसरी इकाई

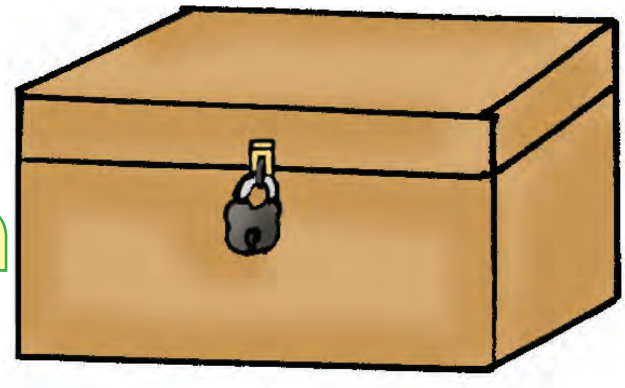


❑ गढ़ और किले में अंतर बताने के लिए कहें । विद्‌यार्थियों से उनके आस-पास के गढ़ों के नाम पूछें । जिले की सांस्कृतिक विरासत के स्थानों/वस्तुओं के बारे में चर्चा करें । उनसे ऐसे स्थानों की सैर करते समय वहाँ की स्वच्छता रखने के संबंध में चर्चा करें ।

● **वाचन – पढ़ो और साभिनय गाओ :**



२. अगर



खूब बड़ा-सा अगर कहीं, संदूक एक मैं पा जाता ।
जिसमें दुनिया भर का चिढ़ना, गुस्सा आदि समा पाता ।।

तो मैं सबका क्रोध, घूरना, डाँट और फटकार सभी ।
छीन-छीनकर भरता उसमें, पाता जिसको जहाँ जभी ।।

तब ताला मजबूत लगाकर, उसे बंद कर देता मैं ।
किसी कहानी के दानव को, कुली बना फिर लेता मैं ।।

दुनिया के सबसे गहरे सागर में उसे डुबो आता ।
तब न किसी बच्चे को कोई, कभी डाँटता, धमकाता ।।

– रमापति शुक्ल





❑ कविता का उचित लय-ताल के साथ सस्वर वाचन करके विद्यार्थियों से साभिनय दोहरवाएँ । उन्हें मौन वाचन के लिए समय देकर कविता के लयात्मक शब्द बताने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थियों को निडरता से रहने की प्रेरणा दें । उनसे कोई साहस कथा कहलवाएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।



स्वाध्याय

१. रेडियो पर प्रार्थना, दोहे सुनो और उनमें से अपनी पसंद का सुनाओ ।

२. शहरों के नामों की अंत्याक्षरी खेलो ।

३. हिंदी के किसी लेखक का संस्मरण पढ़ो ।

४. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

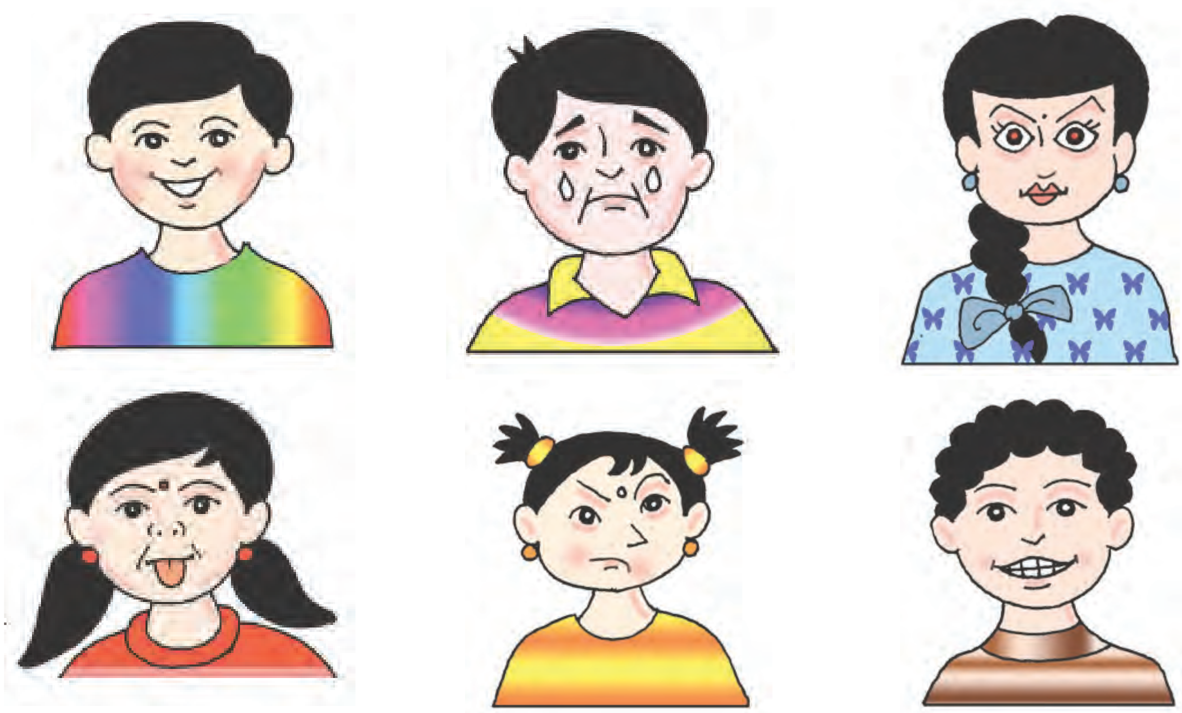
(क) लड़का कैसा संदूक और किस प्रकार का ताला चाहता है ?

(ख) लड़का किसकी सहायता से संदूक को सागर में डुबो देना चाहता है ?

(ग) संदूक को सागर में डुबोने का क्या परिणाम होगा ?

(घ) लड़का बड़े-से संदूक में क्या बंद करना चाहता है ?

५. आईने के सामने खड़े होकर निम्नलिखित कृतियाँ करो :



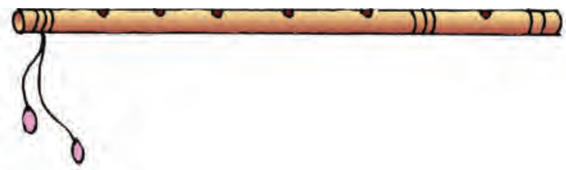
६. माँ ने तुम्हें कूड़ा, कूड़ेदान में डालने के लिए कहा है । तुम नीचे दी गई कृतियों में से क्या करोगे, बताओ :

(च) कूड़ा, कूड़ेदान के बाहर फेंक आओगे ।

(छ) कूड़ा, कूड़ेदान में फेंकोगे ।

(ज) सुनी-अनसुनी करके खेलने भाग जाओगे ।

● **वाचन – पढ़ो और समझो :**



३. जादू

देवपुर का राजा कर्मसेन न्यायप्रिय था परंतु उसे गीत-संगीत में कोई रुचि नहीं थी । अतः राज्य में गाने-बजाने की मनाही थी । उसी राज्य में सत्यजीत नाम का पढ़ा-लिखा, बाँसुरी बजाने में कुशल एक युवक था । एक दिन जंगल में पेड़ के नीचे बैठकर वह बाँसुरी बजाने वाला ही था कि उसे एक घुड़सवार आता दिखाई दिया । अचानक घोड़े का पाँव फिसला और उस पर बैठा व्यक्ति जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया । वे राजा कर्मसेन थे । सत्यजीत ने राजा को होश में लाने का प्रयत्न किया किंतु उन्हें होश नहीं आया ।

सत्यजीत सोच में डूब गया फिर वह अपनी बाँसुरी निकालकर बजाने लगा । बाँसुरी का मधुर संगीत पूरे वातावरण में गूँजने लगा । पक्षी भी उस मधुर संगीत से आस-पास मँड़राने लगे । तभी उसने देखा, राजा धीरे-धीरे आँखें खोल रहे हैं । सत्यजीत डरकर राजा के पाँव में गिर पड़ा । राजा ने कहा, "युवक, कल तुम हमारे राजदरबार में आ जाना ।"

दूसरे दिन सत्यजीत डरते-डरते राजा के दरबार में पहुँचा । राजा ने कहा, "तुमने कोई गलती नहीं की है । तुम्हारे संगीत के जादू के कारण ही आज मैं जीवित हूँ ।" फिर राजा ने मंत्री से कहा, "आज से हमारे राज्य में गीत-संगीत पर कोई पाबंदी नहीं होगी । सारे राज्य में तुरंत ही यह घोषणा कर दी जाए ।"

–कमलेश तूली



❑ उचित उच्चारण, आरोह, अवरोह के साथ कहानी का वाचन करवाएँ । कहानी के घटनाक्रम पर चर्चा करें । विद्यार्थियों से कहानी को उनके अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहें । उन्हें अपनी रुचि के अनुसार कोई वाद्य सीखने हेतु प्रोत्साहित करें ।



स्वाध्याय

१. परी की कोई कहानी सुनाओ ।

२. उत्तर दो :

(क) राजा कर्मसेन के राज्य में किस बात की मनाही थी ?

(ख) घुड़सवार कौन था ? वह कैसे गिर पड़ा ?

(ग) दूसरे दिन सत्यजीत कहाँ पहुँचा ?

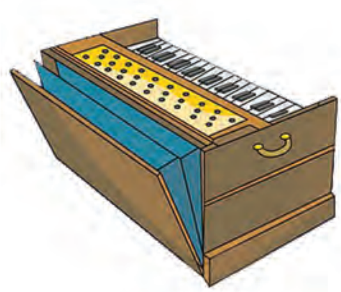
(घ) राजा ने मंत्री से क्या कहा ?

३. किसी महापुरुष के बारे में पढ़ो ।

४. जोड़ी मिलाकर पूरा वाक्य लिखो :

(च) कर्मसेन	पाबंदी नहीं रहेगी ।
(छ) सत्यजीत	वातावरण में गूँजने लगा ।
(ज) मधुर संगीत	बाँसुरी बजाने में कुशल था ।
(झ) गीत-संगीत पर	न्यायप्रिय था ।

५. चित्रों को देखकर वाद्‌यों के नाम बताओ और इनकी ध्वनियों की नकल करो :





६. अपनी कक्षा की सजावट कैसे करोगे, इसपर चर्चा करो ।

● भाषण संभाषण – समझो और बताओ :



४. धरती की सब संतान



जाह्नवी – क्या कर रही हो कृति दीदी ?

कृति – मैं छत पर अनाज के दाने बिखेर रही हूँ ।

जाह्नवी – पर माँ कहती हैं कि अनाज बरबाद नहीं करना चाहिए ।

कृति – जाह्नवी ! मैं अनाज बरबाद करने के लिए नहीं बल्कि पंछियों के खाने के लिए बिखेर रही हूँ ।

जाह्नवी – पंछियों के खाने के लिए ?

कृति – पिता जी कहते हैं कि बारिश के दिनों में अनाज तलाशने के लिए पंछी दूर तक जा नहीं पाते । अनाज डालकर हमें उनकी सहायता करनी चाहिए ।

जाह्नवी – हाँ ! दादी जी भी गरमी के दिनों में पंछियों के लिए मिट्टी के बरतन में पानी भरकर रखती हैं । अनेक पंछी हमारी छत पर पानी पीने आते हैं ।

कृति – हाँ जाह्नवी ! हमें पंछियों के लिए दाना-पानी उपलब्ध कराना चाहिए ।

जाह्नवी – सच है, पशु-पक्षी, पेड़ सब धरती माँ की संतान हैं । हमें सबका ध्यान रखना चाहिए और सबसे प्यार करना चाहिए ।



❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ संवाद का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से अनुवाचन एवं मुखर वाचन करवाएँ । 'प्राणी एवं अन्न संरक्षण' पर चर्चा करें । वे पक्षियों के लिए क्या-क्या करते हैं, पूछें । उन्हें पक्षी निरीक्षण के लिए प्रोत्साहित करें ।



स्वाध्याय

१. आज के महत्त्वपूर्ण समाचार सुनाओ ।

२. पाठशाला में 'शिक्षक दिवस' कैसे मनाया गया, बताओ ।

३. कोई हास्य कविता/ कथा पढ़ो ।

४. उत्तर लिखो :

(क) छत पर अनाज के दाने कौन बिखेर रही है ?

(ख) जाह्नवी की माँ क्या कहती हैं ?

(ग) दादी जी किसमें पानी भरकर रखती हैं ?

(घ) पशु-पक्षी, पेड़ किसकी संतान हैं ?

५. चित्रों को पहचानो और इनसे कौन-सा अनाज मिलता है, बताओ :








६. अपने दादा जी के बुलाने पर तुम क्या करते हो ?

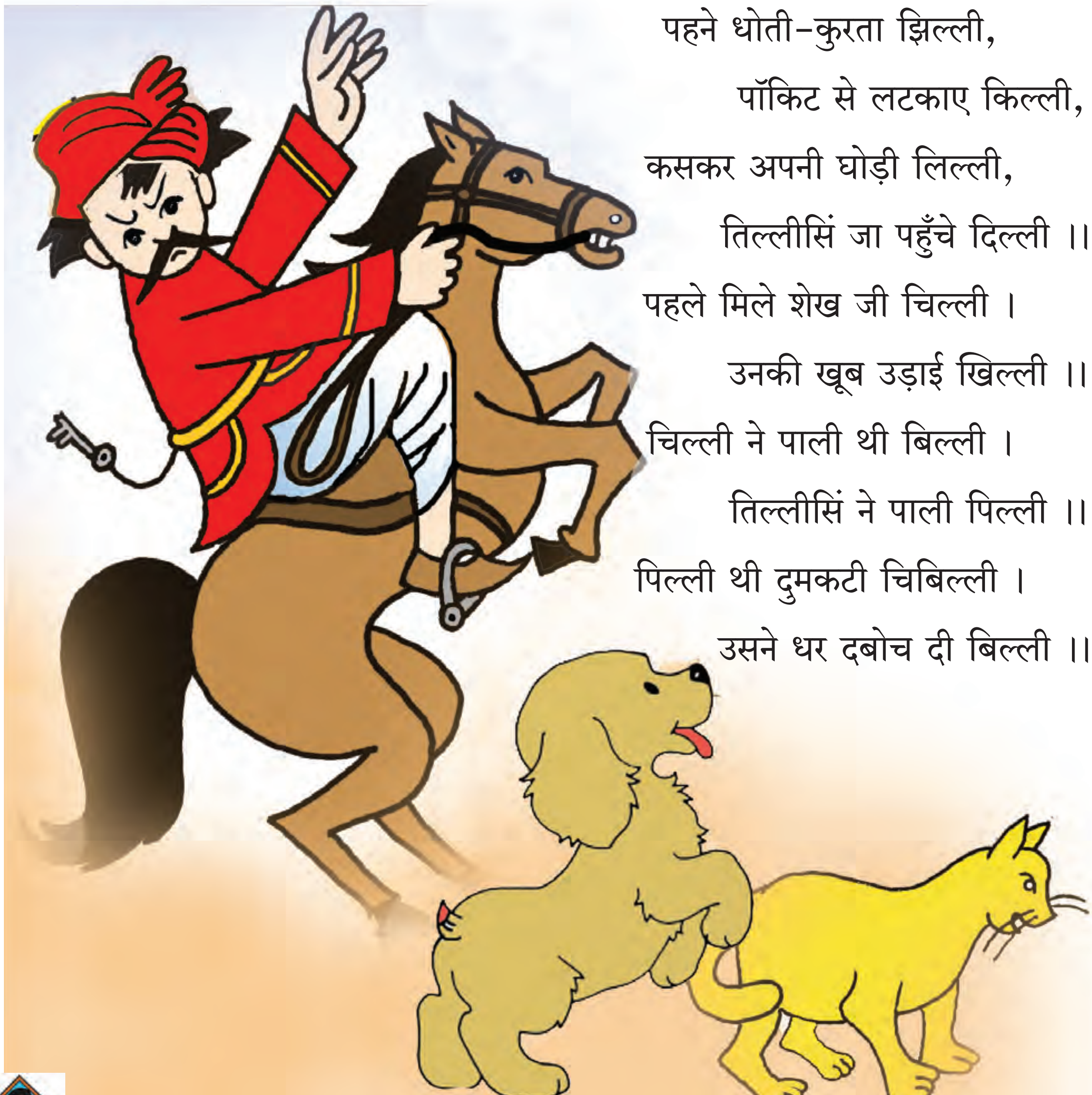
(च) 'जी आया' कहकर खेलते रहते हो ।

(छ) तुरंत जाते हो ।

(ज) दो-तीन बार आवाज लगाने पर उत्तर देते हो ।

● मात्रा – मुखर वाचन करो :

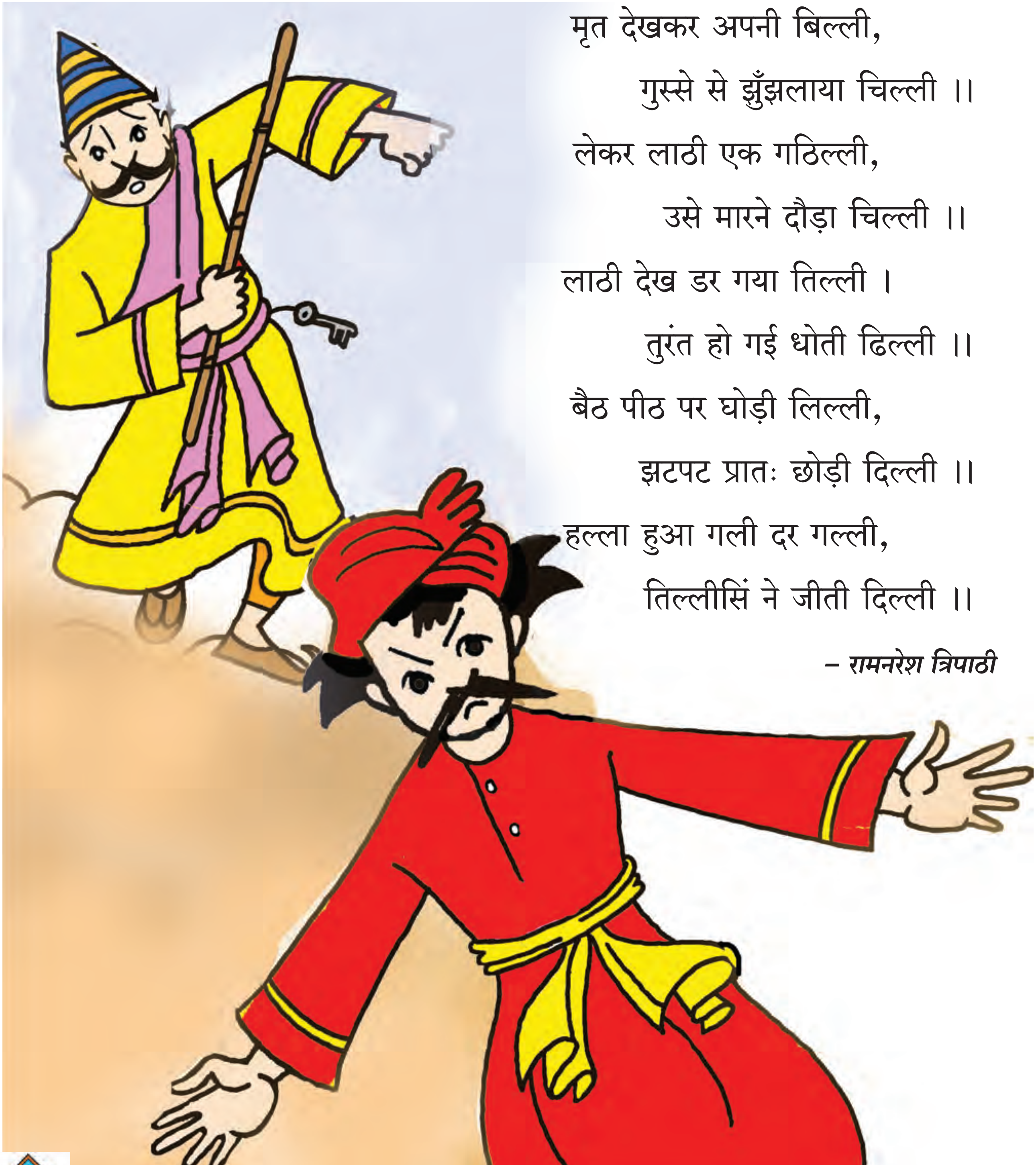
५. तिल्लीसिं



पहने धोती-कुरता झिल्ली,
पॉकिट से लटकाए किल्ली,
कसकर अपनी घोड़ी लिल्ली,
तिल्लीसिं जा पहुँचे दिल्ली ।।
पहले मिले शेख जी चिल्ली ।
उनकी खूब उड़ाई खिल्ली ।।
चिल्ली ने पाली थी बिल्ली ।
तिल्लीसिं ने पाली पिल्ली ।।
पिल्ली थी दुमकटी चिबिल्ली ।
उसने धर दबोच दी बिल्ली ।।

पढ़ो : काका, दादा, अथाह, आहार, आकार, शारदा, शाकाहार, आई, इरा, ढाका, फिर, छिप, नीरा, तीन, नदी, चीनी, चिमटा, धनिया, चटनी, काकी, दीदी, चिड़िया, हिचकी, थिरकी, फिरकी, शिकारी, दीपिका, शारीरिक, टिटिहरी, पिचकारी, फिटकरी, अमरूद, बुनकर, मनुहार, चकनाचूर, ऋचा, मृग, गृह, वृक्ष, कृपया, हृदय, आकृति ।

❑ उचित हाव-भाव, अभिनय के साथ कविता का वाचन करें । विद्यार्थियों से कविता का सामूहिक और गुट में पाठ करवाएँ । पाठ्यांश से तुकांतवाले शब्द ढूँढ़कर लिखने के लिए कहें । 'पढ़ो' में दिए गए शब्दों का वाचन कराएँ और इनका श्रुतलेखन कराएँ ।



मृत देखकर अपनी बिल्ली,
गुस्से से झुँझलाया चिल्ली ।।
लेकर लाठी एक गठिल्ली,
उसे मारने दौड़ा चिल्ली ।।
लाठी देख डर गया तिल्ली ।
तुरंत हो गई धोती ढिल्ली ।।
बैठ पीठ पर घोड़ी लिल्ली,
झटपट प्रातः छोड़ी दिल्ली ।।
हल्ला हुआ गली दर गल्ली,
तिल्लीसिं ने जीती दिल्ली ।।

– रामनरेश त्रिपाठी

पढ़ो : झनकार, षटकार, वाङ्‌मय, आराधना, प्राणायाम, दरवाजा, मलयालम, समाचारपत्र, तुअर, जामुन, दूत, सुझाव, सूरज, पपीता, वृषाली, समिति, तमिळ, झिलमिल, सीताफल, डैने, बैठे, खैरे, भैने, पैने, थैले, मैले, ऐरे, कैकेयी, भौंरों, भौंहों, बौनों, तौलो, रौंदो, नौरोज, अंजीर, बंटी, मूँछ, झाँवाँ, लहँगा, अतः, नमः, हॉकी, ऑटोरिक्शा, ऑक्सीजन ।

❑ कविता में आए 'आ' से लेकर 'ऑ' तक के मात्रा-चिह्नों के शब्द ढूँढ़कर लिखवाएँ । विद्यार्थियों से अपनी पसंद के एक ही वर्ण के बारह खड़ीवाले शब्द (कमल, कागज......) बनाकर लिखने के लिए कहें । ऊपर दिए गए शब्दों का सुलेखन करवाएँ ।

● भाषा प्रयोग– श्रुतलेखन करो :

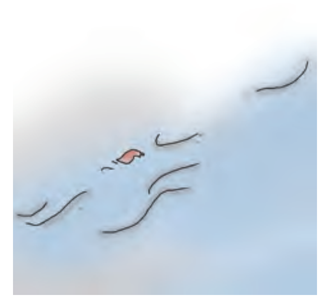
६. बोलते शब्द



चूड़ियों की खनखनाहट ।



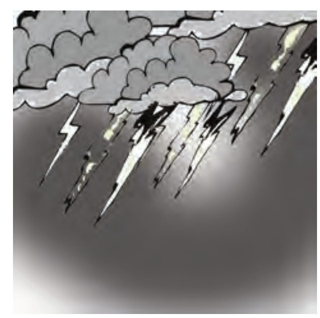
पत्तों की खड़खड़ाहट ।



हवा की सरसराहट ।



बादलों की गड़गड़ाहट ।



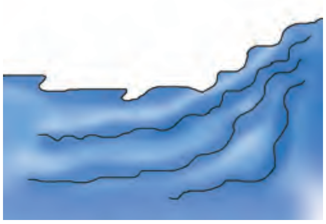
बिजली की कड़कड़ाहट ।



पंखों की फड़फड़ाहट ।



घुँघरुओं की छमछम ।



पानी की कलकल ।



घंटी की टनटन ।



बूँदों की टपटप ।

❑ ऊपर आए शब्दों का मुखर वाचन करें । विद्यार्थियों से लयात्मक शब्द बुलवाएँ और उनका श्रुतलेखन करवाएँ । इसी प्रकार के अन्य शब्द कहलवाएँ । विद्यार्थियों से ऊपर आई ध्वनियों को सुनने और अंतर पहचानकर अपना अनुभव सुनाने के लिए कहें ।



चिड़ियों की चहचहाहट ।



घोड़े की हिनहिनाहट ।



भौंरे की गुनगुनाहट ।



मक्खी की भिनभिनाहट ।



बकरी का मिमियाना ।



सियार का हुआँ-हुआँ ।



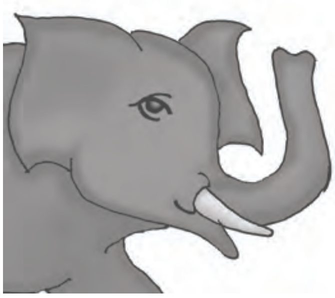
कौए की काँव-काँव ।



साँप की फुफकार ।



कबूतर की गुटर-गूँ ।



हाथी की चिंघाड़ ।

❑ ऊपर आए शब्दों का विद्यार्थियों से मौन वाचन कराएँ । प्राणियों और फेरीवालों की बोलियों पर चर्चा करते हुए उनकी नकल करवाएँ । चित्रों सहित अन्य प्राणियों और उनकी बोलियों, ध्वनियों का संग्रह कराएँ और सूची बनवाएँ । इनका सुलेखन करवाएँ ।

● आकलन– बताओ और लिखो :

७. मेरे अपने

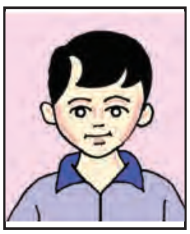
चचेरा भाई और चचेरी बहन



स्वयं

ममेरी बहन और ममेरा भाई

फुफेरा भाई और फुफेरी बहन

मौसेरा भाई और मौसेरी बहन

मेरा नाम............है । मैं अपने  और  का/की..............

हूँ । (चचेरा भाई/चचेरी बहन) मैं अपने  और  का/की

.... हूँ । (फुफेरा भाई/फुफेरी बहन) मैं अपने  और 

का/की.............. हूँ । (ममेरा भाई/ममेरी बहन) मैं अपने  और

 का/की हूँ । (मौसेरा भाई/मौसेरी बहन)

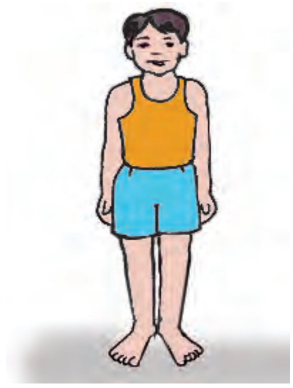
❑ विद्‌यार्थियों को अपना फोटो चिपकाने और चित्र देखकर सभी रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहें । दर्शाए गए संबंधों को समझाकर दोहरवाएँ । विद्‌यार्थियों से पाठ्यांश का वाचन करवाएँ । अपने ममेरे, चचेरे, फुफेरे, मौसेरे भाई–बहनों के नाम लिखवाएँ ।

● शारीरिक शिक्षण – पढ़ो और कृति करो :

८. व्यायाम



विश्राम की मुद्रा में खड़े हो ।



सावधान की मुद्रा में खड़े हो ।



एक पैर पर खड़े हो जाओ ।



दोनों हाथ फैलाकर पीछे झुको ।



अपने हाथ पीछे से
पकड़कर आगे झुको ।



झुककर दाहिना हाथ बाएँ पैर के अँगूठे
पर रखो और बायाँ हाथ ऊपर करो ।

❑ विद्यार्थियों से ऊपर दिए गए चित्रों का निरीक्षण कराएँ । प्रत्येक चित्र के नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए कहें । उपरोक्त सभी कृतियाँ विद्यार्थियों से समूह, गुट एवं एकल रूप में करवाएँ । व्यायाम का महत्त्व और आवश्यकता पर चर्चा करें ।

● काव्यात्मक कथा – सुनो, पढ़ो और लिखो :





९. बीज

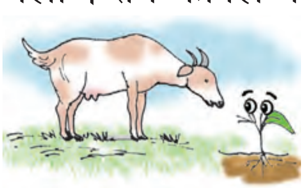
किसी नदी के किनारे एक बीज पड़ा था । वह बहुत छोटा था । वहाँ एक चिड़िया आई । वह चोंच मारकर बीज को खाने लगी । तब बीज बोला–



रुकी रहो, रुकी रहो, जमीन में गड़ने दो ।
डाल–पात होने दो, तब मुझे तुम खाना ।

चिड़िया चीं–चीं करती उड़ गई ।

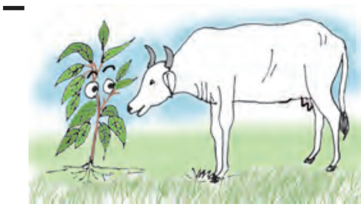
कुछ दिन बाद पानी बरसा । पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा । कुछ दिन बाद वहाँ एक बकरी आई । कोंपलें देखकर उसके मुँह में पानी भर आया । वह उन्हें खाने चली । तब कोंपल ने कहा–



रुकी रहो, रुकी रहो, जड़ को गहरे जाने दो ।
खाद, पानी खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।

बकरी यह सुनकर में–में करती चली गई ।

थोड़े दिनों के बाद बीज एक छोटा–सा पौधा बन गया । एक दिन गाय वहाँ आई । उसने पौधे को खाने के लिए मुँह खोला । इतने में पौधे ने कहा–



रुकी रहो, रुकी रहो, डाल–पात होने दो ।
खाद, पानी खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।

यह सुनकर गाय रंभाती हुई चली गई ।



बहुत दिन बीत गए । एक दिन फिर वही चिड़िया, बकरी और गाय वहाँ आ गईं । उन्होंने एक–दूसरे से पूछा, ‘‘वह छोटा पौधा कहाँ गया ?’’ तभी पेड़ बोल उठा– “मैं ही बीज हूँ ..... अंकुर हूँ । मैं ही पौधा हूँ ..... पेड़ हूँ । अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ ।” यह सुनकर सब खुश हो गए ।

– रामेश्वर दयाल दुबे

❑ उचित उच्चारण, आरोह–अवरोह, लय–ताल के साथ पाठ का वाचन करें । ध्यान से सुनने के लिए कहें । उचित आरोह–अवरोह, लय के साथ सामूहिक, गुट एवं एकल वाचन कराएँ । पाठ में आई कहानी विद्यार्थियों को अपने शब्दों में सुनाने के लिए प्रेरित करें ।



स्वाध्याय

१. छोटा भीम की सीडी देखो और सुनो ।

२. निम्नलिखित शब्दों के विलोम बताओ :

पका, सुबह, छोटी, सुखी, आधा, खोलना, विश्राम, धूप, सही, सूखा, हँसना, खरीदना ।

३. पढ़ो और समझो :

बाण, क्षण, दान, पान, प्राण, मकान, उच्चारण, कान, त्रिकोण, चाणक्य, हृदय, ऋतु, कृपाण ।

४. उत्तर लिखो :

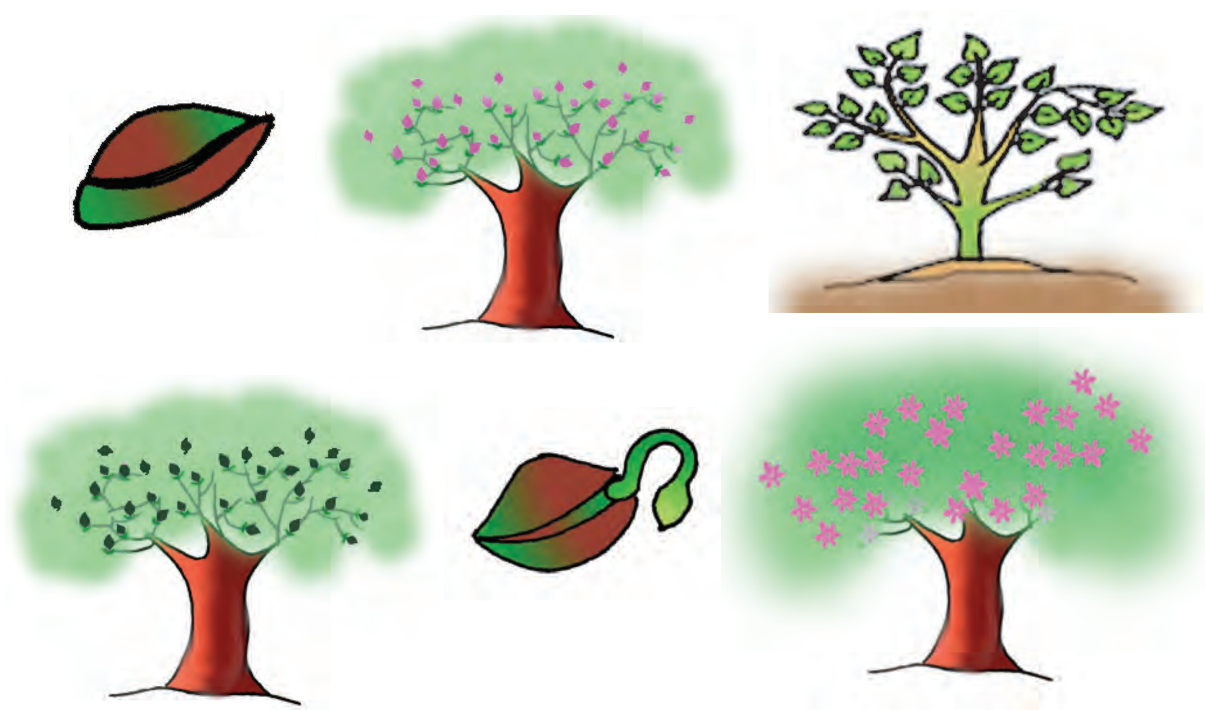
(क) बीज कहाँ पड़ा था ?

(ख) बीज ने चिड़िया से क्या कहा ?

(ग) कोंपलें देखकर किसके मुँह में पानी भर आया ?

(घ) पेड़ की कौन-सी बात सुनकर सब खुश हो गए ?

५. चित्रों को देखो और बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया को क्रम से बताओ :



६. पाठशाला की वाटिका में आने-जाने के लिए रास्ता बनाते समय बीच में एक पौधा पड़ रहा है, तुम क्या करोगे ?

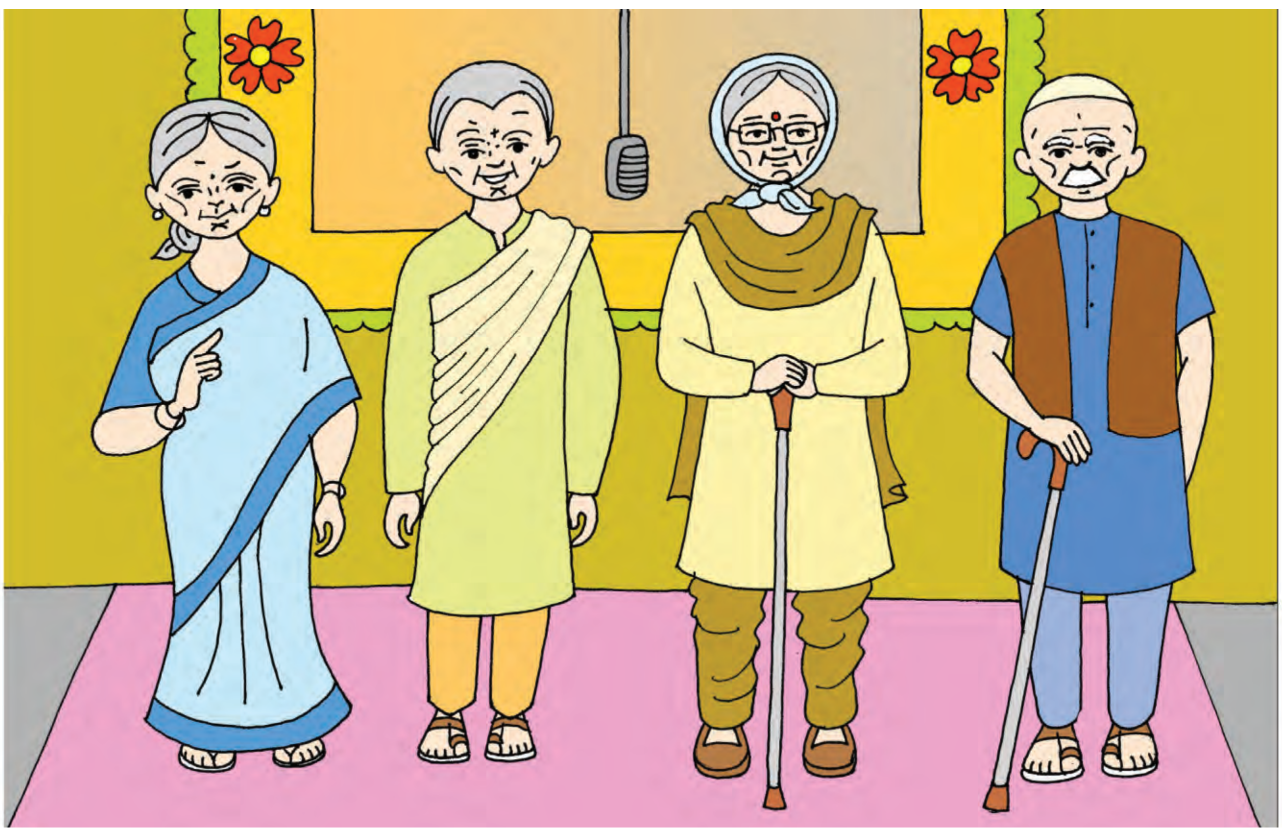
● व्यावहारिक सृजन – पढ़ो और लिखो :

१०. मीठे बोल

सब बच्चे बहुत खुश थे । आज कॉलोनी में 'दादी–दादा, नानी–नाना दिवस' था । सभी बुजुर्गों को मंच पर आना था और अपने–अपने पोता–पोती या नाती–नातिन पर एक वाक्य अपनी मातृभाषा में बोलना था । बच्चे उनको सुनने के लिए उत्सुक थे ।

सबसे पहले कुंतल की दादी जी मंच पर आईं । वे माइक के पास गईं । उन्होंने कहा, "हमार बबुई बहुत नीक बाटइ ।" अब मेघा के नाना जी की बारी थी । वे बोले, "मोर टूरा अब्बड़ सुघ्घर हवे ।" आशना की नानी जी बोली, "हमार बबूनी बहुत नीक बाड़ी ।" अंत में हितेश के दादा जी बोले, "म्हारो लाडेसर घणो हेत लागे ।" सब बच्चों ने तालियाँ बजाईं । कॉलोनी की सचिव मंगला बहन जी ने बताया कि इन बुजुर्गों ने क्रमशः अवधी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी और राजस्थानी में अपनी बात कही है । हर बुजुर्ग ने अपनी–अपनी बोली में एक ही बात कही है जिसका अर्थ है मेरी बच्ची बहुत अच्छी है / मेरा बच्चा बहुत अच्छा है ।

मुख्य अतिथि ने समझाया कि हर बोली की अपनी मिठास होती है । बोलियाँ भाषा को समृद्ध करती हैं । हमें हर बोली और भाषा का सम्मान करना चाहिए ।



❑ उचित आरोह–अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । एकल एवं सामूहिक रूप में वाचन कराएँ । पाठ में आई हुई बोलियों के शब्दों एवं उनके मानक रूपों पर चर्चा करें । बोली भाषा के प्रति लगाव जागृत करें । मुख्य अतिथि द्वारा कही बात पर चर्चा करें ।

स्वाध्याय

१. अपनी–अपनी बोली में एक–एक वाक्य सुनाओ ।

२. तुम कौन–कौन–सी भाषाएँ पढ़ते हो, बताओ ।

३. सुवचनों को पढ़ो और समझो :

(क) परहित सरिस धरम नहिं भाई ।

(ख) हँसी बड़ी दवाई, खुशी बड़ी कमाई ।

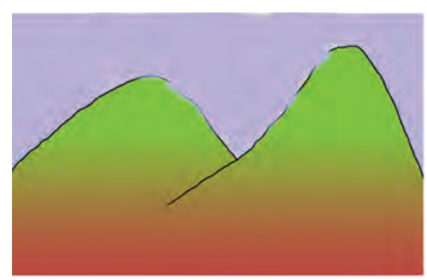
(ग) मीठी बानी, अच्छी बानी ।

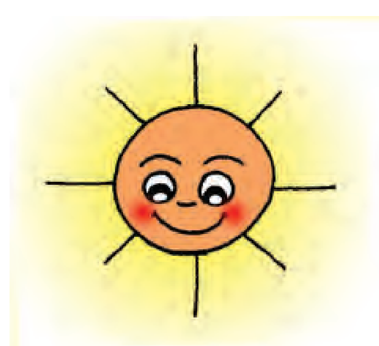
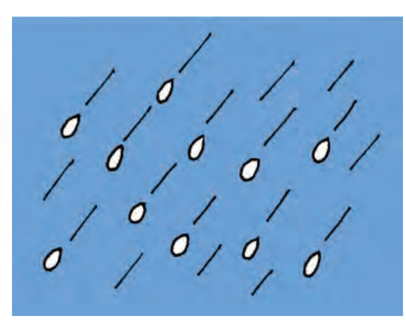
(घ) अतिथि देवो भव ।

४. मानक पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(च)	.... में जल लाओ ।	(गगरी/गागर)
(छ)	दस .... मुझे दीजिए ।	(रुपिया/रुपये)
(ज)	दीपक .... दो ।	(बार/जला)
(झ)	.... खेती के काम करता है ।	(बैल/बरधा)

५. चित्रों को पहचानो और अपनी मातृभाषा में बताओ :

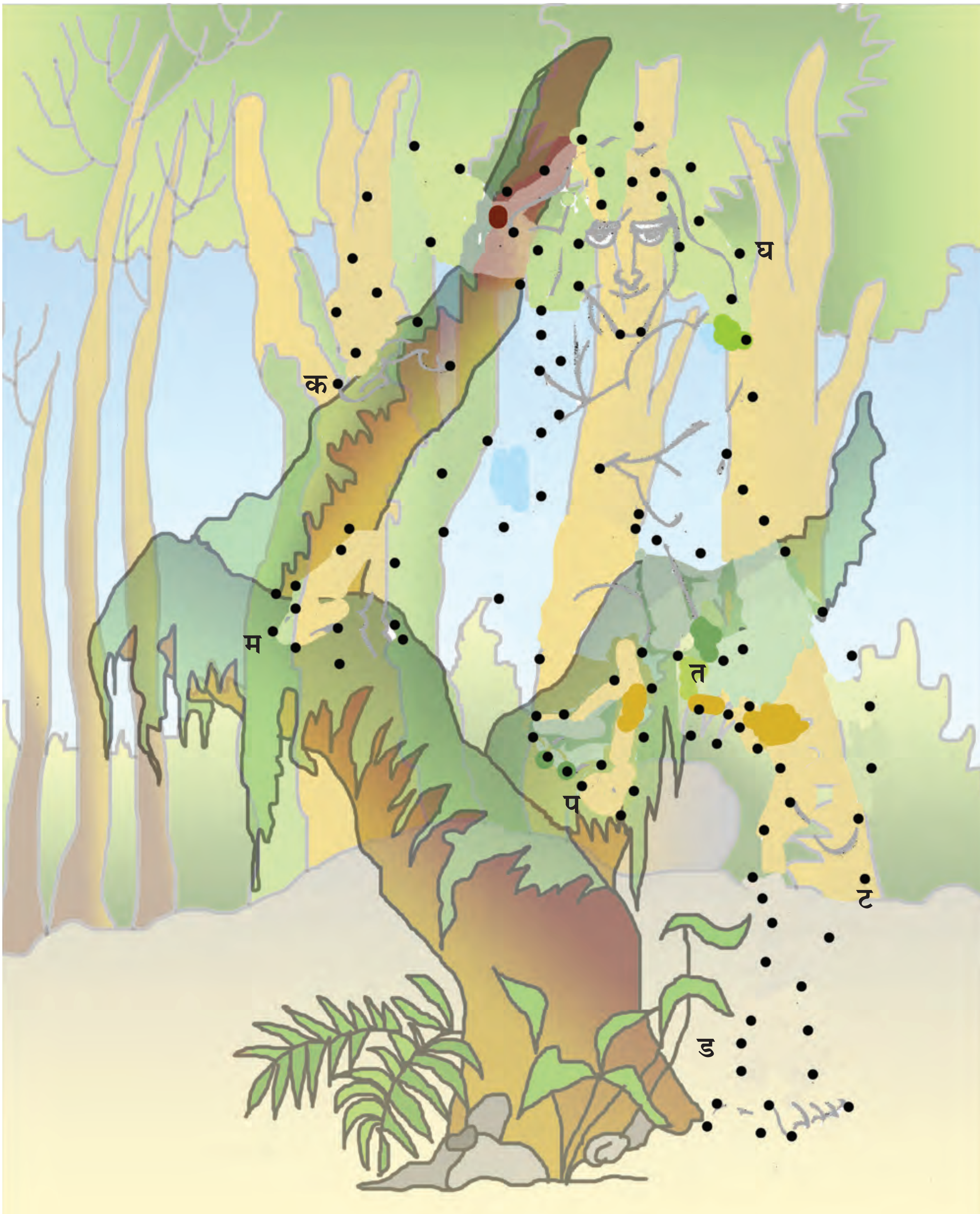
  

६. लड़कों का दल पिट्टू खेल रहा है, उनकी सहपाठी नम्रता दूर बैठी उन्हें देख रही है, इस स्थिति में लड़कों को क्या करना चाहिए, बताओ ।

* पुनरावर्तन *

* बिंदुओं में बारहखड़ी लिखकर जोड़ो और क्रम से बोलो :





✻ पुनरावर्तन ✻

१. ५१ से १०० तक की संख्याएँ सुनो ।

२. अपने मित्रों का परिचय विस्तार से दो ।

३. हितोपदेश की कहानियाँ पढ़ो ।

४. उचित मात्रा, वर्ण द्‌वारा शब्द सुधारकर लिखो :

बदाम, साबन, मकाण, जादूगार, चीडिया, मटमेला, क्रपया, बिमार, आट, दोड़, घाश, पुसतक ।

५. अक्षर समूह में से खिलाड़ियों के नाम बताओ और लिखो :

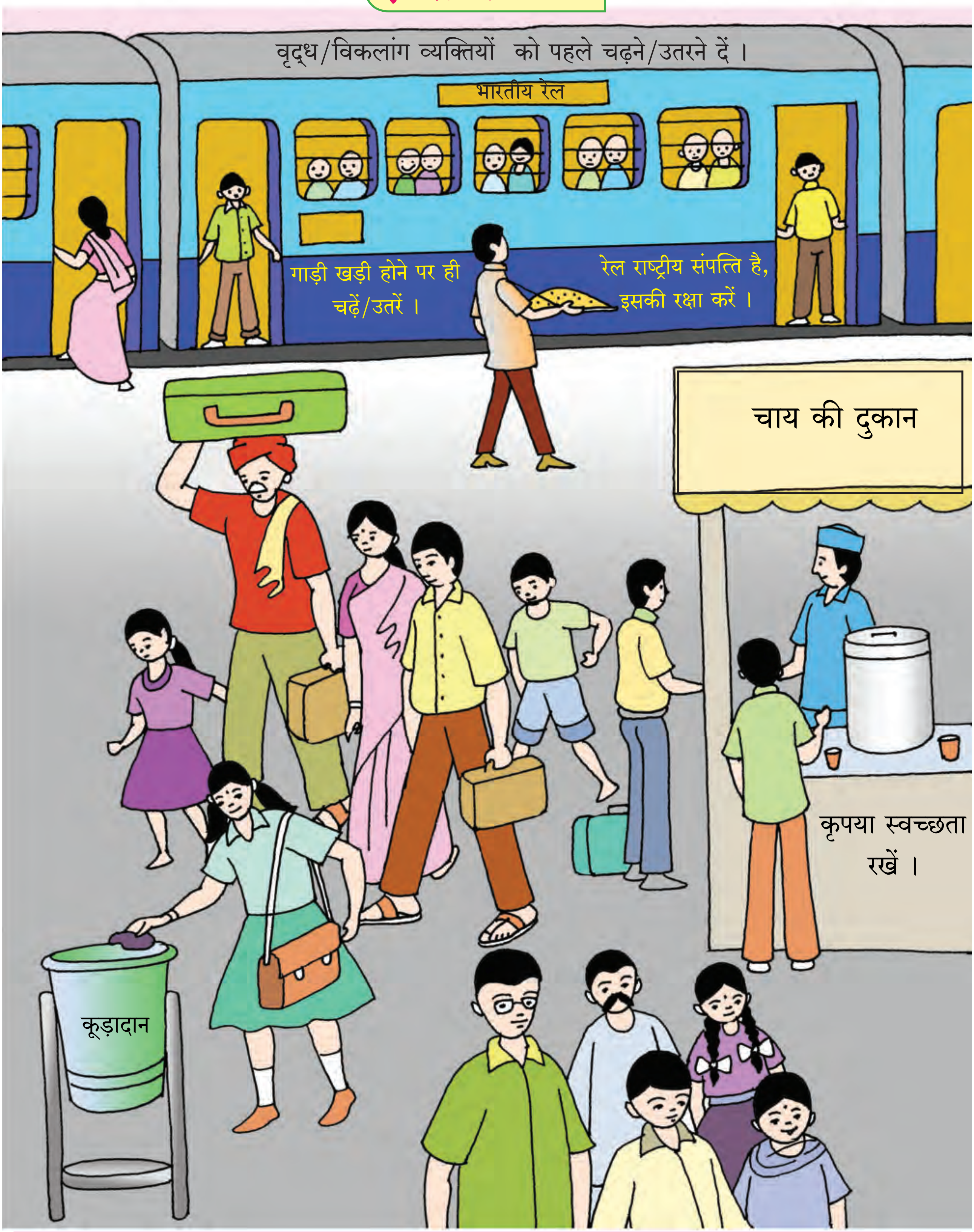
ध्या	द	चं	न				
व	शा	ध	जा	बा	खा		
ह	ल्खा	सिं	मि				
म	री	कॉ	मे				
न	र	स	ल	डु	तें	क	चि

उपक्रम

अपने बारे में मित्र/सहेली से सुनो ।	अपनी दो अच्छी और दो बुरी बातें बताओ ।	'संदर्भ सामग्री कोना' में रखी हस्तलिखित पत्रिका पढ़ो ।	नमकीन पदार्थों की सूची बनाओ ।

• चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. रेल स्थानक



❑ विद्यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है, प्रश्न पूछें । रेल न होती तो क्या होता, चर्चा कराएँ । जल, थल, वायु यातायात के साधनों का वर्गीकरण कराएँ । सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता के लिए उन्हें प्रेरित करें ।

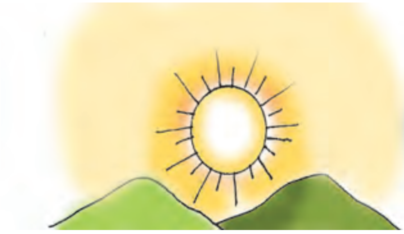
तीसरी इकाई



❑ चित्रों के वाक्यों को समझाएँ । इसी प्रकार के वाक्यों का संग्रह करवाएँ । विद्यार्थियों से उनकी रेल यात्रा, बस यात्रा आदि के अनुभव सुनाने के लिए कहें । प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने का अवसर दें । इसी प्रकार के चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

● **श्रवण – सुनो और गाओ :**

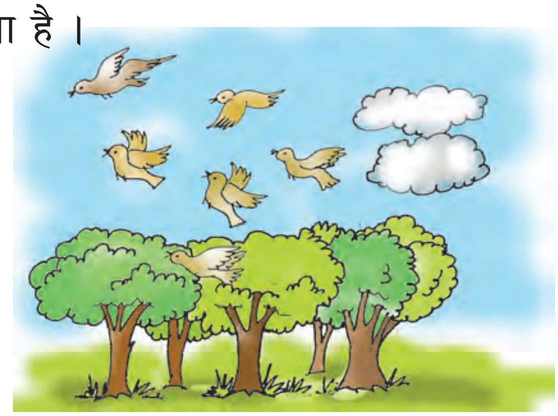
२. सही समय पर

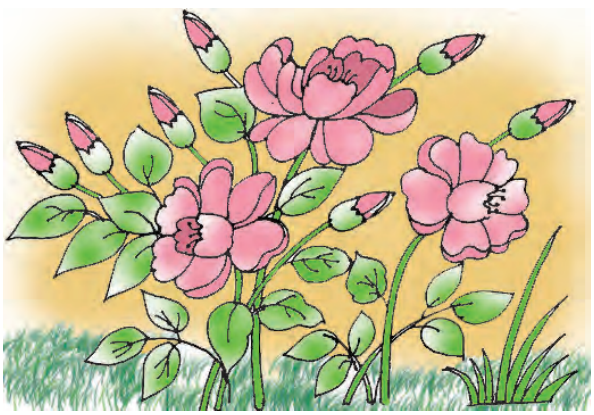


सही समय पर सूरज आता,
सही समय ढल जाता है,
चंदा भी नित समय से आता,
सही समय छिप जाता है ।



पंछी सदा समय पर जगते,
नभ में फिर उड़ जाते हैं,
दूर-दूर तक उड़ कर जाते,
दाना चुग कर लाते हैं ।





सुबह समय से खिलती कलियाँ,
किरन देख मुसकाती हैं,
संग पवन के झूम-झूमकर,
नित सुगंध फैलाती हैं ।





सही समय पर सोता जगता,
वही स्वस्थ रह पाता है,
अपना काम समय पर करता,
वही सफलता पाता है ।



सही समय पर भोजन करना,
सही समय व्यायाम करो,
सही समय पर करो पढ़ाई,
सही समय विश्राम करो ।

– डॉ. पुष्पारानी गर्ग

❑ कविता का आदर्श पाठ प्रस्तुत करें । विद्यार्थियों से चार-चार पंक्तियों का अनुपाठ कराएँ फिर सामूहिक, गुट, एकल साभिनय पाठ कराएँ । उन्हें अपनी लिखित दिनचर्या बनाने और पालन करने हेतु प्रोत्साहित करें । प्रत्येक की दिनचर्या पर चर्चा कराएँ ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।



स्वाध्याय

१. दूरदर्शन पर समूह गीत, प्रयाण गीत सुनो ।

२. निम्नलिखित विषयों से संबंधित पाँच शब्द बताओ :

रसोईघर बगीचा पंसारी मेला सरकस ।

३. 'सही समय पर' कविता की एक छोड़कर एक पंक्ति पढ़ो ।

४. उत्तर लिखो :

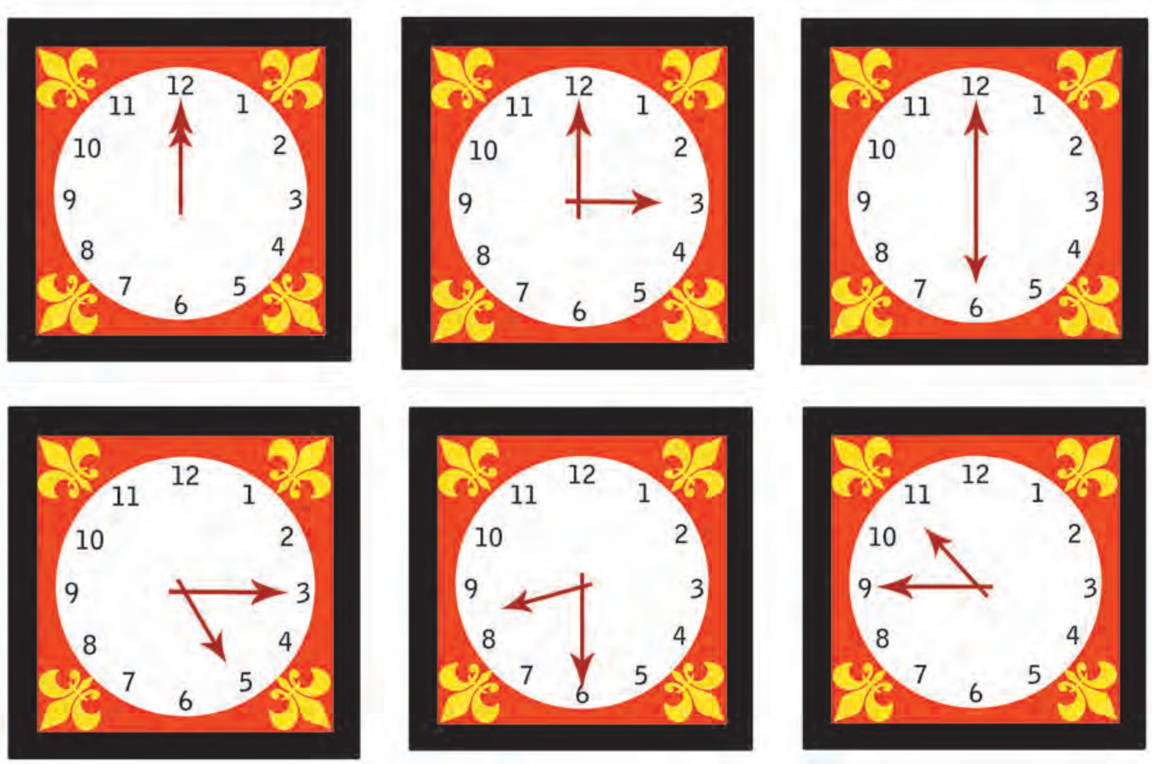
(च) सूरज कब ढल जाता है ?

(छ) कलियाँ क्या-क्या करती हैं ?

(ज) सफलता कौन पाता है ?

(झ) हमें सही समय पर क्या-क्या करना चाहिए ?

५. चित्रों को देखकर बताओ कि घड़ी में कितने बजे हैं ?



६. 'समय के महत्व' पर चर्चा करो और उसका पालन कैसे करते हो, बताओ ।

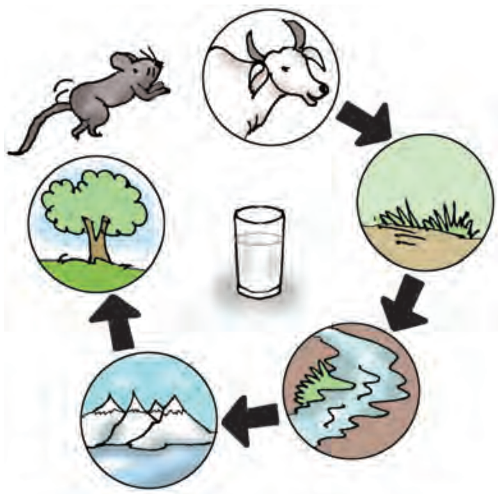
● **वाचन – पढ़ो और दोहराओ :**



३. बच्चे को दूध मिला



एक बच्चा दूध पिए बिना सो गया । बच्चे के लिए माँ ने दूध ढँककर रख दिया था । उसी झोंपड़ी में बिल के भीतर एक चूहा रहता था । वह अपने बिल से बाहर आया । उसकी दौड़-धूप से दूध का बरतन उलट गया । बच्चा जागा और भूख से रोने लगा । घर में दूध नहीं था । चूहा बच्चे की माँ के पास आया और बोला, "मैं अभी दूध लाता हूँ ।"



चूहा दौड़ा-दौड़ा गाय के पास गया । बोला, ''गाय, मुझे दूध दो । बच्चा रो रहा है ।'' गाय बोली, ''मुझे घास नहीं मिलती, मैं सूख गई हूँ । घास लाओ, तब दूध दूँगी ।''चूहा दौड़ा घास के मैदान के पास और बोला, ''मैदान, मैदान, घास दो । मैं घास गाय को दूँगा । गाय मुझे दूध देगी, दूध मैं बच्चे को दूँगा । बच्चा हँसने लगेगा ।'' ''कहाँ से दूँ घास, मुझे पानी ही नहीं मिलता । मुझे पानी दो तो मैं तुम्हें घास दूँगा ।''

चूहा दौड़ा-दौड़ा नदी के पास गया । नदी बोली, ''पानी कहाँ से दूँ, मैं तो सूखी पड़ी हूँ । पर्वत से कहो, मुझे पानी दे ।'' चूहा दौड़ा-दौड़ा पर्वत के पास पहुँचा । पर्वत बोला, "आदमी ने हमारे सारे पेड़ काट डाले । पेड़ थे, तो पानी रोकते थे । उनकी जड़ें मिट्टी को बाँधकर रखती थीं । हम कहाँ से पानी दें ?" चूहा बोला, ''मैं बच्चे की ओर से वचन देता हूँ । जब वह बड़ा होगा तो हजार पेड़ लगाएगा और तुम हरे-भरे हो जाओगे ।''



पर्वत ने पानी छोड़ा । नदी भरी । उसने मैदान को पानी दिया । मैदान में घास उगी । गाय को घास मिली । गाय ने दूध दिया । दूध लेकर चूहा झोंपड़ी में पहुँचा । दूध बच्चे को पिलाया । बच्चा हँसने लगा । बड़ा होने पर बच्चे ने पेड़ लगाने का वचन निभाया ।

– विद्‌यानिवास मिश्र

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से सामूहिक, गुट में मुखर, मौन वाचन कराएँ । वृक्षों के महत्त्व पर चर्चा करें । विद्‌यालय में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित करें । उन्हें वृक्षारोपण और वृक्ष संरक्षण हेतु प्रेरित करें ।



स्वाध्याय

१. किसी साहसी बालक/ बालिका की कहानी सुनाओ ।

२. उत्तर दो :

(क) बरतन क्यों उलट गया ?

(ख) गाय, चूहे से क्या बोली ?

(ग) पेड़ क्या-क्या करते थे ?

(घ) बच्चे ने कौन-सा वचन निभाया ?

३. किसी कलाकार की जानकारी पढ़ो ।

४. रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(च) बच्चा .... पिए बिना सो गया ।

(छ) बच्चा जागा और .... से रोने लगा ।

(ज) मुझे .... नहीं मिलती, मैं .... गई हूँ ।

(झ) बड़ा होने पर .... पेड़ लगाने का .... निभाया ।

५. चित्रों को पहचानो और उनके नाम बताओ :











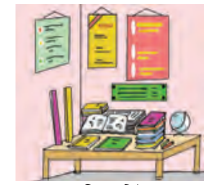


६. सीढ़ियाँ चढ़ते समय फिसलने से एक विद्‌यार्थी को चोट लग गई तो ऐसे में तुम क्या करोगे, बताओ ।

• वाचन – पढ़ो और बोलो :



४. संदर्भ सामग्री कोना



(बच्चे कक्षा की सजावट कर रहे हैं । गुरु जी कक्षा में प्रवेश करते हैं ।)

सभी बच्चे – प्रणाम गुरु जी !

गुरु जी – बच्चो नमस्ते! कक्षा को सजाने के लिए तुम सब क्या-क्या करते हो ?

कर्ण – हम अपनी कक्षा स्वच्छ रखते हैं । दीवारें सजाते हैं । सुविचार लिखते हैं ।

गुरु जी – बिलकुल ठीक । अच्छा ! हम अपनी कक्षा में नया क्या कर सकते हैं ? (सब बच्चे आपस में खुसर-फुसर करने लगते हैं ।)

अमीना – गुरु जी ! हम अपनी कक्षा में छोटा-सा पुस्तकालय बनाएँ ?

जॉन – इसमें समाचारपत्र, कहानी, कविता, सामान्यज्ञान की पुस्तकें रख सकते हैं ।

अपूर्वा – पंचतंत्र, हितोपदेश, बीरबल, तेनालीराम की पुस्तकें अवश्य रखेंगे ।

कार्तिक – चुटकुले, कारटून, चित्रकथा की पुस्तकें मुझे बहुत प्रिय हैं । इन्हें भी रखेंगे ।

गुरु जी – अरे वाह ! मेरे बच्चे तो बड़े होशियार हैं । इसके अतिरिक्त यहाँ शब्दकोश, समाचारपत्र, हस्तलिखित पत्रिका और तुम्हारे बनाए हुए चित्र, शैक्षणिक सामग्री भी रखेंगे । वर्ष में एक बार इनकी प्रदर्शनी भी लगाएँगे ।

जसवंत कौर – गुरु जी ! पुस्तकालय में शैक्षणिक सामग्री ?

गुरु जी – हम पुस्तकालय की जगह अपनी कक्षा में 'संदर्भ सामग्री कोना' बनाएँगे । तुम सब बारी-बारी से सामग्री घर ले जाकर पढ़ सकते हो । कक्षा में उपयोग कर सकते हो । इस 'संदर्भ कोना' का उद्‌घाटन मुख्याध्यापक के हाथों से होगा ।



❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन करवाएँ । कक्षा में 'संदर्भ सामग्री कोना' बनवाएँ । 'संदर्भ सामग्री' का उपयोग करवाएँ । अपने वर्ग की सजावट करवाएँ । नियमित समाचारपत्र वाचन हेतु प्रेरित करें ।



स्वाध्याय

१. **कोई चुटकुला सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में 'स्वतंत्रता दिवस' कैसे मनाया गया, बताओ ।**

३. **बीरबल की कहानियाँ पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

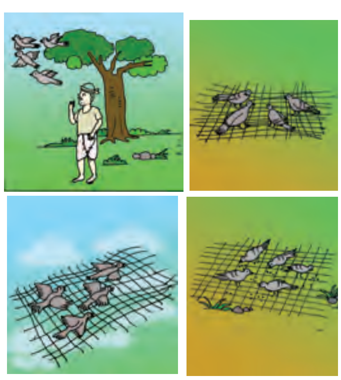
(क) बच्चे अपनी कक्षा सुंदर बनाने के लिए क्या-क्या करते हैं ?

(ख) जॉन ने कौन-कौन-सी पुस्तकें रखने की बात की ?

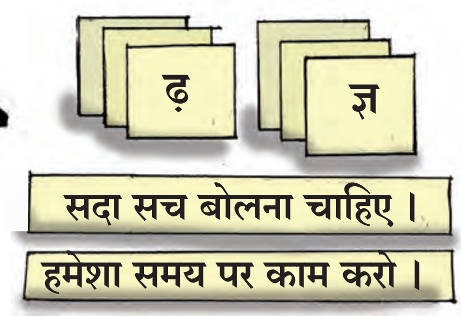
(ग) अपूर्वा ने किन पुस्तकों के नाम सुझाए ?

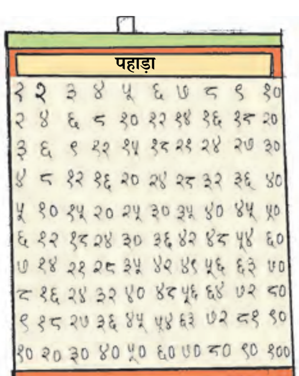
(घ) कार्तिक को क्या प्रिय है ?

५. **इनमें से कौन-सी सामग्री तुम्हारी कक्षा के 'संदर्भ कोना' में है, बताओ :**













६. **अपने कौन-से काम तुम स्वयं करते हो ?**

● संयुक्ताक्षर – मौन वाचन करो :

५. अपनी प्रकृति

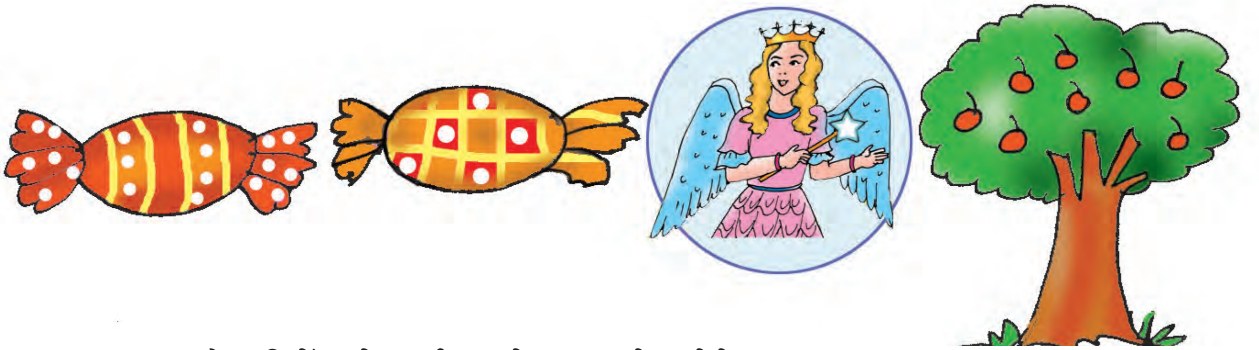
एक दिन फ्रेड्रिक, हितेंद्र, मुख्तार, प्राजक्ता, सिद्धि, काव्या, शर्मिष्ठा, कृष्णा, बिट्टू, तृप्ति, चिन्मय आपस में बातचीत कर रहे थे । प्राजक्ता ने कहा, "प्रकृति हमें कुछ न कुछ देती ही रहती है । क्यों न इस वर्ष बालदिवस पर हम प्रकृति को कुछ दें ।" सबने मिलकर अपना विचार अपनी मित्र सोनपरी को बताया ।



सोनपरी को बहुत हर्ष हुआ । वह सबको अपने साथ लेकर आकाश में उड़ चली । उसने कहा, ''दोस्तो ! तुम जो कुछ प्रकृति को देना चाहते हो, उसकी कल्पना करो । मैं तुम्हारी हर कल्पना को सुंदर उपहार में बदल दूँगी ।'' फ्रेड्रिक और सिद्धि ने आकाश को अपने खिलौने देने का मन बनाया । सोचते ही खिलौनों ने बादलों का रूप ले लिया ।



❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों का विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । बालदिवस के बारे में चर्चा कराएँ । पाठ्यपुस्तक में आए हुए अन्य संयुक्ताक्षरयुक्त शब्दों की सूची बनवाएँ ।



काव्या और हितेंद्र ने पर्वत को चॉकलेट देने की इच्छा व्यक्त की । यह इच्छा शानदार वृक्षों में बदल गई । शर्मिष्ठा एवं कृष्णा पृथ्वी को अपनी चूड़ियाँ पहनाना चाहती थीं । देखते-देखते उनकी चाह हरियाली बनकर पृथ्वी पर खिल गई ।



तृप्ति और चिन्मय ने अपनी-अपनी रंग पेटी आसमान को देने का मन बनाया । कुछ ही क्षणों में सारा आसमान कई रंगों की छटाओं से भर गया ।



तुरंत आसमान टिमटिमाते तारों से भर गया । सचमुच सभी बच्चों और परी ने मिलकर प्रकृति को अद्‌भुत बना दिया ।



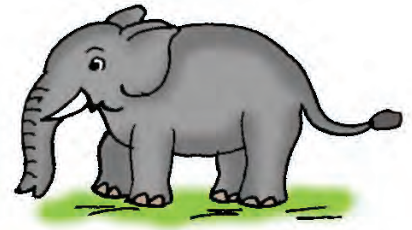
एकाएक प्राजक्ता की नींद खुल गई । उसने खिड़की से बाहर झाँका तो पाया कि प्रकृति वैसी ही दिख रही है जैसी उसने अभी-अभी सपने में देखी थी ।

- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र से बनने वाले संयुक्ताक्षर शब्द लिखवाएँ । र के तीनों प्रकारों (र्, ्र, ्‍र) के पाँच-पाँच शब्द कहलवाएँ । अपनी कक्षा में संयुक्ताक्षरयुक्त नामवाले लड़के-लड़कियों के नामों का वाक्यों में प्रयोग करके लिखने के लिए कहें ।

● व्याकरण – समझो और लिखो :



६. अहंकार



"अरी ओ चंपा ! तू मेरे आगे क्यों चल रही है ? जानती नहीं मैं मनहर हूँ !" मनहर हाथी गुस्से से चिंघाड़ा । "मनहर जी नमस्ते! क्या आपको नहीं मालूम कि–

यह रास्ता न आपका है; न मेरा,

सभी एक समान हैं, जागो हुआ सवेरा ।" कहकर चंपा चींटी मुसकराई ।

"रुक, अभी मजा चखाता हूँ ।" हाथी बोला । उसने चींटी पर पैर रखना चाहा पर वह मिट्टी में छिप गई । हाथी ने समझा कि चींटी का काम तमाम हो गया । वह खुशी से गरदन हिलाता चल पड़ा । तभी चींटी बाहर आकर बोली, "मनहर भाई, नमस्ते !"





"अरे तू कहाँ से आ रही है !" हाथी तिलमिलाया ।

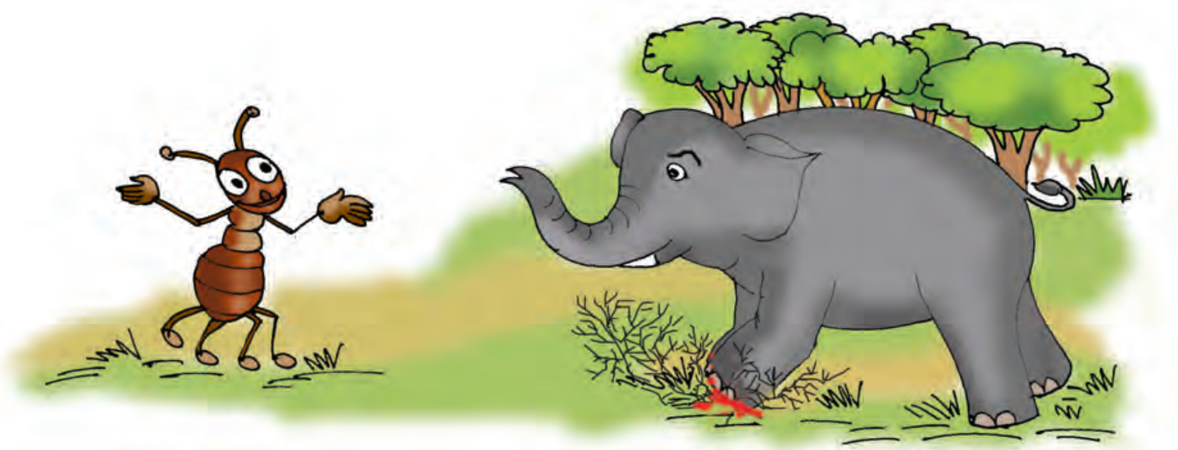
"आपके पैर के तलवे से ।" चींटी ने जवाब दिया और लता पर जा बैठी । फिर क्या था, हाथी का गुस्सा और बढ़ गया । पास के नाले से उसने सूँड़ में पानी भरा और चींटी पर जोर से उछाला । चींटी लता के बड़े पत्ते के पीछे छिप गई । थोड़ी देर बाद सामने आकर बोली, "मनहर जी नमस्ते !"



❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ पाठ का वाचन करें । कहानी से मिलने वाली सीख पर चर्चा करें । पढ़े हुए विरामचिह्नों का लेखन द्वारा दृढ़ीकरण कराएँ । अर्धविराम (;) योजक (-) निर्देशक (—) विरामचिह्नों को समझाएँ । इनके प्रयोग पर बल दें ।

अब तो हाथी गुस्से से पागल हो उठा । उसने पैर उठाया तभी चींटी सामने की झाड़ी में घुस गई । उसको मारने के लिए हाथी ने झाड़ी पर धम्म से पैर पटक दिया और चिल्लाकर कहा, "अब तू कैसे बचेगी चंपा ?"

फुनगी पर लगे फूल में छिपी चींटी बाहर आकर बोली, "नमस्ते !" वह फिर अपने रास्ते चल पड़ी । क्रोध में हाथी ने दो-तीन बार कँटीली झाड़ी पर पैर पटका । उसके पैर से खून बहने लगा ।



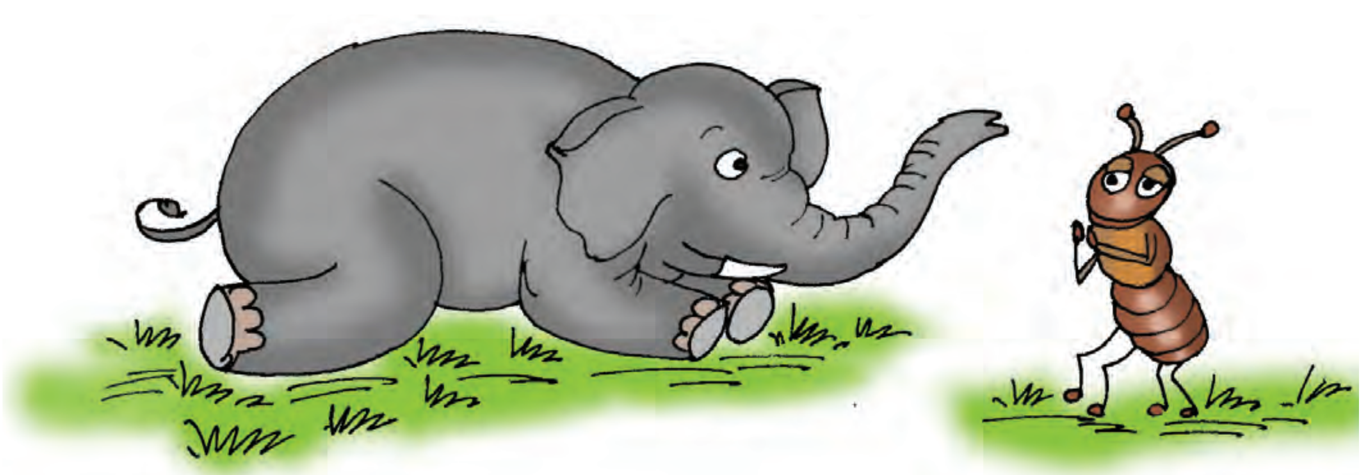
पेड़ पर बैठी मैना सब देख रही थी । बोल पड़ी-

"घमंड नहीं किसी का अच्छा, बड़ा हो चाहे छोटा,

नीचा होता सिर अहंकारी का, मान लो मोटी-मोटा ।"



उसकी बात सुनकर मनहर हाथी ने चंपा चींटी से क्षमा माँगी ।



❑ पूर्णविराम, अर्धविराम, अल्पविराम, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक विरामचिह्नों का बार-बार वाचन और लेखन द्वारा अभ्यास करवाएँ । किसी परिच्छेद का विरामचिह्नों सहित वाचन कराएँ । विरामचिह्नों के प्रयोग एवं लेखन का अभ्यास करवाएँ ।

● **आकलन – पढ़ो, समझो और लिखो :**

७. पहेली बूझो

बूझो भैया एक पहेली
जब भी छीलो नई नवेली ।

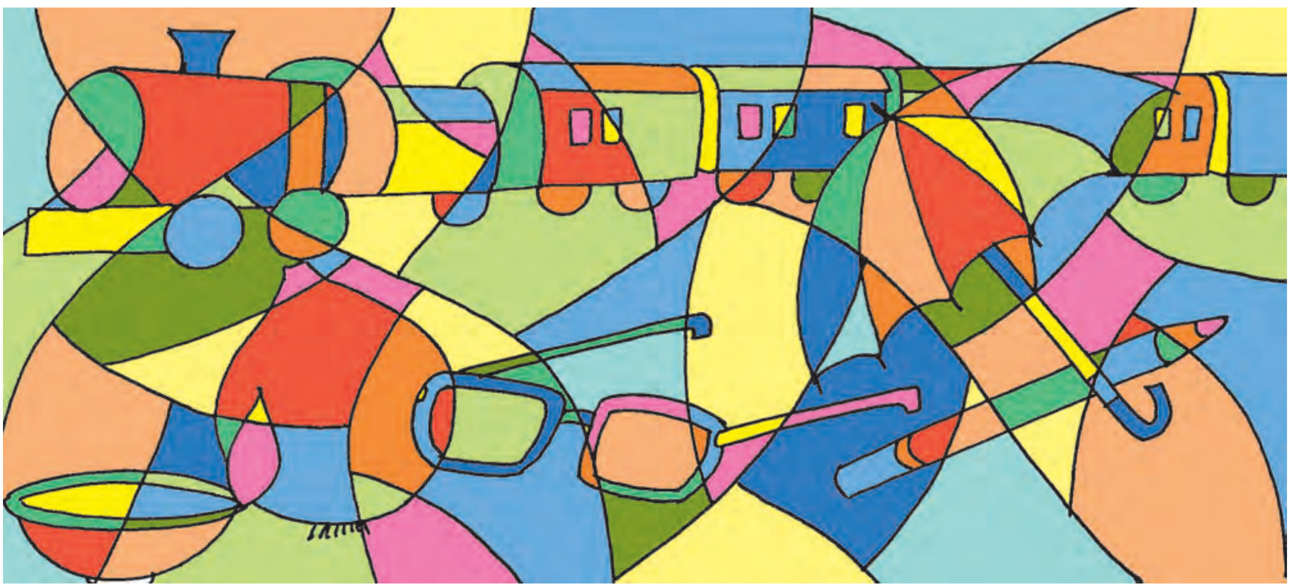
एक था राजा
राजा की रानी
दुम के सहारे
रानी पीती पानी ।

अगर नाक पर चढ़ जाऊँ
कान पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊँ ।

काली-काली माँ
लाल-लाल बच्चे ।
जिधर जाए माँ
उधर जाएँ बच्चे ।

एक फूल रंग-बिरंगा
बारिश में सदा सुखाए
तेज धूप में खिल जाता
पर छाया में मुरझाए ।

कटूँ मैं, मरूँ मैं
रोओ तुम, क्या करूँ मैं ?



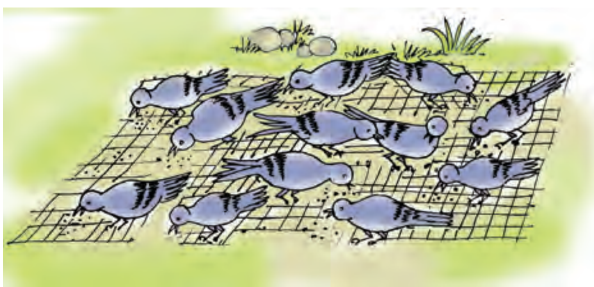
❑ पहेली का हल दी गई चौखट में लिखवाएँ । विद्यार्थियों के गुट बनाकर अन्य पहेलियाँ कहने और बूझने की कृति कक्षा में कराएँ ।

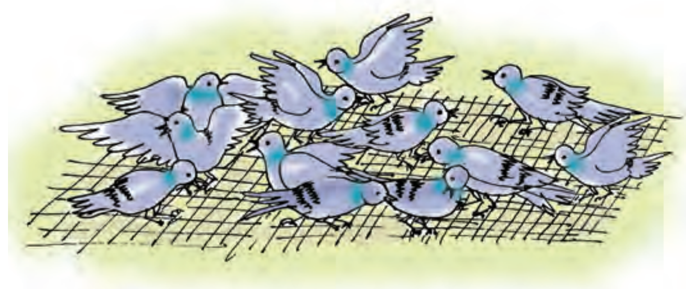
८. एकता

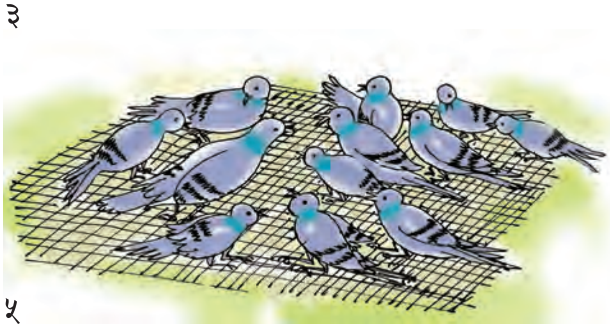
• चित्रवर्णन – पढ़ो, समझो और लिखो :

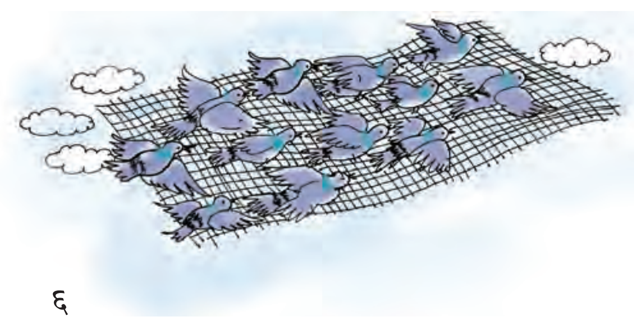

१


२

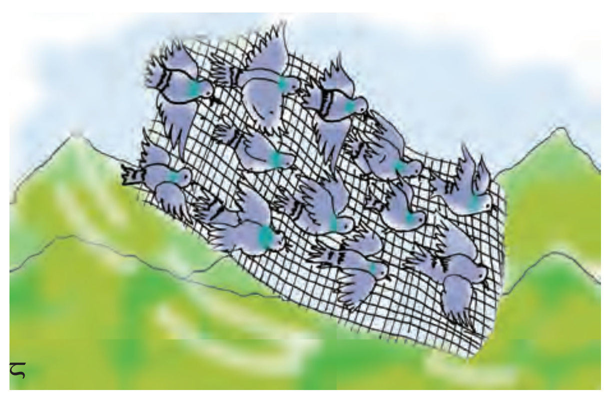

३


४


५


६


७


८

९


१०

❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ । जाल किसने काटा होगा, सोचकर खाली जगह पर चित्र बनवाएँ । चित्रवाचन के आधार पर कहानी लिखवाएँ । एकता के बल पर संकट दूर किया जा सकता है, समझाएँ । इसी प्रकार की अन्य चित्रकथा के लेखन का अभ्यास कराएँ ।

● पत्र – पढ़ो, समझो और लिखो :



९. पिता का पत्र, पुत्री के नाम

प्रिय इंदिरा,

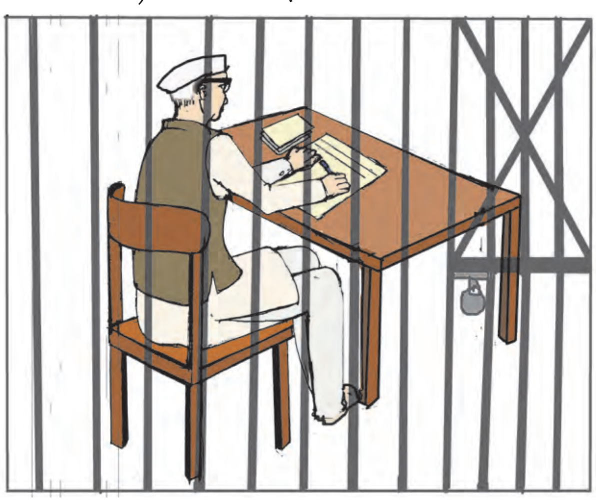
जन्मदिन पर तुम्हें कई उपहार मिलते रहे हैं । शुभकामनाएँ भी दी जाती हैं पर मैं इस जेल में बैठा तुम्हें क्या उपहार भेज सकता हूँ ? हाँ, मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी ।

आज-कल बापूजी ने भारतवासियों के दुखों को दूर करने के लिए आंदोलन छेड़ा है । मैं और तुम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि यह महान आंदोलन हमारी आँखों के सामने हो रहा है और हम भी इसमें कुछ भाग ले रहे हैं ।

अब सोचना यह है कि इस महान आंदोलन में हमारा कर्तव्य क्या है, इसमें हम किस तरह भाग लें, यह निश्चय करना कोई सरल कार्य नहीं है । जब भी तुम्हें ऐसा संदेह हो तो ठीक बात का निश्चय करने के लिए मैं तुम्हें एक छोटा-सा उपाय बताता हूँ । तुम कोई भी ऐसा काम न करना, जिसे दूसरों से छिपाने की आवश्यकता पड़े । बहादुर बनो, सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा ।

तुम्हें यह तो मालूम ही है कि बापूजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता का जो आंदोलन चलाया जा रहा है उसमें छिपाकर रखने जैसी कोई बात नहीं है । हम तो सभी काम दिन के उजाले में करते हैं । भारत की सेवा के लिए बहादुर सिपाही बनो, यही मेरी शुभकामना है ।

अच्छा बेटी, अब विदा !



तुम्हारा पिता,
जवाहरलाल नेहरू

❑ पत्र का अनुवाचन करवाएँ । विद्यार्थियों को एक-दूसरे से पाठ्यांश का श्रुतलेखन करने के लिए कहें । पोस्टकार्ड पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहित करें । महान व्यक्तियों के लिखे हुए पत्र विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाकर पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।



स्वाध्याय

१. 'श्याम की माँ ' (श्यामची आई) पुस्तक से कोई कहानी सुनो ।

२. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर बताओ :

तोता, सेब, लड़की, पाठशाला, रबड़, रुपये, जोकर, आँख, घर, कपड़ा, पेन्सिल ।

३. पढ़ो और समझो :

डोर, ढोर, डफली, लड़की, ढोलक, अनपढ़, ढाल, डाल, कड़ाही, कढ़ाई, कढ़ी, कड़ी ।

४. उत्तर लिखो :

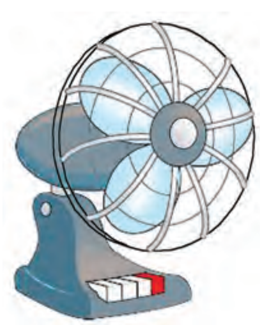
(क) नेहरू जी ने कहाँ से पत्र लिखा ?

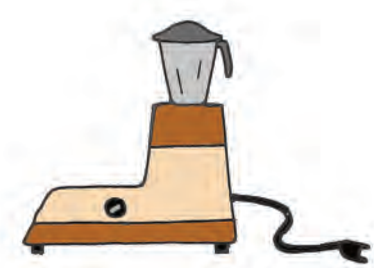
(ख) बापूजी ने किसलिए आंदोलन छेड़ा है ?

(ग) नेहरू जी ने इंदिरा को कौन-सा उपाय बताया ?

(घ) जवाहरलाल नेहरू जी ने क्या शुभकामना दी ?

५. चित्रों को पहचानकर नाम बताओ :













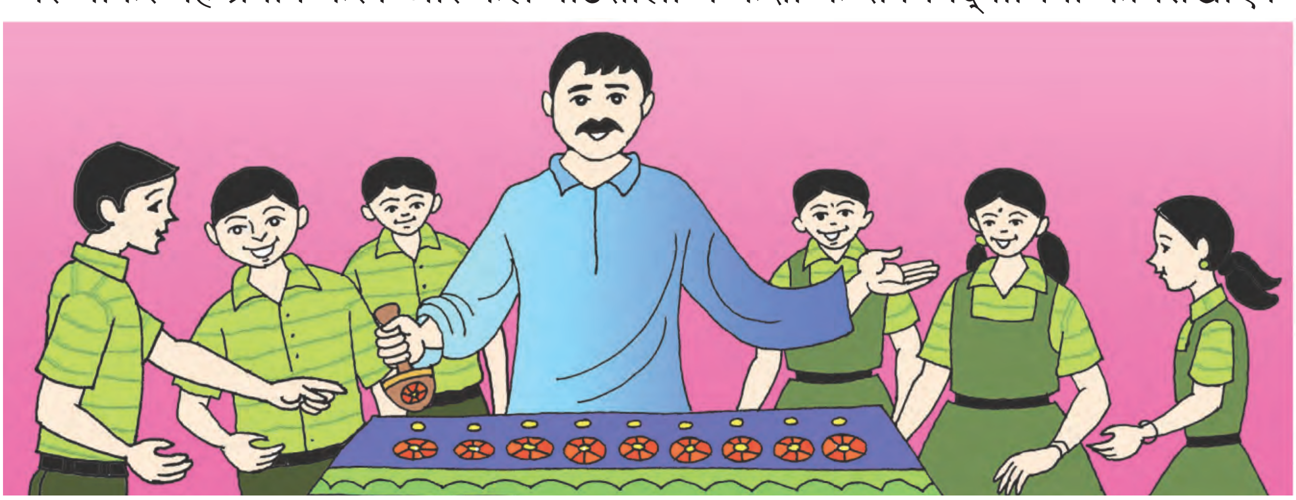
६. तुम्हारे द्‌वारा बनाए गए घरौंदे को किसी ने तोड़ दिया तो तुम क्या करोगे ?

● व्यावहारिक सृजन – देखो, समझो और लिखो :

१०. आओ कुछ सीखें

पिछले सप्ताह कौशल्या ने बताया था कि उसके मामा श्रीनाथ जी ठप्पों से कपड़ों पर छपाई करते हैं । फिर क्या था ! उपेंद्र, ज्ञानेश, आर्या, श्वेता, उर्वशी सभी कौशल्या को साथ लेकर मामा श्रीनाथ जी के घर पहुँच गए । वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि मामाजी के हाथ में एक ठप्पा है । वे कपड़े पर ठप-ठप ठप्पा लगाते जा रहे हैं और सुंदर छाप कपड़े पर बनती जा रही है । सभी बच्चों ने उन्हें नमस्ते कहा । उपेंद्र ने पूछा, 'मामा जी आप इतनी सुंदर छाप कैसे बनाते हैं ?' मामा जी ने कहा, "बहुत आसान है । तुम खुद भी छाप बना सकते हो ।" फिर मामा जी ने अपने खेत से कुछ भिंडियाँ और घर से कुछ कोरे कागज मँगवाए । भिंडियों के दो-दो टुकड़े और एक-एक कागज देकर बोले, "तुम सब भिंडी के टुकड़े हाथ में लेकर रंग में धीरे से डुबाओ फिर अपने कागज पर धीरे-से ठप्पा लगाओ ।" बच्चों ने वैसा ही किया । अरे यह क्या ? सुंदर-सी छाप कागज पर पड़ गई । बच्चों ने बार-बार वैसा किया और सुंदर-सुंदर छाप बनती गई । मामा जी बोले, "इसी तरह अपनी कॉपी में समान अंतर पर रेखाएँ खींचकर उनके बीच रंगीन ठप्पा लगाते हुए साड़ी की सुंदर किनारी तैयार कर सकते हो । यही नहीं, तुम आलू के दो टुकड़ों पर उल्टे अक्षरों के ठप्पे बनाकर उन्हें रंग में डुबोकर अपनी कॉपी पर लगाओगे तो वर्णों की सुंदर छाप बनती जाएगी ।"

बच्चों को बड़ा संतोष था कि आज वे कुछ नया सीखे । उन्होंने तय किया कि वे सब घर जाकर यह प्रयोग करेंगे और कल पाठशाला में कक्षा के शेष विद्यार्थियों को सिखाएँगे ।



❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर, मौन वाचन कराएँ । ठप्पों द्‌वारा कागज पर साड़ी की किनारी बनाने के लिए प्रेरित करें । ठप्पा लगाने की प्रक्रिया समझाएँ । किन-किन चीजों के ठप्पे बन सकते हैं, चर्चा करें और बताएँ ।



स्वाध्याय

१. अंकुरित अनाज से सूखी भेल बनाने की विधि सुनाओ ।

२. तुम भोजन में क्या-क्या खाते हो, बताओ ।

३. सूचना, अनुरोध, आदेश के वाक्य पढ़ो और समझो :

(क) फूल-पत्तियों को हाथ लगाना मना है ।

(ख) सड़क पार करते समय अपने दाएँ-बाएँ देखकर चलें ।

(ग) संदीप ! पंखे का बटन बंद करो ।

(घ) पुस्तकालय में कृपया शांति बनाए रखें ।

४. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर सही वाक्य लिखो :

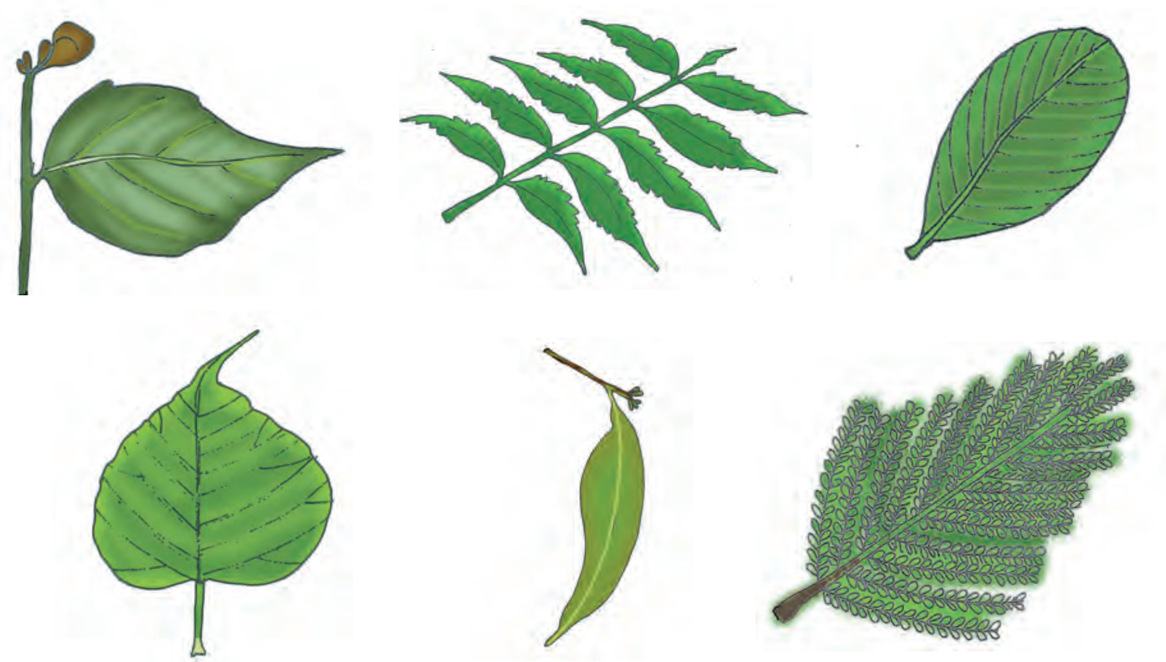
(च) मामा जी के ...... में एक ठप्पा है । (पास/हाथ)

(छ) वे कपड़े पर ठप-ठप ...... लगाते जा रहे हैं । (ठप्पा/छाप)

(ज) तुम खुद भी ...... बना सकते हो । (ठप्पा/छाप)

(झ) मामा जी ने कहा, "बहुत ...... है ।" (आसान/कठिन)

५. चित्र पहचानो और नाम बताओ । इस प्रकार के पत्ते अपनी कॉपी में चिपकाओ :



६. तुम कहीं जा रहे हो । तुम देखते हो कि तुम्हारे मित्र/ सहेली की दादी जी दोनों हाथों में भारी थैला उठाए उसी रास्ते से जा रही हैं । इस स्थिति में तुम क्या करोगे, बताओ ।

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ बिंदुओं पर १ से १०० तक के अंक लिखकर मिलाओ :





✻ पुनरावर्तन ✻

१. अ से ऑ तक के वर्ण सुनो ।

२. अपने पड़ोसियों का परिचय विस्तार से दो ।

३. जातक कथाएँ पढ़ो ।

४. संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द सुधार कर लिखो :

आर्दश, प्रथ्वी, वाषिक, ग्रहर्काय, मुकत, विदया, पयाज, रफतार, स्याम, लक्षमण, कुता ।

५. अक्षर समूह में से महान महिलाओं के नाम बताओ और लिखो :

मा	र	वी	ता	जी	ई	बा	जा	
ल	नी	रा	ई	बा	क्ष्मी			
ल्या	हि	अ	हो	ई	बा	र	क	ल
धा	न्ना	प	य					
बा	नं	दी	आ	शी	जो	ई		

उपक्रम

- अपने बारे में भाई/बहन से सुनो ।
- अपने मित्र/सहेली की अच्छी आदतें बताओ ।
- पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ो ।
- खट्टे पदार्थों की सूची बनाओ ।

• चित्रवाचन – देखो, बताओ और कृति करो :

१. डाकघर और बैंक



❑ विद्यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण करवाकर चर्चा कराएँ एवं उनको प्रश्न पूछने के लिए कहें । उन्हें डाकघर में जाकर टिकट खरीदने तथा बैंक में बड़ों की सहायता से बाल-बचत-खाता खोलने के लिए प्रेरित करें । इससे संबंधित उनका अपना अनुभव पूछें ।

चौथी इकाई



❑ चित्रों में दिए गए वाक्यों पर चर्चा करवाएँ । इसी प्रकार के अन्य वाक्य सुनाएँ और कहलवाएँ । अन्य सार्वजनिक स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त करने, सूचनाएँ पढ़कर बताने के लिए कहें । परिचित डाकिये, बैंक कर्मचारी से बातचीत करने हेतु सूचना दें ।

● **वाचन – पढ़ो और गाओ :**

२. ध्वज फहराएँगे





हम नन्हे-नन्हे बच्चे हैं,
नादान, उमर के कच्चे हैं,
पर अपनी धुन के सच्चे हैं,
जननी की जय-जय गाएँगे,
भारत का ध्वज फहराएँगे ।

अपना पथ कभी न छोड़ेंगे,
अपना प्रण कभी न तोड़ेंगे,
हिम्मत से नाता जोड़ेंगे,
हम हिमगिरि पर चढ़ जाएँगे,
भारत का ध्वज फहराएँगे ।

हम भय से कभी न डोलेंगे,
अपनी ताकत को तोलेंगे,
साहस की बोली बोलेंगे
पग आगे सदा बढ़ाएँगे,
भारत का ध्वज फहराएँगे ।

– सोहनलाल द्विवेदी

❑ उचित हाव-भाव से कविता का पाठ करें और विद्यार्थियों से कई बार सस्वर पाठ करवाएँ । उचित लय-ताल में सामूहिक गुट, एकल पाठ करवाएँ । उनसे छोटे-छोटे प्रश्न पूछें और उत्तर प्राप्त करें । देशभक्ति की अन्य कविताएँ पढ़ने के लिए कहें ।

स्वाध्याय हेतु अध्यापन संकेत – प्रत्येक इकाई के स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' प्रश्नों के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ । यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी स्वाध्याय नियमित रूप से कर रहे हैं । विद्यार्थियों के स्वाध्याय का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी करते रहें ।



स्वाध्याय

१. सीडी/डीवीडी पर देशभक्ति गीत/लोकगीत सुनो ।

२. राष्ट्रध्वज से संबंधित दिए गए शब्दों के आधार पर दो-दो वाक्य बोलो :

(क) केसरी (ख) सफेद (ग) हरा (घ) अशोक चक्र

३. किसी स्वतंत्रता सेनानी से संबंधित घटना पढ़ो ।

४. अपने गाँव/शहर के बारे में पाँच वाक्य लिखो ।

५. राष्ट्रीय त्योहार पर तुम क्या-क्या करते हो, बताओ :













६. पाठशाला के मैदान पर तुम्हें २० रुपये का नोट पड़ा मिला तो तुम क्या करोगे ?

● श्रवण - सुनो और बोलो :



३. परिश्रम का फल



एक बार किसी महापुरुष के पास एक युवक आया और बोला, "आप मेरी सहायता कीजिए, मैं बहुत परेशान हूँ । मेरे पास इस समय फूटी कौड़ी भी नहीं है ।" महापुरुष ने उसकी परेशानी सुनने के बाद कहा, "मेरा एक दोस्त व्यापारी है, वह इनसानी आँखों को खरीदता है । तुम्हारी आँखों के बीस हजार तो दे ही देगा ।" "जी नहीं, मैं अपनी आँखें नहीं बेच सकता ।" युवक घबराकर बोला ।



महापुरुष ने एक बार और प्रयास किया, "वह हाथों को भी खरीदता है, तुम्हारे हाथों की कीमत पंद्रह हजार रुपये दे देगा ।" युवक ने घबराकर इनकार में सिर हिलाया और बोला,"मुझे आपसे यह उम्मीद नहीं थी ।" महापुरुष उसकी नाराजगी से विचलित हुए बिना बोले, "मुझे तुम्हारी परेशानी का एहसास है । इसलिए मैं कहता हूँ तुम्हारे लिए इस तरह का सौदा बहुत अच्छा रहेगा । अगर तुम्हें मालदार बनना है तो एक लाख रुपये लेकर पूरा शरीर बेच दो । परेशानियों से हमेशा के लिए मुक्ति मिल जाएगी ।" युवक चीखकर बोला, "एक लाख तो क्या मैं एक करोड़ में भी अपना शरीर नहीं बेचूँगा ।"

इसपर महापुरुष ने मुसकुराकर कहा, "जो व्यक्ति अपना शरीर एक करोड़ में भी नहीं बेच सकता, वह कैसे कह रहा है कि उसके पास कुछ भी नहीं है । यह पूरा शरीर एक खजाना है । ईमानदारी से मेहनत करो, सोना-चाँदी तो क्या सूरज-चाँद भी तुम्हारे हाथ में आ सकते हैं ।" अब युवक उनके मंतव्य को समझ गया और बोला, " मैं आपका बेहद आभारी हूँ। आपने मेरी आँखें खोल दीं ।"



❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ मुखर वाचन करें और करवाएँ । शरीर के बाह्य अंग, उनके कार्य और महत्व पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थी घर में क्या-क्या काम करते हैं, उनसे पूछें । 'आलस्य हमारा शत्रु है', इसपर चर्चा कराएँ । अन्य कहानियाँ पढ़वाएँ ।



स्वाध्याय

१. राजा-रानी की कोई कहानी सुनाओ ।

२. उत्तर दो :

(क) महापुरुष के पास आकर युवक क्या बोला ?

(ख) महापुरुष ने युवक की आँखों की कितनी कीमत बताई ?

(ग) महापुरुष ने मुसकुराकर क्या कहा ?

(घ) महापुरुष का मंतव्य समझकर युवक क्या बोला ?

३. किसी संत की जीवनी पढ़ो ।

४. किसने-किससे कहा, लिखो :

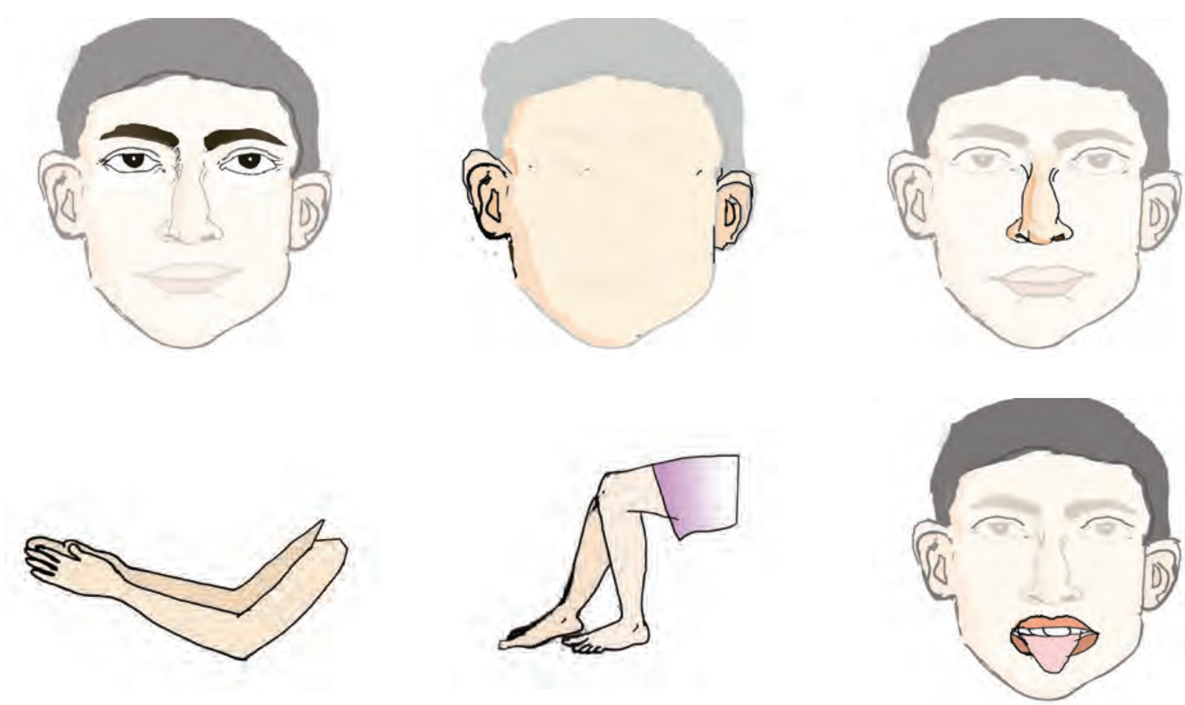
(च) "आप मेरी सहायता कीजिए ।"

(छ) "मेरा एक दोस्त व्यापारी है ।"

(ज) "मुझे आपसे यह उम्मीद नहीं थी ।"

(झ) "ईमानदारी से मेहनत करो ।"

५. चित्रों को पहचानो और उनका महत्व बताओ :



६. तुमने दूसरों की सहायता कब और कैसे की, इसकी सूची बनाओ ।

● **वाचन – पढ़ो, समझो और लिखो :**





४. बालिका दिवस

(सब बच्चे दूर्वा के घर खेलने के लिए एकत्रित हुए हैं । वहाँ चाची जी और बड़े भैया भी हैं ।)

दूर्वा – सृष्टि, आज तो तुम बहुत तैयार होकर आई हो ।

सृष्टि – आज तीन जनवरी बालिका दिवस है ना !

प्राची – अरे हाँ ! कल बहन जी ने बताया था कि सावित्रीबाई फुले का जन्मदिन 'बालिका दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

चाची जी – सावित्रीबाई फुले महाराष्ट्र की प्रथम शिक्षिका मानी जाती हैं । अपने पति महात्मा जोतीबा फुले के साथ मिलकर उन्होंने लड़कियों के लिए पहली पाठशाला पुणे में शुरू की थी ।

ईशान – आजकल तो लगभग सभी लड़कियाँ पाठशाला जाती हैं । पढ़ाई-लिखाई के सभी क्षेत्रों में खूब आगे हैं ।

मंत्र – हाँ, आज समाजसेवा, शिक्षा, विज्ञान, संगीत, प्रशासन, शोधकार्य, खेलकूद आदि हर क्षेत्र में लड़कियाँ आगे बढ़ रही हैं ।

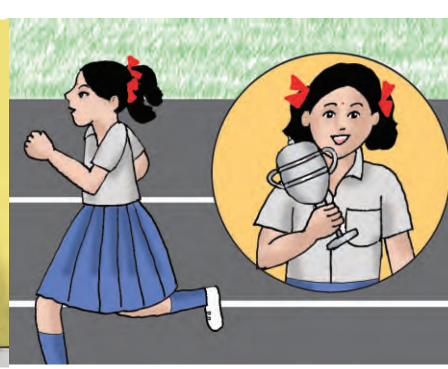
सृष्टि – मेरी माँ बताती हैं कि शिक्षा हमें स्वावलंबी और सजग बनाती है ।

भैया – कहते हैं, एक लड़की शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है ।

प्राची – हाँ ! इसलिए हम सबको खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए ।

सभी – खूब पढ़ेंगे-खूब बढ़ेंगे ।







❑ उचित आरोह-अवरोह, उच्चारण के साथ पाठ का वाचन करें । विद्यार्थियों से अनुवाचन कराएँ । मुखर और मौन वाचन हेतु प्रेरित करें । 'बहन' के महत्व पर चर्चा कराएँ । विद्यार्थी अपनी बहन के लिए क्या-क्या कर सकते हैं, उनसे लिखवाएँ ।



स्वाध्याय

१. **देखी हुई कोई घटना/प्रसंग सुनाओ ।**

२. **पाठशाला में 'बालदिवस' कैसे मनाया गया, बताओ ।**

३. **तेनालीराम की कहानियाँ पढ़ो ।**

४. **उत्तर लिखो :**

(क) तीन जनवरी को कौन-सा दिवस है ?

(ख) महाराष्ट्र की प्रथम शिक्षिका कौन मानी जाती हैं ?

(ग) शिक्षा हमें क्या बनाती है ?

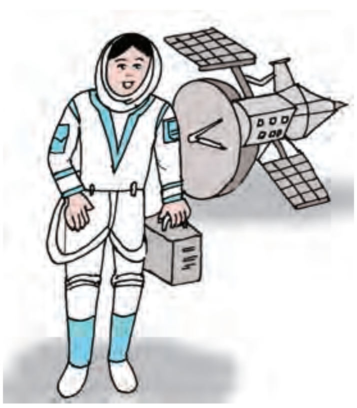
(घ) एक लड़की शिक्षित होती है तो कौन शिक्षित होता है ?

५. **महिला क्या-क्या कर सकती है, बताओ :**













६. **तुम घर के कौन-कौन-से काम करते हो, बताओ ।**

● पंचमाक्षर – सुलेखन करो :

५. पर्यटन

तिथि.......   विषय – हिंदी   कक्षा – तीसरी

घटक – पर्यटन

: सैर संबंधी सूचनाएँ :

कब आना है ?



क्या-क्या लेकर आना है ?

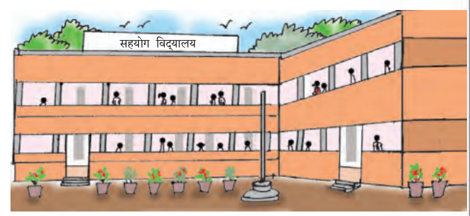
पानी की बोतल, थोड़ा-सा नाश्ता, बड़ा रूमाल, कॉपी-पेन्सिल, टोपी, खेल की सामग्री लाना है ।

क्या-क्या नहीं लाना है ?

कीमती वस्तुएँ, मोबाइल, चाबी, बैटरी नहीं लाना है ।



कहाँ आना है ?



कैसे आना है ?

स्वच्छ कपड़े, चप्पल या जूते पहनकर, अपना-अपना परिचयपत्र लेकर आना है ।

❑ विद्यार्थियों से पाठ्यांश का अनुवाचन और मुखर वाचन करवाएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को मौन वाचन करने का अवसर दें । सैर का अपना पूर्वानुभव सुनाने के लिए कहें । ऊपर दी गई सूचनाओं के आधार पर 'पर्यटन' के बारे में दस वाक्य लिखने हेतु प्रेरित करें ।







तीसरी कक्षा के विद्‌यार्थियों का दर्शनीय स्थल के भ्रमण का कार्यक्रम बना । कक्षा शिक्षिका अंकिता बहन जी ने सभी बच्चों को इकट्‌ठा किया और श्यामपट्‌ट की सूचना पढ़ने के लिए कहा ।

शिक्षिका ने उपस्थिति के अनुसार सबके नाम उपस्थिति पंजिका में लिखे ।

पंकज, शंखेश, गंगा, संघमित्रा, कंचन, कांछी, गुंजन, जुंझन, चिंटू, नीलकंठ, पांडुरंग, पंढरी, कुंतल, मंथन, चंदन, संध्या, चंपा, गुंफी, अंबा, और रंभा ।

अंत में शिक्षिका ने विद्‌यार्थियों को समय पर आने की सूचना दी ।

सभी बच्चे मन में सैर का उत्साह लिए अपने-अपने घर की ओर चल पड़े ।



❑ क,च,ट,त,प वर्ग के पंचमाक्षर ङ,ञ,ण,न,म हैं । ये अपने ही वर्ग के शेष चार वर्णों में से किसी भी वर्ण से मिले तो अनुस्वार उसके पहले वाले वर्ण पर लगता है । उदा.- शंख (शङ्ख), 'क' वर्ग का पंचमाक्षर 'ङ' वर्ण 'ख' से मिले तो अनुस्वार पहले वर्ण 'श' पर लगता है । पंचमाक्षरयुक्त शब्दों का सामूहिक अनुकरण एवं मुखर वाचन करवाएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को मौन वाचन करने का अवसर दें । उनसे पंचमाक्षर के प्रयोग पर चर्चा करें एवं समझाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए हुए पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें और उनका लेखन करवाएँ ।

● भाषा प्रयोग – पढ़ो, समझो और लिखो :

६. जोकर



१. जोकर की हरकतें देखकर
लोग दंग रह गए ।



२. जोकर बड़ी-बड़ी बातें
करके हवा में उड़ता है ।



३. जोकर ने जोरदार ठहाका लगाया ।



४. बच्चों को खुश देखकर जोकर
ओंठ फैलाकर रह गया ।



५. उचित प्रतिसाद न मिलने पर जोकर
मन मसोसकर रह गया ।



६. मन के भाव छिपाकर जोकर
को दाँत दिखाने ही पड़ते हैं ।

❑ पाठ में आए मुहावरों, कहावतों पर चर्चा कराएँ । अर्थ बताते हुए मुहावरों, कहावतों का वाक्य में प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें । ऊपर आए मुहावरों, कहावतों को लिखवाएँ । जोकर के बारे में विद्यार्थियों से अपना अनुभव सुनाने के लिए कहें ।

७. सरकस में कलाकारों के करतब देखकर
जोकर हक्का-बक्का रह गया ।





८. तालियों ने जोकर का मन मोह लिया ।



९. कुछ बच्चों की शरारतों पर
जोकर उन्हें आँखें दिखा रहा था ।



१०. खेल समाप्त हो जाने पर जोकर
आँखें मटका रहा था ।



११. जोकर जहाँ भी जाता है, वहाँ के रंग में रँग जाता है,
अर्थात 'गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास ।'



१२. गाना तो आता नहीं और जोकर कहता है
गला खराब है, यह तो ऐसा ही हुआ,
'नाच न जाने, आँगन टेढ़ा ।'

❑ विद्यार्थियों से कृतियुक्त मुहावरे, कहावतों के अनुसार अभिनय कराएँ। इनका वाक्यों में प्रयोग करवाएँ। घर-परिसर में सुने मुहावरों, कहावतों की सूची बनवाएँ । विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक में आए हुए मुहावरों, कहावतों का संग्रह करने हेतु प्रोत्साहित करें ।

● **आकलन – समझो और बताओ :**

७. क्या तुम जानते हो ?

१. हमारा राष्ट्रीय पशु .... है । (अ) बाघ (ब) शेकरू

२. हमारा राष्ट्रीय पक्षी .... है । (अ) हरियाल (ब) मोर

३. हमारे राष्ट्रीय फूल का नाम .... है ।

४. हमारे राज्य के फूल का नाम .... है । (अ) कमल (ब) जारूळ

५. हिंदी दिवस .... को मनाया जाता है ।

६. मराठी भाषा दिन .... को मनाया जाता है । (अ) १४ सितंबर (ब) २७ फरवरी

७. हमारा राष्ट्रीय खेल .... है ।

८. हमारे प्रदेश का खेल .... है । (अ) हॉकी (ब) कबड्डी

९. राष्ट्रगीत .... ने लिखा है ।

१०. सारे जहाँ से अच्छा .... ने लिखा है । (अ) रवींद्रनाथ ठाकुर (ब) इकबाल



❑ उपरोक्त वाक्यों का वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । उनसे चर्चा कराके उत्तर प्राप्त करें । महाराष्ट्र की महत्वपूर्ण जानकारी कहलवाएँ । सामान्य ज्ञान बढ़ाने हेतु अन्य प्रश्न पूछें । सामान्य ज्ञान की पुस्तक पढ़ने हेतु प्रेरित करें ।

● परिसर अभ्यास – पढ़ो, समझो और कृति करो :

८. पर्यावरण बचाओ





जल के बिना जिंदगी,
कैसे चल पाएगी, बोलो
नदियों में कचरा मत डालो,
जहर न इनमें घोलो,
कहर न इनपे ढाओ साथी !
पर्यावरण बचाओ ! पर्यावरण बचाओ साथी !





पेड़ हमारे जीवनसाथी,
पेड़ हमारे जीवनदाता,
पेड़ों से है इनसानों का
साँस-साँस का नाता;
इन्हें न तुम कटवाओ साथी ।
पर्यावरण बचाओ ! पर्यावरण बचाओ साथी ।



गैसें घोल-घोलकर तुमने
कर दी हवा विषैली,
आसमान की उजली चादर
अब है मैली-मैली,
अरे होश में आओ साथी ।
पर्यावरण बचाओ ! पर्यावरण बचाओ साथी ।



–अशोक अंजुम

❑ उचित हाव-भाव के साथ कविता का वाचन करें । विद्यार्थियों से साभिनय कविता-पाठ करवाएँ । जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण पर चर्चा कराएँ । पौधे लगाने एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जागृत करें । विद्यालय के वृक्षारोपण के बारे में बोलने के लिए प्रेरित करें ।

● निबंध – पढ़ो, समझो और लिखो :





९. चाचा चौधरी



काल्पनिक भारतीय महानायकों में चाचा चौधरी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है । वे जासूस हैं । चाचा चौधरी के जन्मदाता व्यंग्यकार 'प्राण' हैं । १९७१ में पहली बार एक बाल पत्रिका द्‌वारा बच्चों का उनसे परिचय हुआ ।

चाचा चौधरी मध्यवर्गीय हैं । वे शर्ट पर टाई लगाते हैं । सिर पर लाल पगड़ी बाँधते हैं । जेब में घड़ी होती है और हाथ में छड़ी । वे बहुत तीव्र बुद्‌धि के हैं । कंप्यूटर से भी तेज दिमाग है उनका ! उन्होंने अपराध के अनेक मामले सुलझाए हैं । चोर, उचक्के उनसे दूर रहने में ही भलाई समझते हैं । साबू, ताऊ जी, चाची, डैग-डैग ट्रक, पिंकी, रमन, बल्लू, रॉकेट उनके मित्र एवं राका और अन्य सभी अपराधी उनके शत्रु हैं ।

बन्नी चाची ऊपरी तौर पर कठोर हैं । नारियल की भाँति भीतर से उनका हृदय कोमल है । उनके भाई का नाम तरबूजीदास है । छज्जू चौधरी, चाचा का जुड़वा भाई है । दोनों में बहुत साम्य है । लोगों को प्रायः धोखा हो जाता है कि कौन चाचा है, कौन छज्जू ? ताऊ जी जादू की छड़ी से बुराइयों को खत्म करते हैं । साबू गुंडों की जमकर मरम्मत करता है । टिंगू मास्टर छोटे कद का है । डैग-डैग आधा इनसान और आधी मशीन है ।

चाचा चौधरी के पालतू कुत्ते का नाम रॉकेट है । वह अपना काम मन लगाकर करता है । चाचा चौधरी का सबसे बड़ा शत्रु राका है जो पहले डाकू था । उनका एक और शत्रु गोबर सिंह भी डाकू है । चाचा चौधरी के अनेक शत्रु कई बार उनके हाथों मात खा चुके हैं । अपराधी हमेशा उनके नाम से थर्राते हैं ।

– बानो सरताज





❑ इस निबंध का वाचन करवाएँ । विद्‌यार्थियों को मौन वाचन के लिए दस मिनिट का समय देकर, निबंध के पात्रों के नाम पूछें । कारटून जगत से संबंधित अन्य पात्रों के नाम कहलवाएँ । विद्‌यार्थियों से उनकी पसंद के कारटूनों के चित्र बनाने के लिए कहें ।



स्वाध्याय

१. **मोगली की कहानी सुनो ।**

२. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर बताओ :**

नानी, बच्चा, चूहा, घोड़ी, अध्यापक, गुड़िया, बुआ, ऊँटनी, सियारिन, कुत्ता ।

३. **पढ़ो और समझो :**

शशि, सुभाष, स्पर्श, गणवेश, वेशभूषा, स्रोत, स्त्रोत, वृष्टि, शीर्षक, आशीष, कृष्णा, मार्गशीर्ष ।

४. **उत्तर लिखो :**

(क) चाचा चौधरी के जन्मदाता कौन हैं ?

(ख) चाचा चौधरी सिर पर क्या बाँधते हैं ?

(ग) बन्नी चाची का स्वभाव कैसा है ?

(घ) रॉकेट किसका नाम है ?

५. **चित्रों को पहचानकर उनके नाम बताओ :**









६. **तुम परीक्षा देने जा रहे हो । बिल्ली ने रास्ता काट दिया तो क्या करोगे ?**

१. घर वापस लौट जाओगे ।

२. बैठकर रोने लगोगे ।

३. बिना परवाह किए परीक्षा देने चले जाओगे ।

● **व्यावहारिक सृजन – पढ़ो, समझो और लिखो :**



१०. कब–बुलबुल



महाराष्ट्र राज्य में भारत स्काउट और गाइड्स की तरफ से पहली से चौथी कक्षा तक के लड़कों/लड़कियों के लिए क्रमशः कब/बुलबुल पथक की व्यवस्था की गई है । इन पथकों को अपनाने वाले विद्‌यार्थी को यथाशक्ति ईश्वर और देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने, कब/बुलबुल के नियम मानने तथा प्रतिदिन भलाई का एक कार्य करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है ।





कब/बुलबुल के विद्‌यार्थी बड़ों की आज्ञा मानते हैं तथा हमेशा स्वच्छ और विनम्र होते हैं । वे किसी प्रकार की अंधश्रद्‌धा को नहीं मानते हैं । ऐसे बच्चे बहुत ही अनुशासित एवं समय का पालन करने वाले होते हैं । कब और बुलबुल की अलग-अलग पोशाकें होती हैं । अपने गणवेश में लड़के-लड़कियाँ बहुत ही आकर्षक दिखाई पड़ते हैं । उनके चेहरे पर आत्मविश्वास झलकता रहता है ।

तुम भी कब/बुलबुल पथक के सदस्य बनकर पदक प्राप्त करो ।



❑ उचित उच्चारण के साथ पाठ का सामूहिक, गुट में, एकल मुखर वाचन कराएँ । कब/बुलबुल पथक की जानकारी दें । विद्‌यार्थियों के पथक बनाएँ । विभिन्न सांकेतिक चिह्नों पर चर्चा करें । ये चिह्न कहाँ-कहाँ देखे हैं, बताने के लिए कहें और सूची बनवाएँ ।



स्वाध्याय

१. अपने मित्र के जन्मदिन समारोह का वर्णन करो ।

२. तुम कौन-कौन-से त्योहार मनाते हो, बताओ ।

३. सुवचनों को पढ़ो और समझो :

(क) मक्खी, मच्छर भगाओ, रोग मिटाओ ।

(ख) विश्वास रखो, अंधविश्वास नहीं ।

(ग) बेईमानी ठुकराओ, ईमानदारी अपनाओ ।

(ङ) आलस्य सबसे बड़ा रोग है ।

४. शब्दों का उचित क्रम लगाकर वाक्यों को फिर से लिखो :

(च) पथक व्यवस्था है की कब/बुलबुल गई की ।

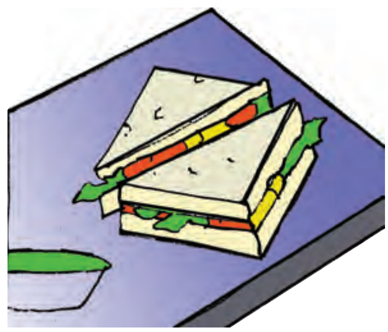
(छ) बड़ों आज्ञा की हैं मानते बुलबुल/कब विद्‌यार्थी के ।

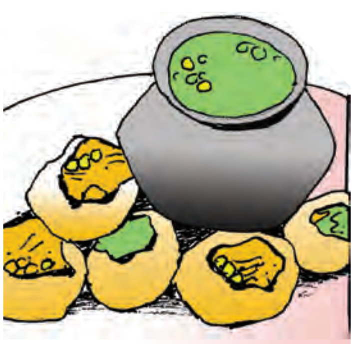
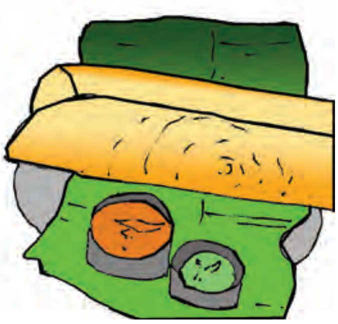
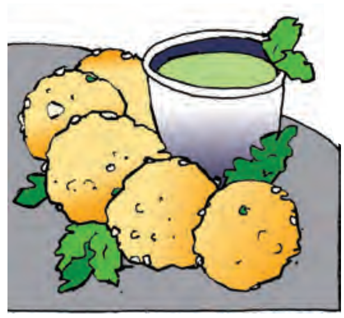
(ज) और सूची उनका निरीक्षण बनाओ करो ।

(झ) स्वच्छ हमेशा हैं और होते विनम्र ।

५. चित्रों को पहचानो और खाद्‌य पदार्थों के नाम बताओ :



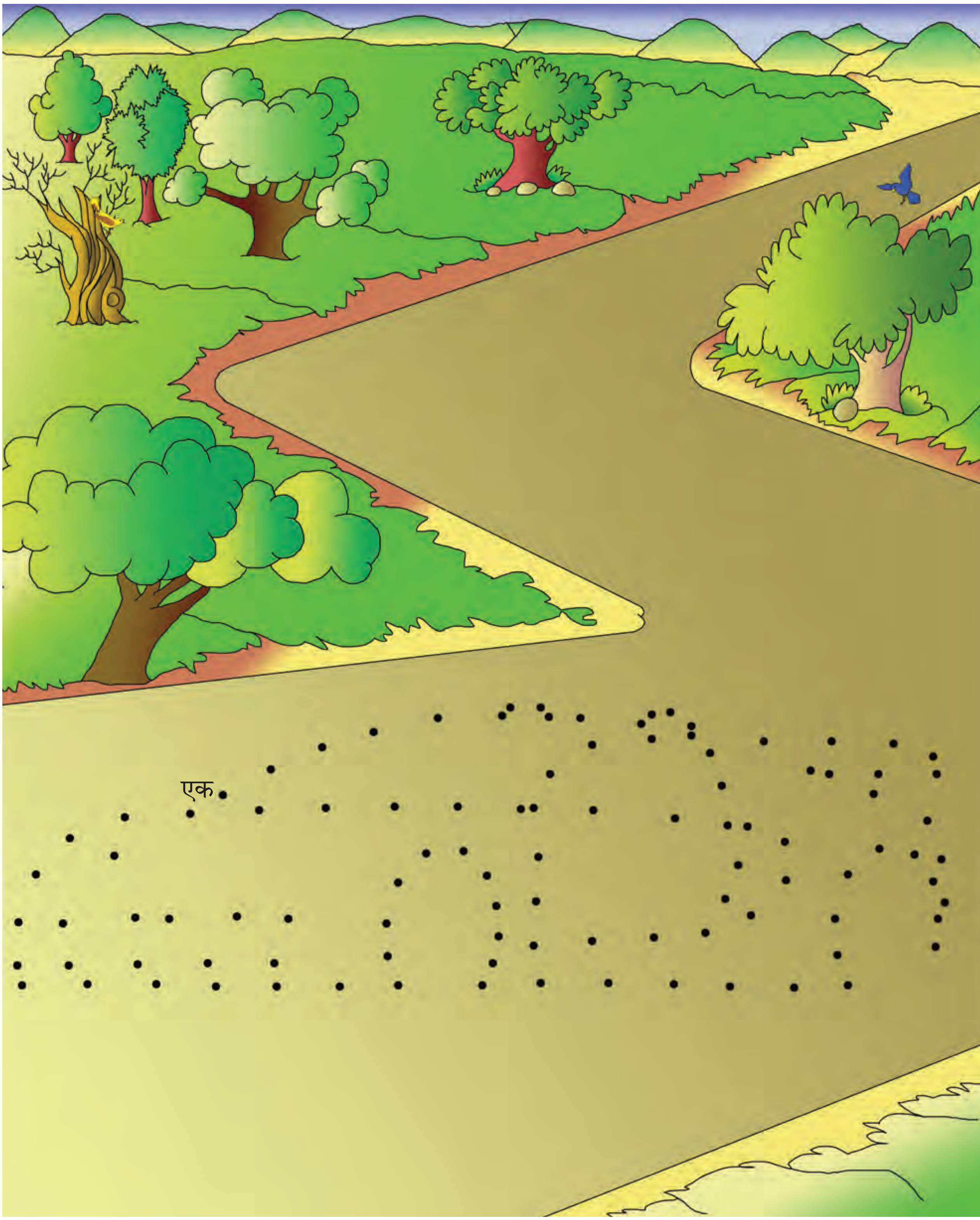


६. तुम किन-किन कार्यों में माँ की सहायता करते हो, बताओ ।

✻ पुनरावर्तन ✻

✻ बिंदुओं पर १ से १०० तक के अंकों को अक्षरों में लिखकर मिलाओ :





✻ पुनरावर्तन ✻

१. क से ज्ञ तक के वर्ण सुनो ।

२. अपने रिश्तेदारों का परिचय विस्तार से दो ।

३. ईसप की कहानियाँ पढ़ो ।

४. पंचमाक्षरयुक्त शब्द सुधारकर लिखो :

खभां, अण्डा, हिंदि, झँडा, शङ्ख, चचंल, इद्रधनुष, सतरां, मुम्बई, कघां, कान्ता, गँगा ।

५. अक्षर समूह में से वैज्ञानिकों के उचित नाम बताओ और लिखो :

मी	भा	हो	भा				
र्य	ट्ट	भ	आ				
स्क	रा	र्य	भा	चा			
जे.	क	म	ला	ए.	पी.		
ग	श	दी	चं	ब	सु	ज	द्र

उपक्रम

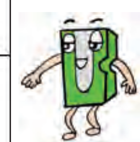
अपने बारे में शिक्षक से सुनो ।	छुट्टियों में तुम क्या-क्या करना चाहते हो, बताओ ।	कोई बाल-पत्रिका पढ़ो ।	खाद्य पदार्थों की सूची बनाओ ।

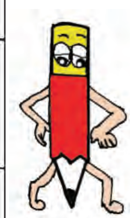


✻ पहेली ✻



१			२		३			४
			६		५	६		
७	८			९				
१०		११		१२	१३			
		१४						
१५	१६			१७		१८		
१९			२०		२१			
					२२			
२३							२४	







बाएँ से दाएँ : १. कान में कही जाने वाली बात, ५. ताप की मात्रा, ७. गीत, १०. निर्माण, १२. बचा हुआ, १४. एक रंग, १५. विश्राम, १८. दोष दूर करना, १९. दंड, २०. स्वाधीनता, २२. वाणी, २३. अच्छा चालचलन, २४. एक बहुमूल्य धातु ।

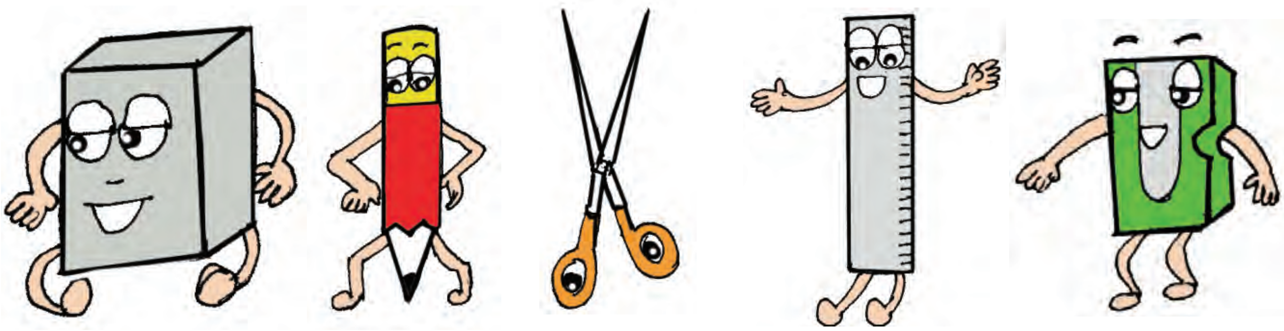
ऊपर से नीचे : १. कैदखाना, २. तीक्ष्ण, ३. बेटी, ४. ध्यान से सुनना, ६. दूसरे का, ८. नृत्य, ९. प्रभाव, ११. असफल, १३. कौआ, १५. अगल-बगल, १६. अधिपति, १७. वाद्य, २०. आकृति, २१. दीपों का त्योहार ।

* शब्दार्थ *



पहली इकाई

१. खेल : अंतर्गृही= चार दीवारों के अंदर ।
२. नानी जी का गाँव : सघन= घनी; अद्‌भुत= अनोखी; खुशबू= सुगंध ।
३. गौरैया : मेरी सहेली : पारा चढ़ना= गुस्सा होना; नाहक= बिना कारण ।
४. मुंबई-छोटा भारत : उद्‌यान= बगीचा; चुगाना= खिलाना ।
९. मैं तितली हूँ : मँड़राना= चक्कर लगाना; चकत्ते= दाग ।
१०. सप्ताह का अंतिम दिन : अभिनय= नकल करना; बला= आफत ।

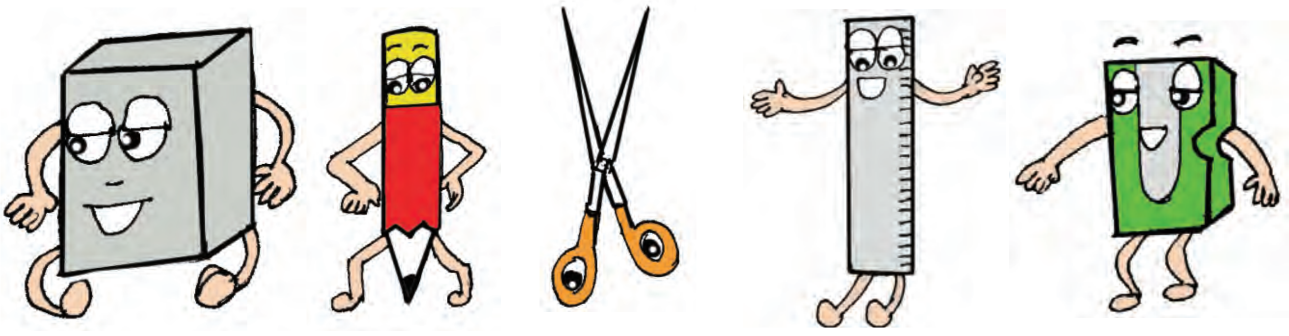


दूसरी इकाई

१. किला और गढ़ : धरोहर= विरासत; परकोटा= घेरा ।
२. अगर : संदूक= बक्सा, पेटी; दानव= दैत्य ।
३. जादू : मधुर= मीठा; गूँजना= ध्वनित हो ा; पाबंदी= प्रतिबंध, बंधन ।
४. धरती की सब संतान : तलाशना= खोजना; उपलब्ध= प्राप्त ।
५. तिल्लिसिं : खिल्ली= मजाक; चिबिल्ली= चंचल; गठिल्ली= गाँठवाली ।
१०. मीठे बोल : समृद्‌ध= संपन्न; परहित= परोपकार; सरिस= समान; धरम= धर्म ।

तीसरी इकाई

१. रेल स्थानक : पादचारी= पैदल चलने वाले; लावारिस= जिसका वारिस न हो ।
३. बच्चे को दूध मिला : दौड़ धूप= भागमभाग; निभाना= पूरा करना ।
५. अपनी प्रकृति : हर्ष= आनंद; टिमटिमाना= चमकना; तिलमिलाना= क्रोधित होना ।
१०. आओ कुछ सीखें : आसान= सरल; तय करना= निश्चय करना ।



चौथी इकाई

२. ध्वज फहराएँगे : नादान= नासमझ; धुन= लगन; पथ= रास्ता; प्रण= निश्चय ।
३. परिश्रम का फल : फूटी कौड़ी भी न होना= कुछ भी न होना; प्रयास= प्रयत्न; उम्मीद= आशा; विचलित= अस्थिर; एहसास= जानकारी; मंतव्य= तात्पर्य ।
५. बालिका दिवस : प्रशासन= नियमानुसार शासन ।
६. जोकर (मुहावरे/कहावतें) : रंग में रंग जाना= प्रभाव में आना;
हवा में उड़ना= घमंड होना; ठहाका लगाना= जोर से हँसना;
मन मसोसकर रहना= मन मारना; दाँत दिखाना= हँसना;
हक्के-बक्के रहना/दंग रह जाना= आश्चर्यचकित रह जाना;
मन मोह लेना= आकर्षित करना; आँखें दिखाना= धमकाना;
आँखें मटकाना= आँखें घुमाना;
गंगा गए गंगादास, जमना गए जमनादास= अवसरवादी;
नाच न जाने आँगन टेढ़ा= अपने दोष दूसरों पर थोपना ।
९. चाचा चौधरी : मोहताज= वंचित; मात खाना= हारना; थर्राना= काँपना ।
१०. कब-बुलबुल : यथाशक्ति= शक्ति के अनुसार ।

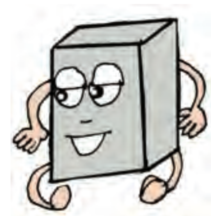
***

✻ स्वाध्याय के उत्तर ✻

पहली इकाई

पाठ २, स्वाध्याय-५, पृष्ठ क्र.५ : आम से बनने वाले पदार्थों के नाम ।

अमचूर, अचार, मुरब्बा, आमरस, अमावट, मैंगो आइसक्रीम ।



पाठ ३, स्वाध्याय-२, पृष्ठ क्र.७ : पक्षियों के नाम ।

कठफोड़वा, बुलबुल, बगुला, चील, शुतुरमुर्ग, उल्लू ।

पाठ ४, स्वाध्याय-४, पृष्ठ क्र.९ : पोशाकों के नाम ।

झबला, फ्रॉक, घाघरा-चुन्नी, शर्ट-पैंट, धोती-कुर्ता, जोधपुरी ।

पाठ ९, स्वाध्याय-९, पृष्ठ क्र.१७ : फूलों का उपयोग ।

फूलमाला, तोरण, फूलों की रंगोली, पुष्पगुच्छ, पानी पर रंगोली, फूलों से थाली की सजावट ।

पाठ १०, स्वाध्याय-१०, पृष्ठ क्र.१९ : अभिनय ।



मोर, घोड़ा, मेंढक, रोटी बेलो, बरतन माँजो, झाड़ू लगाओ ।

दूसरी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय-२, पृष्ठ क्र.२५ : कृतियाँ ।

हँसना, रोना, मुँह टेढ़ा करना, जीभ दिखाना, आँखें दिखाना, दाँत दिखाना ।

पाठ ३, स्वाध्याय-३, पृष्ठ क्र.२७ : वाद्यों के नाम ।

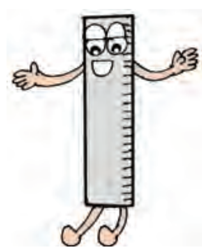
तबला, हार्मोनियम, बाँसुरी, मजीरा, सितार, ढोलक ।

पाठ ४, स्वाध्याय-४, पृष्ठ क्र.२९ : अनाज के नाम ।

बाजरा, गेंहूँ, ज्वार, चावल, अरहर, मकई ।

पाठ ९, स्वाध्याय-९, पृष्ठ क्र.३७ : बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया ।

बीज, अंकुर, पौधा, कलियाँ, फूल, फल ।



पाठ १०, स्वाध्याय-१०, पृष्ठ क्र.३९ : प्रकृति के रूप ।

बादल, चंद्रमा, पर्वत, पेड़, सूरज, वर्षा ।

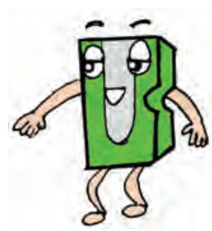
तीसरी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय-२, पृष्ठ क्र.४५ : घड़ी देखना ।

बारह, तीन, छह, सवापाँच, साढ़े आठ, पौने ग्यारह ।

पाठ ३, स्वाध्याय- ३, पृष्ठ क्र.४७ : जल के स्रोत ।

हैंडपंप, कुआँ, झरना, नदी, तालाब, समुद्र ।



पाठ ४, स्वाध्याय-४, पृष्ठ क्र.४९ : संदर्भ सामग्री ।

चित्रमाला, हस्तलिखित, वर्णकार्ड, वाक्यपट्टी, चार्ट, समाचारपत्र, पत्रिका, शब्दकोश ।

पाठ ९, स्वाध्याय-९, पृष्ठ क्र.५७ : विज्ञान के चमत्कार ।

पंखा, मिक्सर, टेलीविजन, मोबाइल, संगणक, उपग्रह ।

पाठ १०, स्वाध्याय-११, पृष्ठ क्र.५९ : पत्तों के नाम ।

हरसिंगार, नीम, सदाफुली, पीपल, नीलगिरि, गुलमोहर ।

चौथी इकाई

पाठ २, स्वाध्याय-२, पृष्ठ क्र.६५ : राष्ट्रीय त्योहार की कृतियाँ।

पताका, रंगोली, बोर्ड पर लिखना, गाना, प्रभात फेरी, भाषण ।

पाठ ३, स्वाध्याय-३, पृष्ठ क्र.६७ : शरीर के अंगों के नाम।

आँख, कान, नाक, हाथ, पैर, जीभ ।

पाठ ४, स्वाध्याय-४, पृष्ठ क्र.६९ : महिला सबलीकरण।

पेट्रोल भरती हुई, रेलवे ड्राइवर, बस कंडक्टर, अंतरिक्ष यात्री, न्यायाधीश, सैनिक ।

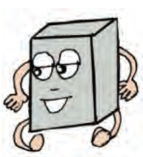
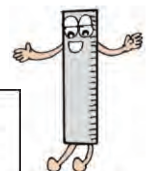
पाठ ९, स्वाध्याय-९, पृष्ठ क्र.७७ : कारटूनों के पात्रों के नाम।

टॉम एंड जेरी, डोरेमॉन, स्पाइडरमैन, मोटू-पतलू, छोटा भीम, मोगली ।

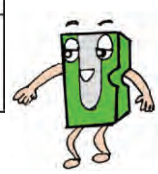
पाठ १०, स्वाध्याय-१०, पृष्ठ क्र.७९ : खाद्य पदार्थों के नाम।

ढोकला, चकली, सैंडविच, पानीपूरी, मसालाडोसा, साबूदाना वड़ा ।

✻ पहेली का उत्तर ✻

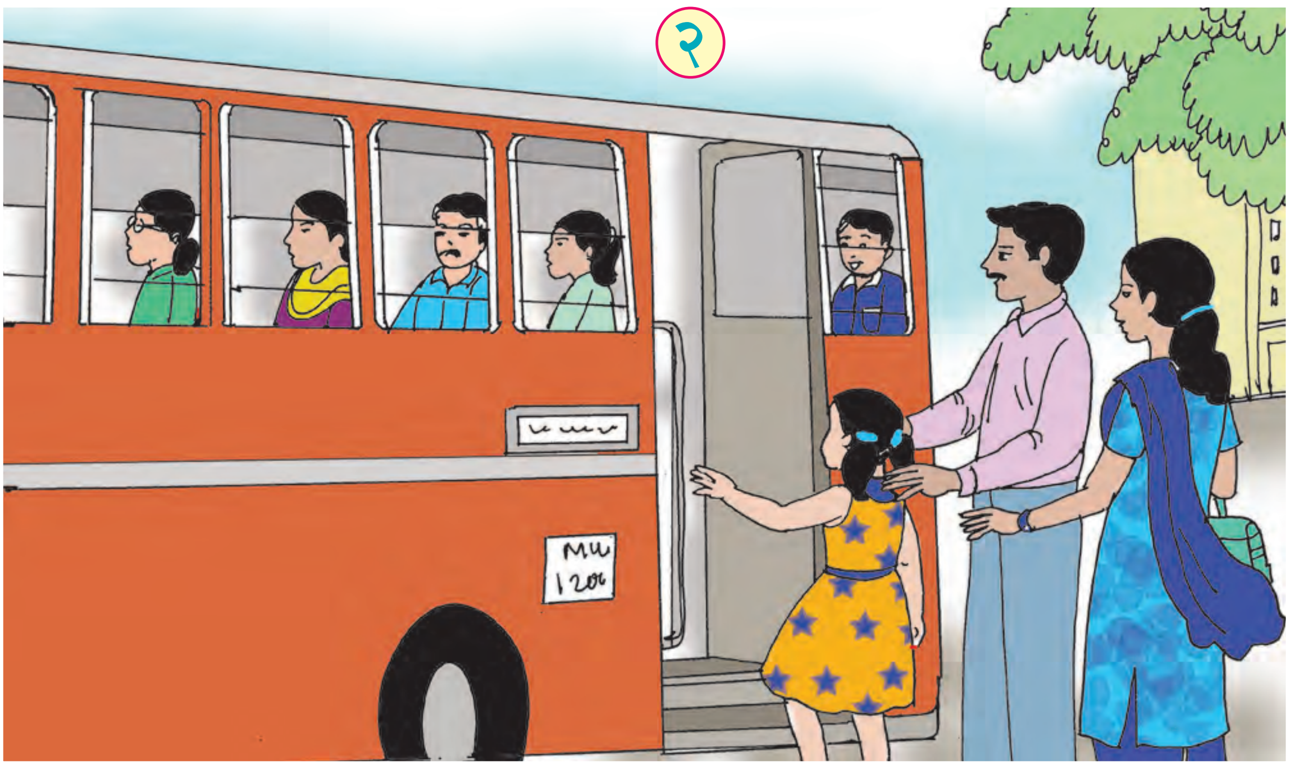
१ का	ना	बा	२ ती		३ सु			४ का
रा			६ खा		५ ता	६ प	मा	न
७ गा	८ ना			९ रो		रा		खो
१० र	च	११ ना		१२ ब	१३ का	या		ल
		१४ का	ला		क			क
१५ आ	१६ रा	म		१७ बा		१८ सु	धा	र
१९ स	जा		२० आ	जा	२१ दी			सु
पा			का		२२ वा	चा		न
२३ स	दा	चा	र		ली		२४ सो	ना


● चित्रवाचन – देखो, समझो और चर्चा करो :

✻ छोटा परिवार– सुखी परिवार





❑ चित्रों का निरीक्षण कराएँ । द्‌वितीय चित्र का परिवार आसानी से बस में चढ़ रहा है । प्रथम चित्र के परिवार को देखकर 'कंडक्टर' क्या सोच रहा है, इसपर चर्चा कराएँ । छोटे परिवार का महत्त्व और आवश्यकता समझाएँ ।

दो शब्द

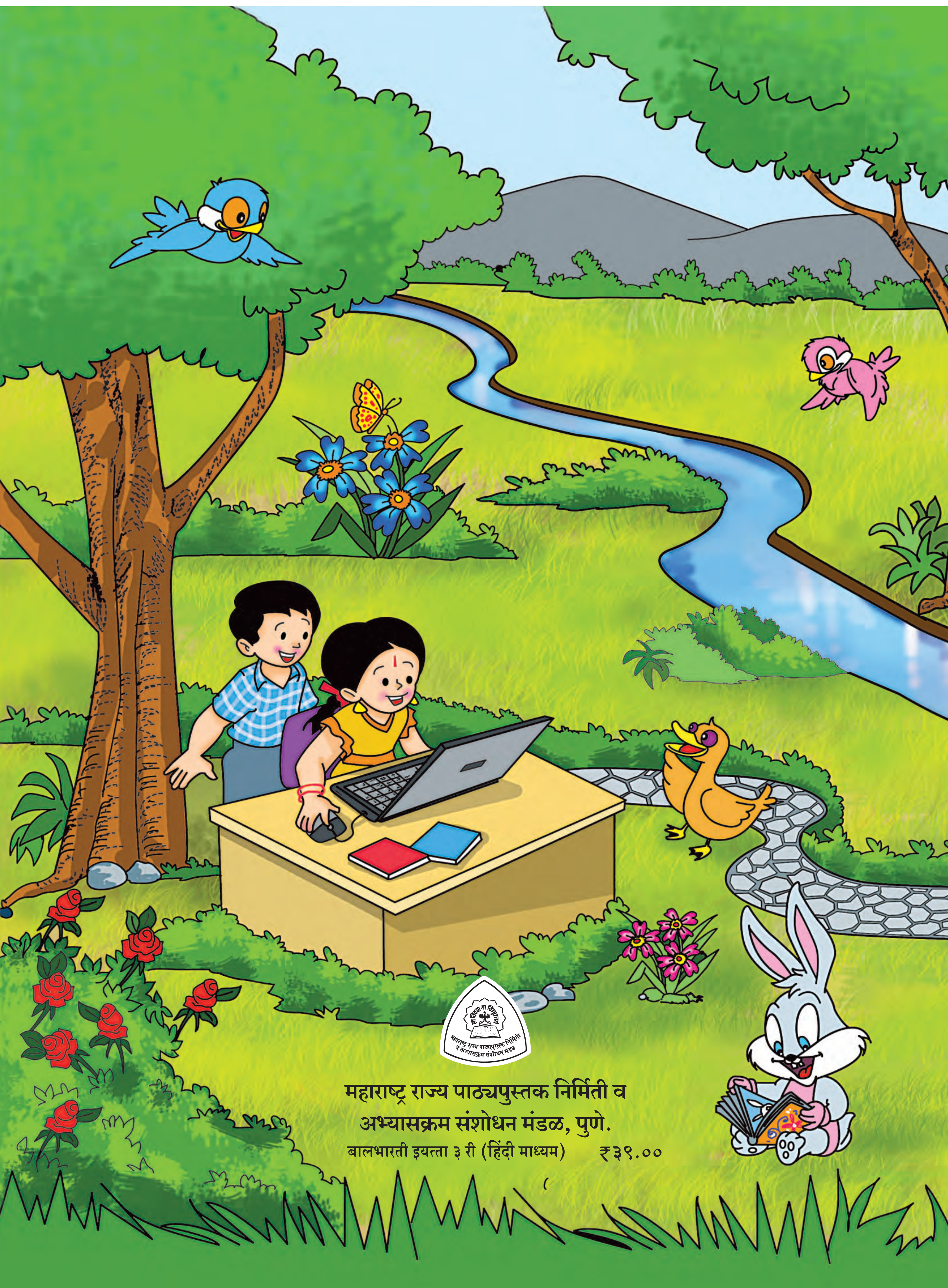
यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु चार भागों में विभाजित करते हुए इसका 'सरल से कठिन' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण- संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ व्यावहारिक - सृजन पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करनेवाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में क्रमिक एवं श्रेणीबद्ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्यार्थियों के लिए लयात्मक गीत, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों के साथ-साथ चित्रवाचन, सुनो और गाओ, दोहराओ और बोलो, करो, अनुवाचन, पढ़ो, पढ़ो और लिखो, बताओ और कृति करो, आकलन, मौन-मुखर वाचन, अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन आदि कृतियाँ भी दी गई हैं । इनका सूचनानुसार सतत अभ्यास अनिवार्य है ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने के पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । स्वाध्याय में दिए गए 'सुनो', 'पढ़ो' की पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए शब्दार्थ का उपयोग करें । 'पढ़ो' के शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण करना आवश्यक है । इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्भव शब्दों का प्रयोग किया गया है । इनसे विद्यार्थी सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । इनके माध्यम से मानक शब्दावली का अभ्यास करना सरल हो जाता है । अतः मानक हिंदी का विशेष अभ्यास आवश्यक है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यमापन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है । अतः विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन और व्यावहारिक सृजन का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।



महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.
बालभारती इयत्ता ३ री (हिंदी माध्यम) ₹३९.००